'विदेह' ६४ म अंक १५ अगस्त २०१० (वर्ष ३ मास ३२ अंक ६४) 

वि दे ह *विदेह Videha* *विदेह* ***http://www.videha.co.in*** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका *नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।* Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA. Read in your own scriptRoman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gurmukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam Hindi

एहि अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य

२.१.शम्भु कुमार सिंह-“मैथिली साहित्यक आदिकाल” यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी

-

२.२.१.-गजेन्द्र ठाकुर- यू.पी.एस.सी.-३- मैथिलीक उत्पत्ति आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)-

२.३.धीरेन्द्र प्रेमर्षि- मधुश्रावणी: मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

२.४.१. श्रीमती शेफालिका वर्मा- आखर-आखर प्रीत (पत्रात्मक आत्मकथा)(क्रमसँ पहिल खेप)

२.बिपिन झा-**चहकैत चौक आ कनैत दलान**

२.५.१.**डा. राजेन्द्र विमल-** साहित्य सङ्गम गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर ताल २.**प्रो. वीणा ठाकुर-** जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा- प्रो. वीणा ठाकुर ३. - जगदीश प्रसाद मंडल- **कथाक शेष- अर्द्धांगिनी** ४. - जगदीश प्रसाद मंडल- कथा- **अतहतह**

२.६.१.दुर्गा नन्द मंडल- **बुढ़िया फूसि** २.जितेन्द्र झा- **नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि** *३.* *बेचन ठाकुरक नाटक- बेटीक अपमान आगाँ-* ४. नन्द विलास

राय- कथा- **चौठचन्द्रक दही ५.****दुर्गानन्द मंडल- शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी-** कथापर दू शब्द

२.७.१.शिव कुमार झा ‘टिल्लू’, जमशेदपुर समीक्षा- मैथिली चित्रकथा २.**जितेन्द्र झा-** नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल ग्लानि ३.***शिव कुमार झा ‘टिल्लू’* समीक्षा-** मिथिलाक बेटी (नाटक)

२.८.१. **मनोज झा मुक्ति -महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान २.**-सुशान्त झा- मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य

३. पद्य

३.१.कालीकांत झा "बुच"1934-2009-आगाँ

३.२.राजदेव मंडलक ६टा कविता

३.३.ज्योति सुनीत चौधरीस्वतंत्रता दिवस

३.४. प्रकाश प्रेमी, जनकपुर-**गीत**

३.५.किशन कारीग़र-।**स्वतंत्रता दिवस पर एकटा विशेष।-बीर जबान**

३.६.गजेन्द्र ठाकुर- चारिटा पद्य

३.७.**राजेश मोहन झा**

३.८.शिव कुमार झा“टिल्लू“

४. मिथिला कला-संगीत-श्वेता झा चौधरीक चित्रकला- झूला

५. बालानां कृते-डॉ. शेफालिका वर्मा- देश

-

-

६. भाषापाक रचना-लेखन -[मानक मैथिली], [विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.]

७.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

७.1.NAAGPHAANS-PART_XIII-Maithili novel written byDr.Shefalika Verma-

Translated by Dr.Rajiv Kumar Verma andDr.Jaya Verma, Associate Professors, Delhi University, Delhi

७.2.Original Poem in Maithili by Gajendra Thakur Translated into English by Jyoti Jha Chaudhary -**Delhi is far away**-In the form of Surya Namaskaar

८. VIDEHA MAITHILI SAMSKRIT EDUCATION (contd.)

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक (ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक

विदेह आर.एस.एस.फीड।

"विदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रसँ प्राप्त करू।

अपन मित्रकेँ विदेहक विषयमे सूचित करू।

↑ विदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाऊ।

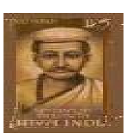
ब्लॉग "लेआउट" पर "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आर.एल." मे http://www.videha.co.in/index.xml टाइप केलासँ सेहो विदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी। गूगल रीडरमे पढ़बा लेल http://reader.google.com/ पर जा कऽ Add a Subscription बटन क्लिक करू आ खाली स्थानमे http://www.videha.co.in/index.xml पेस्ट करू आ Add बटन दबाऊ।

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari/ Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पर जाऊ। संगहि विदेहक स्तंभ मैथिली भाषापाक/ रचना लेखनक नव-पुरान अंक पढ़ू।
http://devanaagarii.net/

http://kaulonline.com/uninagari/ (एतए बॉक्समे ऑनलाइन देवनागरी टाइप करू, बॉक्ससँ कॉपी करू आ वर्ड डॉक्युमेन्टमे पेस्ट कए वर्ड फाइलकेँ सेव करू। विशेष जानकारीक लेल ggajendra@videha.com पर सम्पर्क करू।)(Use Firefox 3.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at http://www.videha.co.in/ .)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ (उच्चारण, बड़ सुख सार आ दूर्वाक्षत मंत्र सहित) डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाऊ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी कवि, नाटककार आ धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्टाम्प। भारत आ नेपालक माटिमे पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालहिसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। मिथिलाक महान पुरुष ओ महिला लोकनिक चित्र **'मिथिला रत्न'** मे देखू।



गौरी-शंकरक पालवंश कालक मूर्त्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि। मिथिलाक भारत आ नेपालक माटिमे पसरल एहि तरहक अन्यान्य प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्र, अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक़ हेतु देखू **'मिथिलाक खोज'**

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण संगहि विदेहक सर्च-इंजन आ न्यूज सर्विस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित वेबसाइट सभक समग्र संकलनक लेल देखू **"विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण"**

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाऊ।

"मैथिल आर मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त) पर जाऊ।

१. संपादकीय

१५ अगस्त २०१० ई.क भारतक ६४म स्वतंत्रता दिवसक शुभकामना। ई संयोग अछि जे आइ विदेहक ६४म अंक सेहो ई-प्रकाशित भऽ रहल अछि।

गाममे जून २०१०मे मास भरि रहबाक अवसर बहुत रास आन गप लेल मोन रहत। हमर पिताजीक मृत्यु १९९५ ई. मे ५५ बरखमे भेलन्हि। मुदा गाममे अखनो हुनकर संगी आ ज्येष्ठ सभ छथि।

परशुरामजी आ धनेश्वर जीक बहिन झंझारपुरमे मल्लिकजीसँ पढ़ैले जाइत रहथि तँ धनाढ्य लोकनि द्वारा बारि देल गेलाह। परशुरामजीक बहिनक पढ़ाइमे बाधा पड़लन्हि। मुदा धनेश्वरजी जे कनेक उमेरमे सेहो पैघ रहथि, अड़ल रहलाह। अंग्रेजी पुलिससँ हुनका पकड़बाओल गेल आ जे पकड़बओलन्हि से आइ स्वाधीनता पेंशन पबै छथि। १९४२ ई.मे धनेश्वरजी सभ थानासँ अंग्रेज पुलिसकेँ भगा देने रहथि आ फेकन मुन्शीकेँ थानेदार बना देने रहथि। हमरा बाबूजीक कहल ओ शब्द मोन पड़ैत अछि जे गामक धनाढ्य एक्स एम.एल.ए. हुनका स्कॉलरशिपबला फॉर्मपर साइन करबासँ मना कऽ देने रहथिन्ह मुदा तैयो ओ एम.आइ.टी. मुजफ्फरपुरसँ १९५९ ई. मे रॉल नं.१ लऽ सर्वोच्च अंकक संग अभियन्त्रणमे नाम लिखबा

लेलन्हि। एक बेर धनेश्वरजी, परशुरामजी, हमर बाबूजी सभ गोपेशजी अहिठाम जा कऽ खएने छलाह आ ई काज अंडा खएलापर धनाढ्यक नेतृत्वमे हुनका बारल जएबाक विरुद्ध छल। आब ने धनेश्वरजी छथि आ ने गोपेशजी। मुदा परशुरामजी छथि। १९९८ ई. मे कोलकातासँ अंग्रेजीक प्रोफेसरशिपसँ सेवानिवृत्त भऽ ओ अंग्रेजीमे "इन्गिलश पोएटिक्स"पर दूटा पोथी लिखने छथि। हमर पोथी "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पण

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहियै बुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

-पिताक प्रिय-अप्रिय सभटा स्मृतिकेँ समर्पित

पढ़ि ओ हमर दुनू गाल अपना हाथमे लऽ अपन नोर नहि रोकि सकलाह। गाममे बहुत गोटे समर्पण पढ़ि कानए लागल रहथि आ कहने रहथि जे ई सभ हमर पिताक पुण्यक परिणाम अछि।

स्वतंत्रता दिवसपर नहि जानि कोना ई सभ स्मरण आबि गेल।

विशेष: विदेह आर्काइवक आधारपर बाल चित्रकथा आ कॉमिक्स महिला वर्गमे विशेष लोकप्रिय भेल अछि। महिलावर्ग द्वारा कीनब ओहि पोथीक बच्चा सभक हाथमे जएबाक सूचक अछि। हमरा सभक सफलता अहीमे अछि जे ई बाल-साहित्य "*टारगेट ऑडियेन्स*" लग पहुँचल अछि।

ई सभ पोथी आ विदेह आर्काइवक आधारपर प्रकाशित आन ***मैथिली पोथी*** *एहि सभ ठाम उपलब्ध अछि:*

पटना: १.श्री शिव कुमार ठाकुर: ०९३३४३११४५६

२.श्री शरदिन्दु चौधरी: ०९३३४१०२३०५

राँची: श्री सियाराम झा सरस: ०९९३१३४६३३४

भागलपुर: श्री केष्कर ठाकुर: ०९४३०४५७२०४

जमशेदपुर: १.श्री शिव कुमार झा: ०९२०४०५८४०३

२.श्री अशोक अविचल: ०९००६०५६३२४

कोलकाता: श्री रामलोचन ठाकुर: ०९४३३३०३७१६

सहरसा: श्री आशीष झा: ०९८३५४७८८५८

दरभंगा: श्री भीमनाथ झा: ०९४३०८२७९३६

समस्तीपुर: श्री रमाकान्त राय रमा: ०९४३०४४१७०६

सुपौल:श्री आशीष चमन:०७६५४३४४२२७

झंझारपुर: श्री आनन्द कुमार झा: ०९९३९०४१८८१

निर्मली: श्री उमेश मंडल: ०९९३१६५४७४२

जनकपुर: श्री राजेन्द्र कुशवाहा: ००९७७४१५२१७३७

जयनगर: श्री कमलकान्त झा: ०९९३४०९८८४४

दिल्ली: १.श्रीमती प्रीति ठाकुर: ०९९११३८२०७८

२.श्री मुकेश कर्ण: ०९०१५४५३६३७

मधुबनी: १.श्री सतीश चन्द्र झा:०९७०८७१५५३०

२.मिश्रा मैगजीन सेन्टर (प्रो. श्री अमरेन्द्र कुमार मिश्र), शंकर चौक, मधुबनी ०९७०९४०३१८८

किछु आर स्थल शीघ्र...

(विदेह ई पत्रिकाकेँ ५ जुलाइ २००४ सँ एखन धरि १०४ देशक १,४६३ ठामसँ ४६,६४५ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी. सँ २,५४,५८१ बेर देखल गेल अछि; धन्यवाद पाठकगण। - गूगल एनेलेटिक्स डेटा।

गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

२. गद्य

२.१.शम्भु कुमार सिंह-“मैथिली साहित्यक आदिकाल” यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी

-

२.२.१.-गजेन्द्र ठाकुर- यू.पी.एस.सी.-३- मैथिलीक उत्पत्ति आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)-

२.३.धीरेन्द्र प्रेमर्षि- मधुश्रावणी: मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

२.४.१. श्रीमती शेफालिका वर्मा- आखर-आखर प्रीत (पत्रात्मक आत्मकथा)(क्रमसँ पहिल खेप)

२.बिपिन झा-**चहकैत चौक आ कनैत दलान**

२.५.१.**डा. राजेन्द्र विमल**- साहित्य सङ्गम गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर ताल २.**प्रो. वीणा ठाकुर**- जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा- प्रो. वीणा ठाकुर ३. - जगदीश प्रसाद मंडल- **कथाक शेष- अर्द्धांगिनी** ४. - जगदीश प्रसाद मंडल- कथा- **अतहतह**

२.६.१.दुर्गा नन्द मंडल- **बुढ़िया फूसि** २.जितेन्द्र झा- **नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि** *३.*  *बेचन ठाकुरक नाटक- बेटीक अपमान आगाँ-* ४. नन्द विलास राय- कथा- **चौठचन्द्रक दही** ५.**दुर्गानन्द मंडल- शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी-** कथापर दू शब्द

२.७.१.शिव कुमार झा 'टिल्लू', जमशेदपुर समीक्षा- मैथिली चित्रकथा २.**जितेन्द्र झा-** नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल ग्लानि ३.***शिव कुमार झा 'टिल्लू'* समीक्षा-** मिथिलाक बेटी (नाटक)

२.८.१. **मनोज झा मुक्ति -महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान** २.-सुशान्त झा- मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य


शम्भु कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] ''मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन'' विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।–सम्पादक

निबंध : ''मैथिली साहित्यक आदिकाल'' (यू. पी. एस. सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

निबंधकार : डॉ. शंभु कुमार सिंह

मैथिली साहित्यक आदिकाल

मानव समुदाय सर्वदा सँ समस्या सभक समाधान करबाक लेल साकांक्ष रहल अछि। कोनो भाषाक जन्म कहिया भेल एहि विषयमे किछु कहब कठिने नहि अपितु असंभव सेहो अछि। यद्यपि किछु विद्वान भाषा सभक जन्मपत्री बाहर करबामे व्यस्त रहलाह अछि किन्तु ओ लोकनि बरोबरि एहि दिशामे असफल रहलाह अछि। लिखित उपलब्ध साधनपर एतबे कहल जा सकैछ जे अमुक समयमे अमुक भाषा-शब्द प्रचलित छल। इएह हाल प्रत्येक भाषाक संग अछि।

साहित्यक शरीर अछि भाषा। संवेगात्मक अनुभूति जकरा साहित्यशास्त्रमे रसक आख्या कहल जाइत अछि, भाषाक माध्यमसँ अभिव्यक्त होइछ, ओ तँ कोनो साहित्य इतिहास सँ संलिष्ट रहैत अछि। विश्वभाषाक इतिहासमे केवल संस्कृते टा एहन विषय अछि जे पाणिनि द्वारा 'संस्कृत' भए तेना ने प्रतिष्ठित भेल जे अद्यापि अपन स्वरूप सभ ठाम सभ विषयमे एकरूप स्थिर कएने अछि।

भारतीय साहित्यक आरंभ प्रायः अंधकारमे विलीन अछि। मैथिली साहित्यक संग सेहो इएह चरितार्थ होइत अछि। साहित्यक इतिहासकार मध्य बहुत दिन धरि ई विवादक विषय बनल रहल जे मैथिली साहित्यक उद्भव एवं विकासक प्रारंभ कहिया सँ मानब?

प्राचीन समयसँ मिथिला संस्कृतक केन्द्र रहल अछि। सम्पूर्ण भारत विशेषतः पूर्वांचलक छात्र लोकनि संस्कृत अध्ययनक हेतु मिथिला अबैत छलाह। विद्याक प्रचार-प्रसारक कारणेँ एतए विद्वान लोकनिक संख्या अधिक छल। ई विद्वान लोकनि दर्शन, न्याय, ज्योतिष, गणित, आदिकेँ महत्वपूर्ण मानैत छलाह। फलस्वरूप जनभाषाक उपेक्षा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपमे होइते रहलैक। मुदा एतबा होइतहुँ एहिठामक लेखक तथा कविगण समय-समय पर जमभाषामे सेहो किछु रचना करैत छलाह। एहि कारणेँ प्राचीनकालीन मैथिली सामग्री अत्यंत सीमित रूपमे उपलब्ध होइत अछि।

किन्तु जतबा सामग्री मैथिलीक प्रारंभिक कालक अध्ययनक हेतु उपलब्ध अछि तकरा चारि भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि:- 1. शब्द, 2. वाक्यखंड, 3. सूक्ति तथा 4. लोकगीत एवं लोकगाथा। अध्ययनक सुविधाक हेतु एहि सभ वर्ग पर अलग-अलग प्रकाश देल जा सकैछ।

(1) **शब्द**

भाषा विज्ञानक अनुसार कोनो भाषाक हेतु शब्दक महत्व सर्वाधिक अछि। पहिने शब्दक प्रयोग होइत छैक तखन स्वरूपक। एहि दृष्टिएँ प्रथम कोटिमे ओ सभ ग्रंथ अबैत अछि, जाहिमे मैथिली शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। यद्यपि ओ सभ ग्रन्थ संस्कृतमे लिखल अछि, किन्तु लेखक अपन भावकेँ पूर्ण रूपसँ व्यक्त करबाक हेतु तथा सरल एवं जनसाधारणक बुझबा योग्य बनएबाक हेतु अनेक स्थान पर पर्यायवाची मैथिलीक व्यवहार कएलनि अछि। एहि वर्गमे सर्वप्रथम किछु निबंधकार लोकनि अबैत छथि जे अपना निबंधमे मैथिलीक स्थान देलन्हि। एहि प्रकारक लेखक लोकनिमे नवम् (9वम) शताब्दीक लेखक वाचस्पति मिश्रक नाम सर्वप्रथम लेल जाइत अछि। ई अपन प्रसिद्ध ग्रंथ शाङ्कर भाष्य टीका 'भामति' मे निगड़ शब्दवाची मैथिली 'हरि' क प्रयोग कएने छथि। ई शब्द देशी थिक आ हमरा लोकनिक ओतए आइ धरि प्रचलित अछि। ई शब्द मैथिलीक अप्पन अछि आ तेना ने पचि गेल अछि जे एकरा एहिसँ फराक करब असंभव छैक। यद्यपि एखनहुँ विद्वान मंडली मध्य ई विवाद अछि जे ई शब्द सन्ताली छैक। शब्द जँ प्रचलित छलैक तँ एकरा अपनाओल गेल, अतएव एहि शब्दकेँ मैथिलीक शुद्ध रूप कहब विशेष उपयोगी हैत।

दोसर लेखक छथि 10म् 11हम् शताब्दीक सर्वानन्द। डॉ. सुभद्र झा अपन निबंध (Maithili Words in Sarvanand's Amarkosh) मे पूर्ण रूपेँ विचार करैत कहैत छथि जे "सर्वदानन्दक 'अमरकोष' मे 400 सँ 600 बीचमे शुद्ध मैथिली शब्दक प्रयोग देखबामे अबैत अछि, जकरा मैथिलीक शुद्ध रूप कहल जा सकैछ।" मैथिली केँ असमी एवं बंगला सँ समता रहबाक कारणेँ एहि पर विवाद कएल गेल जे ई शब्द प्राचीन बंगला एवं असमीक प्रारंभिक रूप थिक। किन्तु ई तँ स्वाभाविक थिक जे तखन भाषा अपन निर्माणक स्थितिमे रहल होएत तैँ ओहि समयक तद्युगीन भाषा सँ कमे अंशमे अंतर रहतैक तथा देशगत भिन्नता रहबाक कारणेँ पूर्ण रूपसँ एकर विकास हैब असंभव अछि। 'अमरकोष' में प्रयुक्त ई शब्दावली मैथिलीक निज सम्पत्ति थिक जकरा अस्वीकार नहि कएल जा सकैछ।

तृतीय सामग्री हमरा लोकनि केँ पञ्जीमे उपलब्ध होइछ। डॉ. जयकान्त मिश्र एकरा सभसँ प्राचीन मानैत छथि: "The Earliest of these are, of course, the oldest Vernacular names of places and persons found in the early Panji records." किन्तु एतय एकटा तथ्य विचारसंगत अछि जे पञ्जीक प्रारंभ 1310 ई. मानल गेल अछि, तैँ एहिमे पओल गेल शब्दकेँ वाचस्पति मिश्र एवं सर्वानन्दक पश्चातहिक मानव उचित हैत। पञ्जी सेहो संस्कृतहिमे अछि किन्तु किछु शब्द एहन भेटैत अछि जे मैथिलीक थिक।

शब्द सबहक एहि प्रकारेँ प्रयोग चौदहम एवं पन्द्रहम शताब्दीक अन्य विद्वान सभ यथा चण्डेश्वर ठाकुर, रूचिपति, जगद्धर, वाचस्पति द्वितीय तथा विद्यापति ठाकुर सेहो कएने छथि। डॉ. उमेश मिश्र अपन निबंध शीर्षक "Chandeshwar and Maithili" मे चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा प्रयुक्त मैथिली शब्द सभक चर्चा कएने छथि। तथा पुनः ओ "Journal of Bihar Orissa Research Society" 1928 क पृष्ठ संख्या 266 मे "Maithili Words of the 15th Century" शीर्षक निबंधमे रूचिपति एवं जगद्धर द्वारा प्रयुक्त शब्दक चर्चा करैत ओ लिखैत छथि "In this commentary Ruchipati has now and then used words of Maithili, His mother-tongue, in order to give the exact meaning of some of the words of Sanskrit and Prakrit." उदाहरणस्वरूप किछु शब्दकेँ देखल जा सकैछ:-

संस्कृत	**मैथिली**
कर्तरिल	कतरनी
जलग्रह	जलढ़री
पलांदु	पियाजु

पोत	डोंगी
कर्मान्तिक	कामत, कमती
विहंगिक	बँहगी
सुवासिनी	सुआसिन
पर्यङ्क	पलंग
पुत्रिक	पुतरी
आलवाल	थाल, कादो इत्यादि।

डॉ. मिश्र ओहि निबंधमे जगद्धर द्वारा प्रयुक्त शब्द सभक सेहो वर्णन कएलनि अछि। जगद्धरक 'मालती-माधव' तथा 'वेणीसंहार' दुनू टीकामे मैथिली शब्द पाओल जाइत अछि यथा:-

संस्कृत	**मैथिली**
दोड़दह	दोहर
चोर्णकम	टोप्पर
ग्रह	गोह
अलवालम	थाल, कादो
प्राजनम्	पैना
यूथिका	जूही आदि।

वाचस्पति मिश्र द्वितीय द्वारा लिखित 'तत्वचिन्तामणि'क अंग्रेजी अनुवादक भूमिकामे सेहो डॉ. उमेश मिश्र सिद्ध कएने छथि जे वाचस्पति मिश्र द्वितीय सेहो अनेक मैथिली शब्दक प्रयोग कएने छथि।

(2) वाक्यखंड

शब्दक अतिरिक्त हमरा लोकनिकेँ मैथिली वाक्यखंड सभक प्रयोग सेहो भेटैत अछि। जखन भारतवर्षमे अंग्रेजी राज्यक सुदृढ़ स्थापना भए गेल, तखन अंग्रेज लोकनि भारतक क्षेत्रीय भाषा सभक आधुनिक अनुसंधान प्रणालीक अनुसारेँ अध्ययन प्रारंभ कएलनि। एहि क्रममे म. म. हरप्रसाद शास्त्री केँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ सभक अनुसंधान करबाक भार भेटलनि। म. म. शास्त्री एहि क्रममे नेपाल गेलाह, ओतए हुनका 1916 ई. मे तीन गोट ग्रंथ भेटलनि, जकरा ओ 'बौद्धगान ओ दोहा' नामसँ प्रकाशित करौलनि। उक्त तीनू ग्रंथ थिक (क) दोहाकोष (ख) चर्याचर्य विनिश्चय (ग) डाकार्णव।

एहि ग्रंथ सभक रचनाकाल आठम शताब्दीसँ एगारहम शताब्दी धरि मानल जाइत अछि। ओहि समयमे आधुनिक भाषा सभ विकासोन्मुख छल, किन्तु विकसित नहि भेल छल, तैँ हेतु भाषा-विज्ञानी लोकनि ओहि रचनामे भारतीय पूर्वांचलक प्रायः सभ भाषाक रूप पबैत छथि। सिद्ध लोकनिक विषयमे जखन विशेष अनुसंधान भेल तँ हुनका लोकनिक क्षेत्र गोरखपुर सँ भागलपुर धरि मानल गेल। जे सिद्ध लोकनि जाहि क्षेत्र केँ अपनौलन्हि से हुनका अपन रचनामे ओहि क्षेत्रक भाषाक प्रभाव देखबामे अबैत अछि। मैथिलीक प्रभाव सेहो सिद्ध लोकनिक रचनामे पाओल जाइत अछि। एहि मतक पुष्टि करबाक हेतु निम्न तर्क पर दृष्टि देल जा सकैछ:-

1) सिद्ध लोकनिक चर्चा ज्योतिरीश्वर अपन 'वर्णरत्नाकर' मे कएने छथि जाहिसँ अनुमान कएल जाइत अछि जे ओ लोकनि अपन मतक प्रचारार्थ मिथिला अवश्य गेल हेताह।

2) पदक शब्दावली सभक वैज्ञानिक अध्ययन कएलासँ ई सिद्ध होइत छैक जे ओ मैथिलीक अत्यंत सन्निकट अछि।

3) हुनका लोकनिक पदमे जाहि प्रकारक स्थानक वर्णन कएल गेल अछि तकरा मिथिलाक भौगोलिक स्थितिसँ विशेष साम्य छैक।

4) ओहिमे विभक्ति, विशेषण तथा किछु क्रियापद एहन अछि जे मैथिलीमे प्रचुर मात्रामे प्रयोग कएल जाइत अछि।

सिद्ध साहित्यक भाषा, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, विशुद्ध विद्यापति पदावली तथा ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक भाषासँ साम्य रखैत अछि। किछु सामान्य विशेषता एहि सभ पदमे पाओल जाइत अछि यथा:- दन्त्य वर्णक प्रधानता, 'एँ' क प्रयोग, चन्द्रबिन्दुक एकहि समान प्रयोग, 'हि' 'एँ' तथा 'ए' क ध्वनिक एकहि समान प्रयोग, जे, एहु, तरक, अप्पन, आदि सर्वनामक प्रयोग इत्यादि विशेषता समान अछि।

5) ओहि पद सभमे किछु लोकोक्ति तथा किछु वाक्यखंड एहन प्रयोग कएल गेल अछि जो मिथिलामे एखनहुँ प्रचलित अछि, यथा:- (I) पहिल बियान, (II) बलाद बिआएल

गबिया बाँझे (बरद बिआएल गाय रहल बाँझे) (III) बेङ्गसँ साँप बढ़िल जाय (IV) हाक पाड़ई (V) जे जे अएला ते ते गेला (VI) टुटि गेल कन्था इत्यादि।

6) किछु शब्दावली एहन अछि जे मैथिलीक प्राचीन रूप थिक। ओ शब्द सभ एखन विकसित भए दोसर रूप धारण कए लेलक अछि, यथा:-

चर्यापद	**मध्यकालीन मैथिली**	**आधुनिक मैथिली**
आजि	आजि	आइ
चापी	-	चापिदेब
तेन्तलि	-	तेतरि
बिआती	बाइति	बिअउती
टेंगी	-	टेंगारी
चगेरा	-	चङ्गेरा
भणइ	भनइ	भनथि

सिद्ध साहित्यक प्रधान कविगणमे किछु नाम अछि सरहपा, कान्हपा, भुसुकपा, शबरपा, कुक्करीपा, लुईपा, आदि। जतए धरि हिनक सभक समयक प्रश्न अछि, हिनका लोकनिक समय संवत 817 सँ मानल गेल अछि किएक तँ प्रथम कवि 'सरहपा'क आविर्भाव काल 817 मानल गेल अछि। एहि तरहेँ हिनका लोकनिक समय 8 सँ 12हम शताब्दी धरि निश्चित कएल गेल अछि।

दोहाकोषक भाषाकेँ डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी शैरसेनी अपभ्रंश मानैत छथि। 'चर्याचर्य विनिश्चय' पर सेहो शौरसेनिक प्रभावकेँ ई स्वीकार करैत छथि: The Charyas belong to the early or old N.I.A Stage. Being the first attempt, the speech is not sure of its own forms learns on its stronger, better established Sisters and Aunts.

उपर्युक्त तर्क एवं प्रमाण सभक आधार पर डॉ. सुभद्र झा अपन "Formation of Maithili Language" नामक ग्रंथमे चर्यापदक भाषाकेँ निर्विवाद रूपेँ माथिलीक "छिकाछिकी" शाखाक अन्तर्गत मानैत छथि। किन्तु ई निर्विवाद नहि अछि। एकरा प्राचीन बंगाली, प्राचीन असमियाँ तथा प्राचीन उड़िया सेहो कहल गेल अछि तथापि एतबा विवाद रहितहुँ अधिकांश विद्वान एकर भाषाकेँ प्राचीन मैथिली मानैत छथि। एहि मतक

समर्थक छथि-- राहुल सांकृत्यायन, डॉ. के. पी. जायसवाल, म. म. डॉ. उमेश मिश्र, नरेन्द्रनाथ दास, डॉ. सुभद्र झा, श्री शिवनन्दन ठाकुर आदि।

अतएव, निष्कर्ष रूपेँ कहल जा सकैछ जे चर्यापदक भाषा प्राचीन मैथिलीक अत्यंत सन्निकट अछि। कारण जे एहिमे प्रयुक्त वाक्यखंड, जे मैथिलीक थिक, आदिक पूर्ण प्रयोग पाओल जाइत अछि।

(3) सूक्ति

एकर पश्चात् डाकवचनावलीक स्थान अबैत अछि। अतिप्राचीनकालसँ मिथिला कृषि प्रधान मानल जाइत रहल अछि। एतुका भूमिमे ने नदीक आभाव छैक आ ने भूमि उसर सएह छैक। फलस्वरूप खेती पर पूर्ण जोर देल जाइत रहलैक। मिथिलावासी लोकनि ज्योतिषमे सेहो विशेष आस्था रखैत छलाह, फलस्वरूप कृषि एवं ज्योतिष संबंधी नियम आदिक विषयमे लोककेँ शिक्षा देबाक हेतु विद्वान लोकनि तत्कालीन प्रचलित जनभाषामे सूक्ति सभक निर्माण करैत छलाह जाहिसँ अनपढ़ लोक सेहो पूर्णरूपसँ लाभान्वित होइत छलाह। एहि सूक्ति सभक अन्तर्गत डाक, घाघ, आदिक वचन सभ अबैत अछि।

डाकवचनावलीक भाषाकेँ किछु विद्वान चर्यापदहुँ सँ प्राचीन मानैत छथि। कारण जे चर्यापदहि जकाँ एकरहुँ प्रचार उत्तर प्रदेश सहित समस्त पूर्वोत्तर भारतमे भेल। डाकवचनावलीक दू संस्करण मिथिलामे प्रकाशित भेल, कन्हैयालाल कृष्णदास द्वारा मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा सँ। भाषाक दृष्टिसँ दोसर संस्करण बेसी प्रामाणिक कहल जा सकैछ । कारण जे ई एक प्राचीन हस्तलिखित पोथी पर आधारित अछि। एकर भाषा अपभ्रंशसँ विशेष साम्य रखैत अछि। प्राचीन तालपत्रमे जे डाकवचन भटैत अछि से ओहि 'अवहट्ट' मे भेटैत अछि, जाहिमे महाकवि विद्यापतिक 'कीर्तिलता' विद्यमान अछि। डाकक वचन एखनहुँ मैथिल समाजमे प्रचलित अछि, किन्तु देश कालक व्यवधानसँ हुनक भाषामे अनेक परिवर्तन आबि गेल अछि जाहिसँ ओ आधुनिकताक छाप ल' नेने अछि। प्राचीन स्वरूपक एकाध उदाहरण थिक:-

मुहूर्त विचार:- तिथि परमाणहि साठि दण्डा, से लए करए बारह खण्डा।

अद्दा, भद्दा, कार्तिक मूल, भनई डाक सबेटा निर्मूल।

तथा, सनिसत्ते शुष्क लए दुई छठि वेहप्फए होइ विरूई,

बुध तीअ दोअसि सूर, मंगल दशमी परिहर दूर,

होए एगादशी सोमवारे, दग्धतिथि फुर गहिअ गोआरे।।

किछु आर उदाहरण:-

साओन पछवा बह दिन चारि

चूल्हिक पाछाँ उपजय सारि

साओन शुक्ला सप्तमी जौं गरजे अधरात

तो जाहू पिया मालवा हम जाएब गुजरात।

डाकक समय कें ल' कए विद्वान सभक मध्य एखन धरि मतैक्य नहि अछि। हुनक निवास स्थानक विषय सेहो विवादग्रस्ते अछि। बंगाल, उत्तर प्रदेश, तथा मिथिला, सभ हुनका अपन-अपन स्थानक मानैत अछि। मिथिलामे डाकक संबंधमे अनेक किवदंती प्रचलित अछि। एहिसँ ई अनुमान कएल जाइत अछि जे ई अवश्ये मिथिलाक छलाह। मिथिलामे जे किवदंती प्रचलित अछि ताहि अनुसारेँ ई बराहमिहिरक पुत्र छलाह तथा जातिक गोआर।

कृषि सँ संबंधित डाकक प्रस्तुत वचन अद्यावधि प्रायः प्रत्येक लोकक कण्ठमे निवास क' रहल अछि:-

थोड़कए जोतिह' अधिक मटिअबिह

ऊँच कए बान्हिह' आरि

ताहू पर जँ नहि उपजय तँ

डाककेँ पढ़िह' गारि।

अथवा

साओन पछवा भादव पुरबा

आसिन बहै ईशान

कातिक कन्ता सिकियो ने डोलै,

कतए कए रखब' धान?

अथवा

शुक्र दिन केर बादरी, रहे शनिचर छाय

कहे डाक सुनु डाकिनी, बिनु बरसे नहि जाय।।

अथवा

जौं पुरबैया पुरबा पाबै,

सुखले नदिया धार बहाबै

(4) **लोकगीत एवं लोककथा**

आदिकालक उपलब्ध सामग्रीक रूपमे लोकगीत एवं लोकगाथाक सेहो अपन महत्वपूर्ण स्थान अछि। एहि मे सँ किछु तँ पूर्ण साहित्यिक थिक। एकर एक विशेषता ई अछि जे एहि सभक नायक कोनो अवतारी वा अंशी पुरूष नहि छलाह। एहन रचना सभमे लोरिक, सलहेस बिहुला, गोपीचन्द मरसीयाक गीत सभ अबैत अछि। संसारक प्रत्येक स्थानमे वीरपूजाक भावना वर्तमान छलैक, मिथिला सेहो एहि भावना सँ वंचित नहि छल। उपलब्ध प्रमाणक आधार पर एतबा कहल जा सकैछ जे 13हम 14हम शताब्दीमे ओहि प्रकारक गानक प्रचार एहिठाम छल। कारण जे ज्योतिरीश्वर अपन ग्रंथ 'वर्णरत्नाकर' मे लोरिक गीतक चर्चा कएने छथि। अतएव ई सिद्ध होइत अछि जे ई एहिसँ पूर्वक तँ अवश्ये थिक। ई गीत सभ खनहुँ मिथिलामे खूब गाओल जाइत अछि। मात्र जिह्वा पर रहबाक कारणेँ एकर भाषा आधुनिक रूप धारण करैत गेलैक अछि। एहि गीत सभक भाषा अवश्ये प्राचीन मैथिली छल होएतैक, किन्तु दुर्भाग्यवश ओहि प्रकारक गीत सभक संग्रह एकठाम नहि भेल अछि। एहि दिशामे सर्वप्रथम डॉ. जी. ए. ग्रिर्यसन 19म शताब्दीक अन्तमे किछु कार्य कएलन्हि, हिनक संग्रह प्राचीनतम संग्रह मानल जाइत अछि। एकर पश्चात् 'लोरिक विजय' पर श्री मणिपद्मक एकगोट निबंध, दिसम्बर 1953 मे 'वैदेही' मे प्रकाशित भेल छलनि जाहिमे ओ प्रमाणित कएने छलाह जे लोरिकक गीत मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। लोरिक गाथाक प्रस्तुत पाँतीमे केहन धरावाहिकता तथा भाषाक प्राचीनता अछि से द्रष्टव्य थिक:-

आँगी मे जे झाँगी सोभए

रत्तन लागल हार

झाँगी मे जे मानिक सोभए

हीरा झमकार

से हँसइ जखन दामिनी दमकए

जकरा दिस उठाकए तक्कए

दई करेजा सालि

लोरिकक प्रवाह अपूर्व आ ध्वनि-योजना अत्यधिक ओजस्वी अछि। एकर गायक ई गबैत-गबैत जेना प्रभक्त भए उठैत अछि एवं झूमए लगैत अछि, तथा ताल ठोकि टाहि मारैत अछि। एहि बीचमे कनियो एकरा टोकि दिऔक अथवा स्थिर भावेँ गाब' कहिऔक तँ गायक झमान भए खसत। मंगलाचरणक ई पंक्ति केहन मोहक अछि:-

"कंठ दीह कोकिला माय आ मधु सन दीह भास"

लोरिकक सदृश मरसीयाक गीतकेँ सेहो देखल जा सकैछ:-

वनमे रोए कोयल जंगलमे रोए फातमा

घरमे रोए दुलहिन अभागलि रे हाय

एक रोए अम्मा दोसर रोवे धन्ना रे हाय

तेसर रोए दूध छारि बलवा रे हाय।

अतएव, ई दृढ़तापूर्वक कहल जा सकैछ जे 13हम 14हम शताब्दी धरि मैथिली भाषामे गीत तथा कथाक सृजन अवश्य होमए लागल छल।

एकरा सभक अतिरिक्त निम्न साक्ष्य सभक सम्यक अध्ययन सेहो कएल जा सकैछ:-

(अ) वर्णरत्नाकर:- एकर पश्चात् वर्णरत्नाकरक स्थान अबैत अछि। एहिठामसँ हमरा लोकनि केँ मैथिली भाषाक क्रमबद्ध प्रगति दृष्टिगत होइत अछि। वर्णरत्नाकर मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रंथ थिक। 13हम 14हम शताब्दीमे मैथिली एक विकसित भाषा भए गेल। केवल शब्द, वाक्यखंड तथा किछु लोकगीतहिक नहि अपितु वर्णरत्नाकर सदृश प्रौढ़ गद्य ग्रंथ उपलब्ध सामग्रीमे मैथिलीक पूर्ण विकसित रूप ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक रूपमे भेटैत अछि। ई 14हम शताब्दीक आदिकाल (1324) क रचना थिक। वर्णरत्नाकरक विषयमे केवल एतबे धरि जोर द' कए कहल जा सकैछ जे ई प्राचीन उपलब्ध सामग्रीमे मैथिलीक प्रगतिक द्योतक थिक। ई एखन धरि अपन महत्व सँ मिथिला ओ मैथिलीकेँ गौरवान्वित क' रहल अछि।

(ब) एकर अतिरिक्त प्राचीन मैथिलीक किछु सामग्री 'प्राकृत पैंगलम' तथा अन्य अपभ्रंश ग्रंथमे सेहो भेटैत अछि। प्राकृत पैंगलममे लोकभाषाक उदाहरण देल गेल छैक। शिवनन्दन ठाकुरक मत छनि जे एहिमे प्रयुक्त किछु शब्द मैथिलीक थिक।

(स) विद्यापतिक अवहट्ट रचना 'कीर्तिलता' तथा 'कीर्तिपताका'मे प्राचीन मैथिलीक अनेक विशेषता पाओल जाइत अछि, यथा:- क्रियाक स्त्रीलिंग रूप ए, एँ तथा हिं क प्रयोग पूर्वकालिक क्रियाक हेतु तथा 'ए' क प्रयोग आदि। एहि लेल ई ग्रंथ सेहो महत्वपूर्ण भ' जाइत अछि।

एहि सामग्री सभक विषयमे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी क उक्ति युक्तिसंगत अछि- These specimens allow us to have a glimpses of the language in its formative period.

उपर्युक्त सामग्री सभक समीक्षा कएलासँ ई विषय स्पष्ट भए जाइत अछि जे अभिरूचि एहिठामक लेखकमे 8म शताब्दीसँ प्रारंभ भए गेल छल। एतबा धरि सत्य जे ओहि कालक जे रचना उपलब्ध अछि ताहिमे विशेषतः दार्शनिक एवं व्यावहारिक पक्षक सबलता देखबामे अबैत अछि। आन प्रकारक रचना मौखिके रूपमे लोकक समक्ष उद्घाटित होइत रहल अछि तथा अनुमानसँ लोक एकर प्राचीन रूप जानबाक चेष्ठा करैत अछि।



-गजेन्द्र ठाकुर

यू.पी.एस.सी.-३

मैथिलीक उत्पत्ति आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)

२.प्राकृत

संस्कृतसँ पहिने प्राकृत रहए वा बादमे ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, इन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि। ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेरहम शताब्दी ई. धरि भेटि जाएत मुदा पारिभाषिक रूपमे जाहि प्राकृतक एतए चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई.सँ छठम ई. धरि साहित्यक भाषा दू अर्थे रहल। पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर एहि प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेर एहि प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्ठक प्रयोग लोक करए लगलाह, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत रहए तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि।

अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेराक अभिलेख उत्तर-पच्छिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व आ गिरनार दक्षिण पच्छिमक जनभाषाक क्षेत्रीय प्रकारक दर्शन करबैत अछि। राजशेखर प्राकृतकेँ मिट्ठ आ संस्कृतकेँ कठोर कहै छथि (विद्यापति पछाति कहै छथि देसिल बयना सभ जन मिट्ठा)।

प्राचीन प्राकृत पालीकेँ कहल जाइत अछि जाहिमे अशोकक अभिलेख, महवंश आ जातक लिखल गेल। मध्य प्राकृतमे साहित्यिक प्राकृत अबैत अछि। बादक प्राकृतमे अपभ्रंश आ अवहट्ठ अबैत अछि।

मोटा-मोटी गद्य लेल शौरसेनी, पद्य लेल महाराष्ट्री आ धार्मिक साहित्य लेल मागधी-अर्धमागधीक प्रयोग भेल। नाटकमे स्त्री-विदूषक बजैत रहथि शौरसेनीमे मुदा पद्य कहथि महाराष्ट्रीमे, नाटकक तथाकथित निम्न श्रेणीक लोक मागधी बजैत छलाह।

प्राकृतमे सुप् तिङ् धातुक संग मिज्झर भऽ जाइत अछि।

प्राकृतमे धातुरूप १-२ प्रकारक (भ्वादिगण जेकाँ) आ शब्दरूप ३-४ (अकारान्त जेकाँ) प्रकारक रहि गेल, माने दुनू रूप कम भऽ गेल। मुदा एहिसँ अर्थमे अस्पष्टता आएल जकर निवारण कारकक चेन्ह कएलक।

चतुर्थी, द्विवचन, लङ् लिट् लुङ् आत्मेपद आदिक अभाव भऽ गेल प्रथमा आ द्वितीयाक बहुवचन एक भऽ गेल। ध्वनि परिवर्तन भेल। ऋ, ऐ, औ, य, श, ष आ विसर्गक अभाव भेल (अपवाद मागधीमे य आ श अछि मुदा स नहि)।

अन्तमे आएल व्यंजन लुप्त भेल (ह्रस्व स्वरक बाद दू आ दीर्घ स्वरक बाद एकसँ बेशी व्यंजन नहि रहि सकैत अछि।)

न ण मे, य ज मे आ श, ष स मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

पदमे उत्तरपदक पहिल अक्षरक लोप भऽ जाइत अछि, मुदा से धातुरूप अछि तखन लोप नहि होइत अछि। जेना आर्यपुत्र= अज्जउत्त मुदा आगतम्= आगदं

अनुदात्त अव्ययक पहिल अक्षरक लोप होइत अछि। जेना च= अ

भू धातुक भ परिवर्तित भऽ ह भऽ जाइत अछि। जेना भवति= होइ

क ख मे आ प फ मे बदलि जाइत अछि। पनस= फणस, क्रीड्= केल

उच्चारण स्थानक परिवर्तनक क्रममे दन्त्य उच्चारण स्थान तालव्यमे बदलि जाइत अछि। जेना त् = च्

मध्यक य लोपित भऽ जाइत अछि। क, ग, च, ज, त, द क सेहो किछु अपवादकेँ छोड़ि लोप होइत अछि। प, ब, व क लोप सेहो कखनो आल होइत अछि। जेना- प्रिय= पिअ, लोक= लोअ, अनुराग= अणुराअ, प्रचुर= पउर, भोजन= भोअण, रसातल= रसाअल, हृदय= हिअअ, रूप= रूअ, विबुध= विउह, वियोग= विओअ

मध्यक क, त, प क्रमसँ ग, द, ब भऽ जाइत अछि। ख, घ, थ, घ, फ, भ ई सभ ह भऽ जाइत अछि। जेना नायकः= णाअगु, आगतः= आगदो, दीप=दीब=दीव। मुख= मुह, सखी= सही, मेघ= मेह, लघुक= लहुअ, यूथ= जूह, रुधिर= रुहिर, वधू= वहू, शाफर= साहर, अभिनव= अहिणव।

कखनो काल मध्यक व्यंजन दोबर भऽ जाइत अछि। जेना एक= एक्क

मध्यक ट, ठ क्रमसँ ड, ढ भऽ जाइत अछि। जेना कुटुम्ब= कुडुम्ब, पठन= पढण

मध्यक प, ब परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना दीप= दीव। शबर= सवर।

ड, त, द परिवर्तित भऽ ल बनि जाइत अछि। जेना क्रीडा= कीला, सातवाहन= सालवाहण, दोहद= दोहल।

म परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना ग्राम= गाँव।

अन्तिम स्प्रश वर्णक लोप होइत अछि, अन्तिम अनुनासिकमे अनुस्वार नहि होइत अछि, अः बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि वा ओकर लोप भऽ जाइत अछि।

मोटा-मोटी शब्दक प्रारम्भमे एकेटा व्यंजन आ मध्यमे बेशीसँ बेशी दूटा व्यंजन सेहो द्वित्वमे जेना क्क वा क्ख रूपमे रहैत अछि।

व्यंजनक बलक अनुरूपेँ निम्न प्रकारक क्रम होइत अछि।(अ) कवर्ग, चवर्ग,, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग मे क (सभसँ बेशी बलगर) सँ भ (क्रमसँ कम बलगर) धरि, सभ वर्गक पाँचम वर्ण छोड़ि कऽ। जेना कवर्गक ङ, चवर्गक ञ, टवर्गक ण, तवर्गक न आ पवर्गक म छोड़ि कऽ। फेर (आ) कचटतप वर्गक पाँचम वर्ण। फेर (इ) ल, स, व, य, र। एहिमे समानबलक वर्णमे बादबला वर्ण प्रबल होइत अछि, अन्यथा अधिक बलबला बेशी बलगर होइत आछि। जेना- उत्पल= उप्पल, खड्ग= खग्ग, अग्नि= अग्गि। फेर जे कचटतप वर्गक पाँचम वर्णक ओही वर्गक कोनो दोसर वर्ण होएत तँ पाँचम वर्ण ओहिना रहत, नहि तँ ओकर परिवर्तन अनुस्वारमे भऽ जाएत। जेना क्रौञ्च= कोञ्च, दिङ्मुख= दिंमुह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ ओ ज्ज बनि जाइत अछि। मनोज्ञ= मणोज्ज।

कचटतप वर्गक बाद श, ष, स रहलासँ च्छ होइत अछि। जेना अप्सरा= अच्छरा, मत्सर= मच्छर।

क्ष बदलि कऽ क्ख भऽ जाइत अछि।जेना दक्षिण= दक्खिण।

शौरसेनीमे क्ष बदलि कऽ क्ख आ मागधीमे च्छ भऽ जाइत अछि। जेना कुक्षि= कुक्खि (शौरसेनी), कुच्छि (मागधी)।

प्राकृतमे ऋ आ लृ स्वर नहि होइत अछि। ऋ बदलि कऽ (अ) रि भऽ जाइत अछि। जेना ऋषि= रिषि, (आ) अ भऽ जाइत अछि। जेना कृत= कद। (इ) इ भऽ जाइत अछि। जेना दृष्टि= दिट्ठि। (ई) उ भऽ जाइत अछि। जेना पृच्छति= पुच्छदि।

ऐ, औ बदलि कऽ ए भऽ जाइत अछि। जेना कौमुदी= कोमुदी।

संयुक्ताक्षरसँ पूर्व ह्रस्व स्वर रहैत अछि।

उ बदलि कऽ अ वा ओ भऽ जाइत अछि। जेना मुकुल= मउल। पुस्तक= पोत्थअ।

ऊ बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि। जेना मूल्य= मोल्ल।

ए बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना एतेन= एदिणा।

ओ बदलि कऽ उ भऽ जाइत अछि। जेना अन्योन्य= अण्णुण्ण।

अनुस्वार+ अपि= पि आ अनुस्वार+इति= ति भऽ जाइत अछि। खलु= ख भऽ जाइत अछि।

य् बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना कथयतु= कधेतु।

प्राकृतमे अन्तिम व्यंजनक लोप भऽ जाइत अछि। व्यंजन सन्धिक मोटा-मोटी अभाव रहैत अछि।

स्वर सन्धिमे सेहो मध्य वर्णक लोप भेलोपर सन्धि नहि होइत अछि।

शब्दरूपमे द्विवचन खतम भऽ गेल। चतुर्थीक रूप षष्ठीमे मिलि गेल। व्यंजन अन्तबला शब्द खतम भऽ गेल।

धातुरूपमे शब्दरूपसँ बेशी अन्तर आएल। व्यंजन अन्तबला धातु खतम भऽ गेल। धातुरूप एक्के रीतिसँ चलए लागल, द्विवचन खतम भऽ गेल, रूपक भिन्नता कम भऽ गेल। आत्मनेपद रूप मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। लिट, लिङ्, लुङ् रूप सेहो मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। भूतकाल लेल कृदन्त प्रत्ययक प्रयोग होमए लागल। भ्वादिगण आ चुरादिगणक अलाबे सभ गण खतम भऽ गेल।

शौरसेनीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ ज्ज् भऽ जाइत अछि।

शौरसेनी आ माहाराष्ट्री- संस्कृतक मध्यक त शौरसेनीमे द भऽ जाइत अछि मुदा माहाराष्ट्रीमे ओ लोपित भऽ जाइत अछि। जेना- संस्कृत- जानाति= शौरसेनी जाणादि= माहाराष्ट्री जाणाइ

संस्कृतक मध्यक थ शौरसेनीमे घ मुदा माहाराष्ट्रीमे ह भऽ जाइत अछि। जेना संस्कृत अथ= शौरसेनी अघ= माहाराष्ट्री अह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ मागधीमे ञ्ञ बनि जाइत अछि।

मागधीमे श, ष, स ई तीनू परिवर्तित भऽ श; र परिवर्तित भऽ ल; ज परिवर्तित भऽ य बनि जाइत अछि। अकारान्त प्रथमा एकवचनमे ए लगैत अछि। जेना दरिद्र= दलिद्द।

मागधीमे ज बदलि कऽ य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ य्य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ण्य, न्य,ज्ञ,ञ्ज बदलि कऽ ञ्ञ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे मध्यक च्छ बदलि कऽ श्च भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ष्क= स्क वा श्क, ष्ट= स्ट वा श्ट, ष्प= स्प, ष्फ= स्फ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे र्थ बदलि कऽ स्त भऽ जाइत अछि।

विधिलिङ् क प्रयोग जैन प्राकृत- अर्धमागधी आ जैन महाराष्ट्रीमे प्रचलित रहल, आन प्राकृतमे ई मोटा-मोटी खतम भऽ गेल।

संस्कृतक तुम् शौरसेनीमे दुं, मागधीमे सेहो दुं रहैत अछि मुदा महाराष्ट्रीमे उं भऽ जाइत अछि।

प्राकृतक शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्रीक अतिरिक्त पैशाची प्राकृतक सेहो उल्लेख भेटैत अछि। गुणाढ्यक वृहत्कथा एहि प्राकृतमे लिखल गेल जे आब स्वतंत्र रूपसँ उपलब्ध नहि अछि। एकर उल्लेख उद्धरण रूपमे कखनो काल भेटैत अछि। ई पश्चिमोत्तर भारतक प्राकृत छल, उद्धरण रूपमे उपलब्ध साहित्यक अनुसार

एहिमे निम्न विशेषता छल। ण बदलि कऽ न भऽ गेल। र बदलि कऽ ल भऽ गेल। ल बदलि कऽ र भऽ गेल। सघोष अघोष बनि गेल। दू स्वरक बीचक ल बदलि कऽ ळ भऽ गेल। स्वरक बीचमे ष बदलि कऽ श वा स, ज्ञ बदलि कऽ न्य आ ण्य बदलि कऽ ञ्ञ भऽ गेल। एहिमे आत्मनेपद आ परस्मैपद दुनू अछि।

पश्चिमोत्तरक खोतानसँ प्राकृत धम्मपद खरोष्ठी लिपिमे दहिनसँ वाम लिखल लेख प्राप्त होइत अछि जाहिमे श, ष, स तीनूक प्रयोग अछि।

मोटा-मोटी प्राकृतमे शब्द-धातुरूपक सरलीकरणक प्रक्रिया दृष्टिगोचर होइत अछि, द्वित्व, मूर्धन्यीकरण, अघोषीकरण आ सघोषीकरण, लकारक बदला कृदन्तक प्रयोग सेहो बढ़ि गेल।

३. अवहट्ट


धीरेन्द्र प्रेमर्षि

मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून

भूगोलसँ विलुप्त भऽ चुकल मिथिला जँ एखनोधरि अस्तित्वमे अछि तँ एकरा पाछाँ एक्कहिटा कारण छैक– एहिठामक लोकवेदमे रहल बौद्धिक ऊर्जा आ मैथिल संस्कृतिमे रहल विलक्षणता एवं वैज्ञानिकता। मिथिलामे जीवनक विविध रोमाञ्चक घड़ि एवं महत्त्वपूर्ण क्रियाकलापकेँ सांस्कृतिक आवरण ओढ़ाकऽ धार्मिकता एवं

सामाजिकतासँ आवद्ध कएल गेल छैक। लोकव्यवहारमे प्रचलित क्रियाकलापसभसँ मात्र सेहो ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एकर गर्भमे एखनो बहुतो बहुमूल्य रत्न नुकाएल छैक। एहीसभ कारणे एखनोधरि मैथिल संस्कृति जीवन्त अछि आ मिथिला अस्तित्वमे अछि। आजुक सन्दर्भमे तँ इहो कहब अतिशयोक्ति नहि बुझाइत अछि जे नेपालमे मिथिले एकटा एहन सांस्कृतिक सम्पदा अछि, जकर आड़ुर धऽकऽ मधेश नामक राजनीतिक क्षेत्र डेगाडेगी दऽ रहल अछि। भारतदिस सेहो कमसँ कम बिहारक जँ बात कएल जाए तँ ओहि७म मिथिला छोडि आन कोनो उल्लेख्य सांस्कृतिक सम्पदाक सर्वथा अभावे देखल जाइत अछि।



आइकाल्हि मात्र धार्मिकता आ परम्परागत संस्कारक रूपमे अधिकांश पावनि तिहार वा सांस्कृतिक कर्म सीमित होइत गेल पाओल जाइत अछि। मुदा मिथिलाक पावनि तिहारसभकेँ जँ सूक्ष्मतापूर्वक देखल जाए तँ एहिसभक पाछाँ कोनो ने कोनो उद्देश्य निहित रहल स्पष्ट देखबामे आबि जाइत छैक। एकरासभकेँ आओर बेकछाकऽ देखलापर आजुक समयमे सेहो ई पावनि तिहार ओतबए सान्दर्भिक आ उपयोगी बुझाइत छैक। साओन मासमे मिथिलाक किछु जातिमे नवविवाहित दम्पतिसभक लेल आयोजन होबऽ वला मधुश्रावणी पावनिकेँ सेहो एही रूपमे लेल जा सकैत अछि। मधुश्रावणी विशेषतः नवविवाहिता स्त्रीसभक लेल आयोजित भेनिहार एकटा एहन धार्मिक अनुष्ठान छियैक, जाहिमे ओसभ धार्मिक रूपेँ तँ विषहरा आ महादेव पार्वतीक पूजा करैत छथि, मुदा एकर गहिराइमे जा देखलापर स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे मधुश्रावणी मिथिलामे मनाओल जाएवला एकटा परम्परागत प्रकृतिक 'मधुचन्द्रिका' अर्थात 'हनिमून' छियैक। मधुश्रावणी मिथिलाक ब्राह्मण, कायस्थ, देव, स्वर्णकार आदि जातिमे विशेष रूपसँ मनाओल जाइत अछि।



आधुनिक यौनशास्त्रीलोकनि हनिमूनकेँ वैवाहिक सम्बन्ध सुदृढीकरणक प्रमुख आधार मानैत छथि। तत्कालीन मैथिल विद्वानसभक सेहो एहि पावनिक परम्परा आरम्भ करैत काल इएह मानसिकता रहल होएतनि। प्रायः इएह कारण भऽ सकैत अछि जे मिथिला क्षेत्रमे परम्परागत रूपेँ मधुश्रावणी मनाओल जाएवला ब्राह्मण, कायस्थ, देव आदि जातिमे वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेदक घटना अपेक्षाकृत कम देखबामे अबैत अछि। जाहिरसन बात अछि– जँ विवाहक बन्धन सक्कत रहैत छैक, तँ एहिमे आगाँ चलिकऽ दुर्घटना कम होइत छैक। लोक लाजक भय वा स्त्री जातिक लेल डेग डेगपर लगाओल जाएवला वर्जना मात्र जँ 'जबर्दस्ती दाम्पत्यक गाड़ी' घिचबाक कारण रहितैक तँ मिथिलाक आनो जातिमे वैवाहिक सम्बन्ध ओतबए सुदृढ रहितैक, जतेक मधुश्रावणी मनौनिहार जातिमे।



तहिया एखनजकाँ 'हनिमून' क लेल बाहर जएबाक अवस्था नहि छलैक। भऽ सकैत छैक जे यातायातक असुविधा एकर प्रमुख कारण रहल हो। मुदा नवविवाहित दम्पतिकेँ किछु उत्फुल्लता, किछु उन्मुक्तता भेटबाक चाही– एहि बातक निष्कर्ष तत्कालीन विद्वानलोकनि निकालने होएताह। एकरा लेल ओलोकनि कामोद्दीपनक दृष्टिएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानल जाएवला बरसाती महिना साओनक चयन कएने होएताह। धार्मिकताक सङ्ग आबद्ध कऽ एकरा व्यापकता देल गेल होएतैक। साओनक मधुरताक आभास करएबाक सन्दर्भमे तथा यौन सम्बन्ध सुदृढीकरणक दृष्टिएँ आवश्यक तत्त्वसभ समाहित कऽ एकरा एकटा परम्परा बना देल गेल होएतैक। एहि नान्हिटा लेखमे वैज्ञानिक दृष्टिएँ मैथिल संस्कृतिमे पाओल जाएवला सम्पूर्ण सार्थक पक्षसभक विस्तृत चर्चा करब सम्भव नहि अछि। मुदा एतबा अवश्य कहल जा सकैत अछि जे मैथिलीक अधिकांश संस्कार, आचार विचार एवं व्यवहारमे डेग डेगपर वैज्ञानिक आधारसभक प्रचुरता पाओल जाइत अछि।

यौनविज्ञानक दृष्टिएँ जँ देखल जाए तँ मधुश्रावणी पावनिक अत्यन्त विशिष्ट महत्त्व अछि। सामान्यतया ई पावनि मनाओल जाएवला जातिसभमे विवाहक बाद लड़का सासुरमे रहैत अछि। परम्पराक जँ बात करी तँ चारि दिनक बाद ओकरासभक 'चतुर्थी' अर्थात प्रथम मिलन होइत छैक। एहि चारि दिनधरि वर कनियाँ दुनूकेँ नोन नहि खाए देल जाइत छैक। चारिम दिन भोजनमे माछ मासुसन सुरुचिकर एवं तामसी खाद्यवस्तु समाविष्ट रहैत छैक, जे कामोद्दीपनक दृष्टिएँ सेहो विशेष महत्त्व रखैत अछि। एहिठाम संस्कृतिक अन्तर्वस्तुक रूपमे नुकाएल मनोविज्ञान दऽ विचार कएल जा सकैत अछि। वस्तुतः ई चारि दिन वर कनियाँक रूपमे दू अपरिचित प्राणीकेँ भावनात्मक रूपेँ लग अएबाक लेल देल गेल विशेष अवसर छियैक। कारण,

यौनशास्त्रीलोकनिक कहब छनि जे जाधरि स्त्री पुरुष दुनू भावनात्मक रूपेँ निकट नहि होएत, ताधरि सफल यौन सम्बन्धक स्थापना नहि भऽ सकैत छैक। समाजमे जहिया प्रेम विवाहक सम्भावना नहिजकाँ छलैक, तहिया एही भावनात्मक निकटताक लेल ई चारि दिन देल जाइत छलैक। जँ एना नहि रहितैक तँ सामान्यतया आन जातिमे विवाहक प्रातेभने मनाओल जाएवला सुहाग रातिक लेल ब्राह्मण कायस्थ देव आदि जाति किएक चारि दिनधरि उपास रखितथि! शिक्षा दीक्षाक मामलामे तत्कालीन समयक सर्वाधिक अग्रणी मानल जाएवला एहि जातिसभमे कोनो रूढ़िक कारणे तँ एहन बात नहिएँटा भऽ सकैत छलैक! अस्तु।

विवाहसँ चतुर्थीधरि भावनात्मक रूपेँ लग अएबाक लेल चारि दिनक समय तँ देल जाइत छैक। मुदा अवस्थाजन्य कारणकेँ देखैत एकटा खतरा बनले रहैत छैक। खतरा ई जे आगि आ खढ़क बीच निकटता भेलापर धधरा ने पजरि जाए वा कही युवा मोन बहकि ने जाए! तकरे सावधानीस्वरूप ओकरासभकेँ नोन नहि खाए देल जाइत छैक। नोन नहि खाएल अवस्थामे ओहुना लोक शारीरिक आ मानसिक रूपेँ शिथिल भऽ जाइत अछि। निश्चित रूपेँ अनोनाक अभीष्ट इएहटा भऽ सकैत छैक जे नवविवाहित वर कनियाँमे आवश्यक तैयारीसँ पूर्वहिँ काम भावना नहि भड़कि जाइक। चारिम दिनक मधुर मिलनक लेल फेर नोनक सङ्ग सङ्ग भोजनमे सेहो विशेष रूपसँ नीक निकुतक ओरिआओन कएल जाइत छैक। ई भोजन सामग्री शारीरिक रूपसँ वर कनियाँकेँ तैयार करैत छैक। जखन कि मानसिक रूपेँ उद्वेलित करबाक काज करैत रहैत छैक- साँझ कोवर आदि गीतमे व्यक्त भेनिहार प्रेम प्रसङ्ग। समग्र रूपमे बढ़ैत मानसिक शारीरिक उद्वेलनक भावमे चुहलवाजीक छौँक लगएबाक काज करैत छैक- डहकनक झँसगर पाँतिसभ।

एहि तरहेँ चतुर्थीमे भावनात्मक रूपेँ शारीरिक सम्बन्धकेँ सुदृढ बनएबाक प्रयत्न कएल जाइत छैक। एहिठाम फेर जँ परम्पराक गप्प करी तँ ई देखल जाइत अछि जे पहिने एहि जातिसभमे विवाहक बाद सासुरसँ विदाह भऽकऽ अएलाक बाद वर एक्कहिबेर मधुश्रावणीएमे पुनः सासुर जाइत छल। तँ विश्वास कएल जा सकैत अछि जे कनियाँ वरक एहि दोसर मिलनकेँ पुनः शारीरिक सम्बन्धक प्रगाढ़तासँ भावनात्मक सम्बन्ध सुदृढ करबाक सांस्कारिक संयन्त्रक रूपमे विकसित कएल गेल हो।

एहि पावनिमे नवविवाहिता तेरहसँ लऽ पन्द्रह दिनधरि विषहरा आ गौरीक पूजा करैत छथि। एहि पूजाक लेल फूल लोढ़ऽ ओ स्वयं गेल करैत छथि आ सङ्गमे रहैत छनि हुनक सखी बहिनपासभ। फूल लोढ़ब मूलतः बहाना होइत अछि। असली काज रहैत छैक घुमफिर आ गप्पसप्प। जखने कोनो नवविवाहिता अपन सखी बहिनपासभक सङ्ग घुमफिर करऽ कतहु जाएत तँ ओकरासभक बीच गप्पक विषय की भऽ सकैत अछि, से सहजहिँ अनुमान लगाओल जा सकैत अछि। निश्चित रूपेँ गप्पक विषय ओकर पति, ओकरासमभक अनुभव आदि इत्यादि रहैत होएतैक। ई बातचीत यौन भावनाकेँ तीव्र करबामे आ यौनसम्बन्धी विविध जिज्ञासासभक समाधानमे सेहो सहायक होइत छैक। बादमे पूजा कालमे वर कनियाँ दुनूकेँ संगहि राखिकऽ शिव पार्वतीक विभिन्न प्रसङ्गक बखान करैत यौनसम्बन्धी खिस्सासभ प्रतीकात्मक रूपेँ सुनाओल जाइत छैक। दुनू युवा मनकेँ प्रेम आ काम भावना बढ़एबामे ई खिस्सासभ उपयोगी भेल करैत छैक। एकरा बाद फेर विवाह कालमे बनल कोहबर तँ वर कनियाँ लेल अजबारले रहैत छैक। आ, ई क्रम निरन्तर तेरहसँ लऽ पन्द्रह दिनधरि चलैत रहैत छैक। निश्चित छैक जे एतबा अवधिमे वर कनियाँ एक दोसराक सङ्ग शारीरिक आ मानसिक दुनू दृष्टिएँ

बेस लग आबि जाइत छैक, जे कि आजुक आधुनिक वैज्ञानिक समाजक हनिमून आ तत्कालीन परम्परागत मैथिल समाजक मधुश्रावणीक अभीष्ट सेहो छियैक।

मिथिलाक संस्कृतिमे यौनकेँ बड़ बेसी महत्त्व देल गेल छैक। मुदा कतेको लोक एकरा धर्मक ससरफानीमे तेना ने गछाड़िकऽ राखि देने छथिन जे आमलोक आगाँ पाछाँ किछु सोचिए नहि सकैत अछि। तेँ जखन ई कहल जाइत अछि जे मधुश्रावणी यौनविज्ञानक अभिमञ्चनसम्बन्धी पावनि अछि तँ कतेको मैथिल महामनासभ बमकि उठैत छथि। किएक तँ ओ एहिमे महादेव पार्वतीसँ बेसी किछु देखिए नहि सकैत छथि। मधुश्रावणीमे पूजित विषहरा (नाग) दू रूपेँ महत्त्व रखैत छथि। साहित्य वा ललितकलामे जे प्रतीकसभ प्रयोग कएल जाइत अछि, ताहिमे माछकेँ स्त्री जननेन्द्रिय, साँपकेँ पुरुष जननेन्द्रिय, काछुकेँ सम्भोग, बाँसकेँ वंश आदि मानल जाइत अछि। नवविवाहिता प्रतीकात्मक रूपेँ विषहराक पूजा करैत पुरुष जननेन्द्रियक महत्त्व बूझैत छथि। दोसरदिस प्रकृति संरक्षणक लेल सेहो साँप महत्त्वपूर्ण अछि। तँ भलहि ओ विषधर अछि, मुदा ओकर संरक्षण होएबाक चाही, से सन्देश एहिसँ जाइत अछि।

मधुश्रावणीक खिस्सामे सेहो तेहने बातसभ बेसी अबैत छैक। जेना विषहराक जन्मेक सम्बन्धमे उल्लेख अछि– 'एकबेर महादेव आ पार्वती जलक्रिडा करैत सम्भोग कऽ रहल छलाह। तेहनेमे महादेवक वीर्य स्खलन भऽ गेलनि। ओहिसँ विषहराक जन्म भेल।' तहिना गौरीकेँ छिनारि बनएबाक प्रसङ्ग सेहो मधुश्रावणीक खिस्सामे आएल अछि। किछु फकड़ामे सेहो एहि तरहक बातसभ आएल अछि। जेना बैरसी आ युवतीबीचक संवादमे कहल गेल अछि– 'ऊँचे आरि ऊँचे धूर ऊँचे त खरिहान रे, ताहूसँ जे ऊँच देखल गौरीके भथियान रे।' एही तरहेँ गौरीक 'आङ', गौरीक स्तन आदिक वर्णन सेहो बड़ रसगर अन्दाजमे कएल गेल अछि। मैथिल संस्कृतिमे यौनकेँ कतेक महत्त्व देल गेल छैक, तकर अनुमान अहिबक फड़ नामक पकवानक रूप रंग आ नामसँ सेहो स्पष्ट भऽ जाइत अछि। तेँ निःशङ्क भऽकऽ कहि सकैत छी जे मधुश्रावणी यौनभावना आ यौनशिक्षाक महापर्व छियैक। साओन मासमे पड़लासँ ई अपन सार्थकताकेँ आओर बेसी पुष्टि करैत अछि। कारण हम एकटा एहन जोड़ीकेँ जनैत छी जे विवाहक डेढ़ दशक गुजरि गेलाक बादो जखन वर्षा होबऽ लगैत छैक तँ कलेजमे पढौनाइ छोड़िकऽ दौड़ल दौड़ल डेरा पहुँचि जाइत छथि। एहिमे ओहि मित्र दम्पतिसँ बेसी कारगर साओनक मादकता करैत छैक। आखिर एकरे ने मैथिल संस्कृति सहेजने अछि।

आइकाल्हि मात्र सतही दृष्टिएँ देखनिहार किछु तथाकथित महिला अधिकारवादीसभ मधुश्रावणीक क्रममे कनियाँकेँ 'टेमी' देल जाएवला रीतिकेँ महिला हिंसाक एकटा रूप मानैत एकर विरोधो करैत देखल जाइत छथि। एहि विरोधक पाछाँ हमरा एक्कहिटा कारण नजरि अबैत अछि– हुनकासभमे मैथिल संस्कृतिक विशिष्टताक सन्दर्भमे रहल अज्ञानता। टेमी देबाक विधिमे कनियाँक ठेहुनमे पानक पात राखि उपरसँ जरैत टेमीसँ छुआओल जाइत छैक। निश्चित रूपेँ ई सामान्य पीड़ादायक सेहो होइते होएतैक। मुदा की स्त्री जातिकेँ प्रथम संसर्गमे ओ सामान्य पीड़ा नहि होइत छैक? वस्तुतः ई ओकरे एकटा कड़ी छैक, जाहिमे ई सङ्केत देल जाइत छैक जे यौनसम्बन्ध जँ बड़ आनन्ददायक होइत छैक तँ ओहिमे स्त्रीकेँ पीड़ासँ सेहो साक्षात्कार करऽ पड़ैत छैक। एकर पृष्ठभूमिमे एकटा एहू पक्षकेँ लेल जा सकैत छैक जे भऽ सकैछ, पहिने पहिने

मधुश्रावणीएक समयमे वर कनियाँबीच प्रथम शारीरिक मिलन होइत रहल होइक आ तकरे आभास करएबाक लेल ई प्रथा चलाओल गेल हो।

एकटा दोसर कारण इहो मानल जाइत अछि जे मिथिलामे यवनसभक आक्रमण भेलाक बाद ओकरासभक कुदृष्टि नवकनियाँसभपर बेसी पड़ैत रहैक। ओकरासभसँ बचएबाक लेल कनियाँकेँ कनेक आगिसँ जरा देल जाइक, जाहिसँ ओसभ ओकरादिस ध्यान नहि दिअए। कारण मुसलमानसभ जरनाइकेँ बहुत खराब मानैत अछि। पं. सूर्यकान्त झा ई तर्क आगाँ बढ़बैत कहैत छथि– 'एही कारणे मुइलाक बादो ओकरासभकेँ जराओल नहि जाइत छैक, गाड़ल जाइत छैक।' संस्कृतिविद स्व. प्रो. नमोनारायण झाक एहि विषयमे तर्क छनि जे ठेहुनपर कोनो नस एहन रहैत होएतैक, जकरा प्रभावित कएलापर यौनसम्बन्धी ग्रन्थीसभमे सकारात्मक असर पड़ैत होइक आ ताहीक अन्तर्गत ई प्रक्रिया शुरू कएल गेल हो। स्वास्थ्योपचारक चीनी पद्धति अक्यूपङ्चर, अक्यूप्रेसर आदिपर ध्यान देलापर एहू बातमे विश्वास करबाक यथेष्ट आधारसभ बनैत छैक।

टेमीक एकटा बातकेँ लऽकऽ नेपालक मिडिया आ मिथिलाक यथार्थसँ दूर दूरधरिक कोनो सम्बन्ध नहि रखनिहारि किछु महिलावादीसभ किछु सालपूर्व एक्के टाङपर खूब नाचल रहथि। एहि नामपर ओसभ मधुश्रावणीकेँ मात्र नहि, सम्पूर्ण मैथिल विवाह पद्धतिकेँ बदनाम करबापर लागल छथि। एना देखलापर ओ व्यक्तिसभ हमरा ओहने कोनो अज्ञान नेनाजकाँ लगैत अछि, जे दूटा साँपकेँ आपसमे जोड़ लगैत देखलापर बाप बाप चिचिया उठैत अछि जे साँपक झगड़ा भऽ रहल छैक। पीड़ा टेमीएटामे नहि होइत छैक। रोग निवारणक लेल लगबाओल जाएवला सुइयामे सेहो पीड़ा होइत छैक। मूह कानक सिंगार लेल नाक कान छेदएबामे सेहो पीड़ा होइत छैक। सुन्दर आ हाथ लागल चूड़ी पहिरबामे पर्यन्त पीड़ा होइत छैक। तखन बुझबाक जरूरति ई रहैत छैक जे पीडाक प्रयोजन की? नाक कानमे भूर कऽकऽ शरीरकेँ खण्डित कएनाइ आ कि नाक कानमे लटकऽ वला गर गहनाक सौन्दर्यसँ आनन्दित भेनाइ? टेमीक सन्दर्भमे सेहो इएह बात लागू होइत छैक।

ओहुना टेमी यौनशिक्षाक पावनि मधुश्रावणीक एकटा अङ्ग छियैक। यौनक्रियाक आरम्भ तँ पीड़ासँ होइतहिँ छैक, वात्सायनक कामसूत्रकेँ जँ आधार मानल जाए तँ नखक्षत, दन्तक्षत आदि विधिक चर्चा सेहो अबैत छैक जे नारीक उद्दीपनमे सहयोगी मानल जाइत अछि। एतबए नहि, नारीकेँ जीवनक सर्वाधिक सुखकारी प्रक्रिया सन्तानोत्पादनमे सेहो असह्य पीड़ासँ गुजरऽ पड़ैत छैक। यावत पक्षसभपर विचार करैत गेलापर मधुश्रावणीमे देल जाएवला टेमी पीड़ा पहुँचएबाक उद्देश्यसँ नहि, अपितु स्वस्थकर यौनजीवनक लेल आरम्भहिमे लगाओल गेल टीकाकरणक एकटा प्रक्रिया छियैक। एकरा एहू लेल हिंसा वा प्रताड़नाक रूपमे नहि देखल जा सकैत अछि, किएक तँ ई प्रक्रिया प्रायः नवकनियाँक नैहरमे भेल करैत छैक। नैहरमे कनियाँक काकी, दिदी आदिसँ ओकरा पीडा पहुँचएबाक हिसाबेँ कोनो काज निश्चिते नहि भऽ सकैत छैक।

हँ, टेमीक सङ्ग जोड़िकऽ किछु अनर्गल बातसभक प्रचार अवश्य भऽ रहल छैक। जेना टेमी देल जगहपर जँ फोका भेल तँ पति बेसी मानत। वा ई सतीत्वक अग्निपरीक्षा छियैक। जकरा फोका नहि भेलैक से दुश्चरित्र अछि, आदि आदि। मुदा ईसभ समयक्रममे जुटैत गेल बकबाससभ छियैक। भऽ सकैछ जे कहियो ककरो

टेमी दैत काल बेसी पाकि गेल हेतैक आ फोँका भऽ गेल हेतैक तँ टेमी देबऽ वाली ओकरा भरोस देबऽ दुआरे कहि देने हेतैक जे जकरा जतेक पैघ फोका होइत छैक, तकरा घरवला ततेक बेसी मानैत छैक।

टेमी तहियाक प्रचलन छैक, जहिया मिथिलामे आधुनिक शिक्षाक प्रसार नहि भेल छलैक। ओहि समयमे वर वधुकेँ यौनशिक्षा देबाक कोनो भरोसगर माध्यम सेहो उपलब्ध नहि छलैक। मुदा आइ युवायुवतीसभ अपन पाठ्यपुस्तकसँ लऽकऽ अन्य अनेको माध्यमसँ सेहो ई शिक्षा आसानीसँ प्राप्त कऽ सकैत छथि। तेँ उपयोगिताक दृष्टिएँ मधुश्रावणी आ मधुश्रावणीक टेमी किछु आवश्यक नहि रहि गेलैक अछि। मुदा हमरासभक संस्कृति लोककल्याणक पक्षकेँ एतेक गहियाकऽ धएने अछि, से बात विश्व समुदायकेँ कहबाक लेल मात्र सेहो एहि तरहक संस्कृतिक संरक्षण आवश्यक छैक। हँ, एहिमे जतऽ कतहु विकृति नजरि आबए, ओहिमे सुधार वा परिमार्जन आवश्यक भऽ जाइत छैक। जेना कि राजविराजमे मैथिल महिला परिषदक अगुआइमे टेमी बन्द करएबाक अभियान चलाओल गेल अछि। ई सर्वथा उचित बात अछि। किएक तँ मिथिलामे कोन चीज कतबाधरि पाच्य अछि आ कतबा अपाच्य अछि, तकर निर्णय करबाक अधिकारी मिथिलेवासीसभ भऽ सकैत छथि। मैथिल नारीकेँ जँ कतहु प्रताडित भेलसन बुझाइत छनि तँ एकरो आवाज मैथिले नारीकेँ उठएबाक चाहियनि। आनकेँ तँ की छैक, कोनो मैथिल महिलाक सीँथमे लागल सिन्दुर देखिकऽ कहि सकैत अछि, 'बाफ रे बाफ, मिथिलाक नारीपर बड़ अत्याचार होइत छैक। ओकरा पुरुषसभ एतेक प्रताड़ित करैत छैक जे सभ दिन ओकर माथ फुटले रहैत छैक।'

आइकाल्हि आधुनिक विचारधाराक लोकसभ परम्परागत अधिकांश पक्षकेँ अन्धविश्वास वा कुरीतिक रूपमे व्याख्या करैत छथि। मुदा मैथिल संस्कृतिमे बेसी एहने पक्षसभ अछि, जे निरर्थक नहि अछि, पूर्णतः सार्थक अछि। आजुक आधुनिक समाजपर्यन्त एहि संस्कृतिसँ बहुतो कल्याणकारी तत्त्वसभ ग्रहण कऽ सकैत अछि। एहन स्थितिमे संस्कृतिकेँ एक्कहि झटकामे तोड़ि फेकबाक धारणा रखनिहार लोकसभकेँ चाहियनि जे ओ एकबेर अपन ज्ञानचक्षु उघारिकऽ अपन संस्कृतिक सिंहावलोकन करथि, तकरा बादहि एकरा विषयमे कोनो मत बनाबथि। आ, हम तँ ई कहऽ चाहब जे वर्तमान समयमे भयानक आर्थिक तङ्गीसँ गुजरि रहल सम्पूर्ण मिथिलावासीकेँ चाही जे ओ मधुश्रावणीसन जीवन्त पावनिकेँ अङ्गीकार कऽ घरहि बैसल अपन बेटा पुतहुकेँ, बेटी जमाएकेँ हनिमूनक मौका उपलब्ध कराबथि, मिथिलाक सांस्कृतिक विशिष्टताक संरक्षण सम्बर्द्धन करथि।



१. श्रीमती शेफालिका वर्मा- आखर-आखर प्रीत (पत्रात्मक आत्मकथा) (क्रमसँ पहिल खेप)



२. **बिपिन झा-चहकैत चौक आ कनैत दलान**



१. श्रीमती शेफालिका वर्मा- आखर-आखर प्रीत (पत्रात्मक आत्मकथा)(क्रमसँ पहिल खेप)

जन्म:९ अगस्त, १९४३, जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा: एम., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय),ए. एन. कालेज, पटनामे हिन्दीक प्राध्यापिका, अवकाशप्राप्त। नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि करुण रससँ भरल अधिकतर रचना। प्रकाशित रचना: झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर, विप्रलब्धा कविता संग्रह, स्मृति रेखा संस्मरण संग्रह, एकटा आकाश कथा संग्रह, यायावरी यात्रावृत्तान्त, भावाञ्जलि काव्यप्रगीत, किस्त-किस्त जीवन (आत्मकथा)। ठहरे हुए पल हिन्दीसंग्रह। २००४ई. मे यात्री-चेतना पुरस्कार।

शेफालिकाजी पत्राचारकेँ संजोगि कऽ "आखर-आखर प्रीत" बनेने छथि। विदेह गौरवान्वित अछि हुनकर एहि संकलनकेँ धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित कऽ। प्रस्तुत अछि पहिल खेप।- सम्पादक

आखर-आखर प्रीत **(पत्रात्मक आत्मकथा)**

(क्रमसँ पहिल खेप)

दुई शब्द

आखर प्रीति केर किछ नहीं बस अहाँक सिनेह थीक जे अहाँ सव अपन पत्रक माध्यम सँ हमरा कोनो रूपे मोन पाड़लौं। एकरा हम कंगालिनक धन जकां नुका के रखने छलौं। जखन मोन उदास हतास उपेक्षित बुझा पड़ैत छल तखन पत्रक ई पेटी निकालि चुपचाप पढैत छलौं आँखि सँ हृदय सँ एहि मे छिरियाल सिनेह के हंसोथि एकटा अविकल आत्मतुष्टि एकटा परमानंदक अनुभूति से मोन प्राण भरैत छलौं। एहि पत्र सवक सोझा हमरा विश्वक सम्पदा सारहीन लागैत अछि। हमर जिनगी मे रक्त संबंध से कम महत्व प्यारक संबंधक नहि रहल। हम जकरा मानलौं सम्पूर्ण प्यार ममता वात्सल्य से ¯सचलौं चाहे ओ देखल होथि वा कि अनदेखाल जानल पहिचानल होथि कि अनचिन्हार मुदा जे समयक एकाई से संशय-असंशय से तर्क वितर्क से एहि सिनेहके जोखलैथ ओ स्वयं अपने आप पाछु हँटि गेलैथ। आय जीवनक एहि संध्या बेला मे एहि पत्र सब के उजागर नै करब ते स्वयं अपनों संग न्याय नै क सकब। किन्तु दुःख एतवे अछि जे हज़ारो हज़ार पत्रक सम्मुख हमर किताबक पÂI बड कम अछि। हम चाहियोके सभ पत्र के यथावत नै छापि सकैत छी। प्रयास केने छी जे प्रायः सभ पत्रक किछ ने किछ पाती के उजागर कै सकी। हम ओही नाम सभ के कृतज्ञता आभार दय सकी। बहुतो से संपर्क टूटी गेल बहुतो के जवाब नहीं दय सकलौं। बेसी लोग के हम देखनो नै छी। ¯कतु पत्रक

माध्यम से हम हुनक छवि अपन मोन मे बसेने छी। आ हरदम प्रेरणा ग्रहण करैत छी। ¯हदी मैथिलीक आ अंग्रेज़ीक सब पाठक लोकनिक पत्र आगू देने छी। बहुतो मे वर्ष तारीख धूमिल भय गेल छैक कतेको मे तो सेहो नै अछि। पत्र लेखन सुदूर अतीत से आबी रहल छैक। तैंते आदि कवि विद्यापति के कविता के पतिया ले जाइत रे मोरा प्रियतम पास फेर पियतम को पतिया लिखूं जो कोई होई विदेश तन मे मन मे नयन मे ताको कहाँ सन्देश मैथिली मे शीलादाई के चिठी मे एतवे लिखल छैं कहू यो

प्राणनाथ कोना के रहै छी से लिखलनि अछि श्री सोनदाई एहि हरिहर हरिहर कागद पर जन जन के ठोर पर छल। एतवे नहि गीतों मे चंदारे मोरा पतिया लेई जारे प्रियतम को सरिपों पत्र लेखन आत्मविव्यक्तिक सशक्त साधन थीक स्वयं के चिन्हवा लेल अपना के जानवा लेल। यदि केकरो पर तामस उठे ते तत्क्षण ओकर नाम से पत्र लिखी मोनक सब तामस निकालि दी आ कनि काल बाद यदि फेर ओही पत्र के पढ़ी ते लागत कतेक बेदरमत वाला चिठी लिखने छलौं स्वयं पर तामसो उठैत छैक आ हंसियो लागैत छैक। पत्र इएह थीक जाकर अस्तित्व रहि जाइत छैक। सब किछ अतीत भय जाइत छैक मुदा पत्र मे छिरियायल प्रेम कहियो अतीत नहि होयत छै। अपराजित

कुसुम सदृश्य चिर काल धरि मोहित-सम्मोहित करैत रहैत अछि हँ उदास भेला पर की तनाव मे रहला पर जखन मानव लिखैत अछि तै अपन आत्मा के अनावृत कै दैत ऐछ। आ ई क्षण सब से साँच क्षण होयत अछि। कोनो कोनो पत्रते राष्ट्रीय निधि बनि जाइत अछि। पंडित जवाहर लाल नेहरू के लिखल पत्र पिताक पत्र पुत्रीक नाम देशक गौरव बनि गेल। महात्मा गाँधीक पत्र सब विदेश मे 2 करोड़ों मे नीलाम भेल। हाले मे ओबामाक पत्र पुत्रीक नाम सार्वजनिक भ गेल। ई एकटा इतिहास अछि। हमर प्रयोजन मात्रा एतवे जे पत्रक कतेक महत्व अछि। अंग्रेज़ीक एकटा बड पैघ विद्वान लिखने अछि जे most difficult in life is to know yourself. प्रत्येक मानव जीवन अपना आप मे एकटा उपन्यास कथा संस्मरण यात्रा नाटक आलोचना-प्रत्यालोचना विश्लेषण समीक्षा आदि के समेटने रहैत छैक अपन जीवन मे मानव कतेको कथा के जन्म दैत अछि। संस्मरण मे जीवैत अछि यात्रा मे चलैत अछि जिनगी भरि नाटके ते करैत अछि विद्वान लोकनि जीवनक एहि खंड के साहित्यिक अभिधा बनाय साहित्यक सृजन करै लागलनि

भनहि ओ कोनो भाषा होय! अभिव्यक्ति के सामर्थ्य हेवाक चाही तैं ओ साहित्यकार बनी जाइत छथि। सौंसे जीवन आंखि मे नाचि जाइत अछि भगलपुर मे जनम साहेबगंज हजारीबागक जंगल मे बाल्यकाल पुनः पापाक बदली सहरसा आ पटना धरिक अश्रांत यात्रा पंद्रह बरिसक आयु मे वालिका वधु डुमरा सहरसाक चालीस गोटेक सामंती संयुक्त परिवार मे सभ से पैघ पुतहु फेर सहरसाक जीवन पतिक वकालत अपन नौकरी राजनीति बालबच्चाक स्कूली पढ़ाई सहरसा जिलाक इमानदार पी पी बनवाक सनेस पतिक हार्ट एटैक इंग्लैंड मे बायपास सर्जरी आ तीन बरिस बाद सब किछुक अंत हम लहास बनि गेल छलौं। रजनी से शेफालिका बनि गेनाय हमर जीवनक अद्भुत प्रक्रिया रहल रजनी एकटा विशाल परिवारक केंद्र बिन्दु स्नेह सिन्धु मे उधियाइत शेफालिका साहित्यक विस्तृत उदधि मे लहरिक छोट सन ज्वार जकां उमड़ैत इतरैत।

एहि दुनू नामक संग चिठी पत्रीक भण्डार हमर मोनक कोन कोन के स्पर्श करैत छल हम एकरा जोगा के राखैत छलौं उजाले अपनी यादों के हमारे संग रहने दो न जाने ¯जदगी की किस गली मे शाम हो जाये हमर अन्हार जिनगी मे इजोत भरयवाला ई पत्र सभ सहरसा एहेन जगह मे एतेक पत्र हमरा नाम से एला पर डाकिया सभ गोटेक ठोर पर एके बात रहैत छल वकील साहेबक कनियाक नाम से कतेक चिठी अबैत छैक एकटा पत्र आयल शेफालिका पुखणयाक पता से। डाकिया हमरा पत्र दै देलक ओकरा हम कहलौं हमर पत्र नै थिक मुदा नहीं मनलक। चिठी खोल लौं ते बंगला मे लिखल छल। ओ हमर जिनगीक संघर्ष काल छल हमर साहित्यिक जिनगीक स्वर्ण काल।

हम छपैत रही आ खूब छपैत रही मैथिलीक कोनो पत्रिका नहीं छल जाहि मे हम नै छलौं। फेर ¯हदी अंग्रेज़ी सब मे हम बराबर छपैत रही जे हमर जीवनक संघर्ष मे एकटा स्पूफखत भरि दैत छल नव उजास नवल विहान कोनो रचनाकार अपन युगक स्थिति परिस्थिति से प्राप्त अनुभव के अपन सृजन मे अभिव्यक्त करैत अछि। जहिना चारुकात घटैत घटना सब जीवन मे नव बाट खेलैत अछि ओहिना बदलैत जीवनमूल्य सँ निःसृत मानवीय संवेदना मानव स्वभाव मानसिक स्थिति आ अवस्थाक विश्लेषण भ जैत छैक। एहि चिठी पत्री सब से। सुगंध फूल मे ते होइतहि अछि स्वप्न मे साँस मे आंखि मे सेहो बसैत अछि। मुदा हम ओकरा स्पर्श नै क सकैत छी। मात्रा अंतर मे अनुभूत करैत छी ओहिना एहि पत्र सबहक स्नेहिल संस्पर्शक सुगंध के हम साँस साँस मे अनुभूत करैत छी

3

जमाना बड तीव्र गति सँ भगैत गेल। वैज्ञानिक क्रांति वैचारिक क्रांति सँ देशे नहि समस्त

संसार मे हिलकोर मचि गेल। इंटरनेट मोबाइल एसेमेस आदि समस्त विश्व के एकटा गाम मे बदलि देलक आजुक बच्चा तार लैटि¯नग पफोन काल आदि के नाम नहि जनैत अछि कोना बेर कुबेर राति-बिराति तारक नाम से खराब बातक आशंका से जी थर थर कपैंत रहैत छल ककरा की भ गेलैक आब ते पोस्टोपिफस डाकिया खाली सरकारी काज लेल रहि गेल वैश्वीकरणक एहि युग मे गाम से शहर शहर से देश देश से विदेश सब ठामक संस्कृतिक झलक पत्र मे भेट लागल। कम्युनिकेशनक साधन हमर सबहक आवश्यकता बनि गेल अछि। सड़क पर चलैत आम आदमीक हाथ मे मोबाइल रहैत छैक चाहे ओ कोनो वर्गक होइ या कोनो आयु केर। युवक युवती सड़क पर रेल मे बस मे घंटो घंटा मोबाइल से गप करैत अछि। ¯कतु दिमागक गप दिमाग से कपूर जकां उड़ि

जाइत अछि। ईमेल से पल मे समाचार संसारक एक कोन से दोसर कोन मे पहुंचि जाइत अछि। मुदा पत्र मे जे हृदयक मौलिक अभिव्यक्ति होइत अछि ओ एसेमेस मे नहि भेटैत छैक किन्तु पत्र निजताक सुगंधी से ओत प्रोत रहैत छैक। हुँ अपवाद सभठाम रहैत अछि। हमहू ईमेल सँ पत्र आयल किछ एहि मे द रहल छी जाहि मे जीवन छैक सिनेह छैक। आजुक पीढ़ी कल्पनो नहि क सकैत अछि जे पहिने लोक

के कतेक धैर्य छल पत्र लिखवा लेल। खासक पति पत्नीक के। समय तखनो नहि छल अपन अपन परिस्थितिक बेगरता छल। तैं हम पति पत्नीक पत्रक किछ अंश सेहो द रहल छी एहि संग्रह मे। हमर पापा स्व ब्रजेश्वर मल्लिक एकटा ऑफिसर क संगे भावुक संवेदनशील साहित्यकार सेहो छलैथ। अपन ब्याहक बाद पापा हमर माँ स्व अÂपूर्णा मल्लिक के जे पत्र लिखलनि ओ अपना आप मे एकटा साहित्य छल। हम देखने छलों जे एकटा लाल रंगक भेलवेट से मढ़हल कॉपी मे माँ अपना हाथ से पापाक पत्र सब उतारने छलीह जे एकरा पुस्तकाकार मे छपायब ¯कतु पारिस्थितिक एहेन झंझा जीवन मे आयल जे पापा माक सपना पूर्ण नहि भेल ओ कोपी कत गुम भ गेल हम सब भाई बहिनी नुका नुका के कौपी पढ़ैत छलौं लजाइत छलौं सिखैत छलौं साहित्य संवखधत होइत छल। पापाक लिखल 8-10 चिट्ठी क एकटा पफाटल चीटल खंड हमर पत्रक खजाना मे बदरंग पड़ल छल

मेरी अÂी तुम मुझ से दूर हो पर मैं देख रहा हूँ तुम मुझ से दूर कहाँ हो तुम तो मेरी अंतरात्मा मे बसी हो और मैं कल्पनाओं की दुनिया मे तुम्हें खोजता हूँ मेरी अÂी एक मासूम बाला की तरह पलंग पर लेटी है और मैं उसे हौले हौले थपकियाँ देकर सुला रहा हूँ गुनगुना रहा हूँ सो जा राजकुमारी सो जा कभी लगता है मैं बांसुरी बजा रहा हूँ और तू पनघट से बावरी की तरह भागी भागी आ रही हो

तुम्हारा ब्रज

1940

4

सब भाई बहन खूब हँसैत छल पापा आ गीत किन्तु हम बुझि गेलों जे पापाक इयैह

भावना हमर अंतरात्मा मे बसल छल वाल्याकाले से। स्यात पापाक एयाह कल्पनाशक्ति इएह स्वप्निल संसार हमर जिनगी बिन गेल छल। हमर अंतर मे एकटा विरहिणी नायिका तुलसी तर दीप नेसैत सतत प्रतीक्षा मे रहैत अछि। एहि मे हम पत्र सबहक दुई खंड केने छी। पहिलुक साहित्यिक पत्र सब जिनका कारण हम आय एहि देहरि पर पहुंचल छी दोसर खंड पारिवारिक थीक जिनका सिनेहक कारण रजनी शेफालिका बनि गेलीह कोन पत्र आगु अछि कोन पाछु ई हमरा स्वयं नहि मोन अछि हमर अस्तव्यस्त जिनगी जकां हमर सभ चीज अस्तव्यस्त रहल। साँच तँ ई अछि जे अखर प्रीत केर किस्त किस्त जीवनक एकटा किस्ते थीक- एहि पत्र मे आयल अपन समस्त हृदय के हम असंख्य धन्यवाद द रहल छी जिनका कारन हमर जीवन ज्योतित रहल। दृष्टि क आपफताब आलम जीके हार्दिक धन्यवाद जे एहि अस्तव्यस्त कागद सभ के जोड़ि आकार देलनि संगही गजेन्द्र ठाकुर जी के दिल्ली एहेन महानगर मे हमरा सहयोग द एही पुस्तक का ई-प्रकाशन केलन्हि हुनक एहि महानता मात्रा धन्यवाद कहि हम स्वयं तुच्छ भ जायब। नागार्जुनक एकटा पांति हमर मोन मानस मे सतत उथल पुथल

मचौने रहैत अछि कौन चाहेगा उसका शून्य मे टकराए यह उच्छवास हो गयी हूँ मैं नहि पाषाण/जिसको डाल दे कोई कहीं भी/करेगा वह कुछ नहि विरोध/ करेगा वह कुछ नहि अनुरोध/ वेदना ही नही जिसके पास/ पिफर उठेगा कहाँ से निःश्वास

शेफाली

परमादरणीया शेफालिका जी

सादर प्रणाम।

किस्त-किस्त जीवन अहाँ तँ सागरजी कें पठेलियनि मुदा घरौआ नारी होयबाक कारणें ई

लाभ हम उठेलौं। हुनकासँ पहिने हमहीं पढ़ि गेलौं 6-7 किस्त मे। हमरा बुझबा मे नहि आबि रहल अछि जे कतय सँ शुरु करी की लिखी की कही हँ एतेक जरूर लिखब जे एहि किताब कें हाथ मे लैत वा किताब दिस तकैत अनेरो आँखि से दहो-बहो नोर झरय लगैए। किए तकर कारण हम अपनो नहि जानि पबैत छी। एहि बेर महाकुंभ मेला लागल अछि। हमरो बहुत परिचित लोकनि सभ महाकुंभ स्नान करैक लेल जाइ गेलीह अछि। हमरो चलै ले कहलनि। हम हिनका सँ पुछल मुदा हिनकर नहिंये सन जबाब पाबी हम चुप भ गेलौं किएक तँ हिनका एहि सभ मे विश्वास किछु कम्मे जकाँ छनि। लेकिन किस्त-किस्त जीवन जकरा हम अहाँक डाइरी कहैत छी पढ़ि गेला सँ मोन मे एकटा एहन सन हिलकोर उठल जे कोनो टा कुंभ स्नान सँ बेसी सुखमय लागल। एकटा बात आर

जे मोनक कोनो दोग मे अहाँक दर्शन करबाक प्रबल इच्छा जागि गेल अछि। ठीके शेफालिका जी जखन हम अहाँके देखब तँ हाथ सँ छुबिं देखक आंगुर से दाबि कें देखब तरहत्थी सँ हँसोथिकें देखब भरि पाँज मे पकड़ि कें देखब चरण मे झुकि कें देखब की सरिपों अहाँ वैह शेफालिका छी जे हमरा माथ पर एखन हाथ रोपने छी

सत्ते विधाताक बड़ पैघ डाड अहाँक रंगीन जीवन पर पड़ल। अहाँ लोकनिक अंतरंगता

हुनको अखरि गेलनि। अहाँ एकटा सफल बेटी निश्छल प्रेयसी सर्वस्व समखपता पत्नी कुशल गृहिणी ममतामयी माय निष्णात लेखिका समाज-सेविका राजनयिक आ डल कमंत बाँधवी आ और की-की ने छी से नहि जनितहुँ जँ ई पोथी नहि पढ़ितहुँ। अहाँ अतुलनीय छी तोहर सरिस एक तोहें माधब मन होइछ अनुमाने ई बात हम एहि लेल लिखलहुँ जे सागरजी अहाँक तुलना महादेवी वर्मा महाश्वेता देवी वगैरह सभ सँ करैत रहैत छथि जे-हो मुदा मैथिली साहित्य कें एकटा अनमोल वस्तु भेटलैक अहाँक ई पोथी। हमरा बुझने एहि पोथीक उचित मूल्यांकन नहि भेलैक अछि। हमरा सन घरेलू महिला लोकनि कै तँ ई पोथी अरवैध कें पढ़वाक चाहियनि। पोथीक भाषा आ शैली

मे गति छैक। एक-दू पेज पढ़लाक बाद हैत नहि जे पढ़ब छोड़ि आर कोनो काज करी। येह एहि कृतिक सफलता भेलैक। 1962 मे जखन वियाह भेल छल तखने सँ मैथिलीक पोथी-पत्रिका पढ़ैत आबि रहल छी। तहिया मिथिला मिहिर मे अहाँक दू जुट्टिðया गुहल केशवला पफोटोक संग अहाँक कविता-कथा संग पढ़ैत रही। बड़ बढ़ियाँ बड़ बेश!

किस्त-किस्त जीवन तँ एकटा विरल रचना अछि। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस क वर्षगांठ

पर हम आग्रह करबनि मैथिलीक भाग्य विधाता लोकनि सँ जे एहन उपाय करथि जे एहि पोथीक अंतर्राष्ट्रीय भाषा मे अनुवाद होइक । आब हम अपन लेखनी कें विराम देबय चाहैत छी एकटा छोट छीन पांतीक संग-

पढ़ि गेलौं ई आत्मकथा

मोन मे भेल उसास

कतेक व्यथित ई बारह मास!

कतेक व्यथित ई बारह मास!!

स्नेहाकांक्षिणी

शैल

संतोषपुर कोलकाता

पत्र पहुँचनामाक सूचना अवश्य दी से आग्रह।

ई पत्र वरीय लेखक लक्ष्मण झा सागर क पत्नी शैल झााक लिखल अछि जे एकटा

गृहिणीक संगे बहुत तरह स मैथिलीक सेवा करैत छथि। इ हमरा बाद मे ज्ञात भेल हुनक हृदयक निश्छल उदगार एहि मे सÂहित अछि। किस्त-किस्त कोनो घरेलू महिलाक अन्तस्तल के स्पर्श कँ सकैत छैक ई हमर प्रथम अनुभूति ई विश्वक सभ सँ पैघ पुरस्कार हमरा लेल अछि आ किस्त किस्त लेखनक उद्देश्य केर संपूर्णता। हम तँ किछ नहि छी-किन्तु शैल जी स्वयं महान छथि ओहि आवरण सँ हमरा आच्छादित क देलनि-

साहित्य समाजक दर्पण होइत अछि आ साहित्यकार ओहि दर्पणक शिल्पी। शिल्पी जतेक

विलक्षण हएत छाया ततेक सापफ। कोनो साहित्यिक अध्ययनसँ रचनाकारक मनोवृत्ति स्पष्ट होइत अछि। मैथिली साहित्यिक संग ई विडंबना रहल जे एहिमे वाल साहित्य अर्थनीति आ आत्मकथाक विरल लेखन भेल। मात्रा किछु साहित्यकार एहि विधामे अपन लेखनीक प्रयोग कएलनि। ओहि विरल साहित्कारक मुच्छमे एकटा नाम अछि- डॉ शेफालिका वर्मा। शेफालिका जीक रचना सभमे पारदखशता रहल ओ जे हृदएसँ सोचैत छथि ओकरा अपन कृति उतार छैत छथि। हुनक रचनामे अंर्तमनक ध्वनि स्पष्ट सुनल आ सकैत अछि। कतहु अन्तर्द्वन्द्व नहि कतहु पूर्वाग्रह नहि। हुनक किछु कृति- विप्रलब्ध अर्थयुग स्मृति रेखा यायावरी आ भावांजलि पढ़लाक बाद हुनक जीवनक वास्तविक रूपक दर्शन कएल जा सकैत अछि। अपन रचना सभकें एकसूत्रामे सहेजि क अपन आत्मकथाक लिखलन्हि किस्त-किस्त जीवन अप्रत्याशित मुदा प्रासंगिक नाम। जीवनक कतेक रूप होइत अछि। बाल वयस्क प्रौढ़ सुख-दुख काम निष्काम यएह थिक एहि रचनाक सार। अपन करूणामयी जीवनक बून-बूनकें आंजुरमे एकत्रित क आत्मकथा लिखलन्हि।

आमुखसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ नित डायरी लिखैत छथि तें अपन किस्त-किस्त

अनुभवके वटोरि लेलनि। वाल-कालक गणित विषयक समस्या हो वा संगीत शिक्षक पंडित वाजपेयी जीक व्यवहारक मूल विश्लेषण सभ विन्दुपर पोथिक पुफजल पÂı जकाँ स्पष्ट प्रस्तुति। युवती वएसमे प्रवेश करैत काल कोनो अनचिनहार युवकक नजरि देखि क अपन ब्रह्मास्त्राक थूक फेकवाक प्रयोग करैत छलीह। ओना एहि अस्त्राक शिकार विवाहसँ पूर्व ललन बावू सेहो भेल छलाह जिनका संग ओ दाम्पत्य सूत्रामे बान्हल गेलीह। नव प्रकारक रक्षा सूत्राक विषय मे पढ़ि अकचका गेलहुँ नीक नहि लागल मुदा एहिसँ रचनाक प्रासंगिकता पर प्रश्नचिन्ह नहि लगाओल जा सकैत अछि।

शिव कुमार झा

टिल्लू- किस्त किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा समीक्षा

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका

7

शेफालिका जी

अहाँक कथा सभ मे तनाव ग्रस्त समााजक मूलभूत समस्याक रोचक वर्णन होइत अछि। युवा पीढ़ी कोना पथभ्रष्ट भ गलत बाट ध लैत अछि नारीक शोषण कोन प्रकारे होइत अछि सभ। लिपिब(केने छी अहाँ। अहाँक कथा सभकें बेर-बेर पढ़बाक मोन होइत अछि

गौरीशंकर राजहंस

भूतपूर्व संसद सदस्य

लोकसभा

आशीर्वाद

अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलन मे कवयित्री शेफालिका की प्रतिभा से परिचय पाकर मैं जितना प्रसन्न हूँ उतना ही चकित भी हूँ। इतनी छोटी अवस्था मे उन्होंने जो साहित्य मे अन्तर्दृष्टि प्राप्त की है वह उनके स्वखणम भविष्य की अग्रसूचिका है। उनके काव्यसंग्रह विप्रलब्धा का भावोत्कर्ष आज के नवयुग के कवियों के लिए अनुकरणीय है। सम्मेलन के अधिवेशन मे उन्होंने एक सर्वोत्कृष्ट सम्मान भी अखजत किया। उन्हें डा उमेश मिश्र स्मृति स्वर्णपदक से आभूषित किया गया। उनकी काव्य-प्रतिभा भविष्य मे और भी अधिक सम्मान की अधिकारिणी होगी इसमे कोई सन्देह नहीं। मेरा उन्हें हाखदक आशीर्वाद है कि वे भारतीय साहित्य और संस्कृति मे योग देकर और भी बड़े सम्मान और अलंकरण प्राप्त करें और हमारे देश और साहित्य को उन पर अभिमान हो!

डॉ राम कुमार वर्मा

साकेत

इलाहाबाद-2

24 12 78

सौ शेफालिका वर्मा केँ हम तहिए सँ जनैत छिऐन्ह जहिया ओ दस-गयारह बर्षक बालिका छलीह। हुनक पिता बंधुवर श्री ब्रजेश्वर मल्लिक यदा कदा अपन रानीघाट निवास मे निमंत्रण दैत रहैत छलाह जाहि मे षट्रस ओ नवरस दूहूक समावेश रहैत छलैक। साहित्यगोष्ठीक परिसमाप्ति मधुरेण होईत छलैक। ओहि माधुर्यमय वातावरण मे मेधाविनी कन्याक प्रतिभा-संस्कार विकसित होइत गेलैन्ह। आइ ओ एक सुकुमार शब्द - शिल्पिनी कवयित्री लेखिकाक रुप मे विख्यात छथि। हम हुनक स्मृति रेखा मे मर्म स्पखशनी भावुकता देखि शुभकामना प्रकट केने रहिऐन्ह जे ओ एक दिन मैथिलीक महादेवी रुप मे प्रसि हेतीह। आय हुनक विप्रलब्धा मे भावनाक कोमलता और करुण रसक परिपाक देखि ओ आशा पल्लवित भ गेल अछि। शेफालिका अपन नाम सार्थक करैत निरंतर शृंगरहारक माला गाँथि वाणी देवीक मुकुट पर अखपत करैत रहथु यैह आशीर्वाद दैत छियैन्ह।

हरि मोहन झा

टिकिया टोली पटना

मिति 17 12 77

श्रीमती शेफालिका वर्माक हस्ताक्षर मे मैथिलीक एकटा एहन कवयित्रीक उदय भेल अछि

जे थोड़बे काल मे साहित्य-जगत पर अपना प्रभाव जमा लेने अछि। हुनक कविता-संग्रह विप्रलब्धता कें देखबाक अवसर हमरा हस्तलेखे रूप मे भेटल छल जखन हम कोनो कवि-गोष्ठी मे सम्मिलित होयबा लेल सहरसा गेल छलहुँ। मंच परक भीड़-भाड़ एवं अस्तव्यस्तता रहितहुँ जे किछु उनटा-पुनटा क देखल आ पुनः कवयित्रीक मुँह सँ सुनल से मोन मुग्ध क लेलक। शेफालिका जीक कविता मे नीवनताक संग-संग मौलिकता अछि। समाजक बदलल परिवेश मे वर्तमान व्यक्ति केर मनोदशा भावना एवं अनुभूति जाहि प्रकारें प्रभावित भेल अछि से विप्रलब्धा क कवयित्रीक द्वारा एकदम आधुानिक संदर्भ मे वाणी पाओल अछि। से ग्रन्थक नाम विप्रलब्धा कोनो रीतिकालीन अतीतक

खाहे जेतेक विज्ञापन करओ मुदा ओर प्रत्येक रचना अपन एक-एक पांती मे युग-बोधक अदम्य स्वर झंकृत क रहल अछि। की भाषा की भाव दुहू मे शेफालिका जीक परतरि नहि! प्रेम-प्रसंग पर हुनक चुटकी व्यंग दाम्पत्य जीवन सँ प्रेरणा ग्रहण करितहुँ कतेक असंपृक्त भ जाइत अछि-से केओ मर्मी व्यक्ति सहजें बूझि सकैत अछि। काव्यक सरसता रखैत किछु एहेन बात कहि देब जे अजगुत लागय-एकाएक चौंका दिए से शेफालिका वर्मा सँ भ सकै। भरल पूरल परिवार छह सन्तान कें जन्म देनिहारि आ तें स्वास्थ्य सँ दुर्बल पेशा सँ वकील पति कँ सब तरहें सुखी करइत नगर आयुक्त क पद-भार ग्रहण करइत ओ कोना काव्य रचना क लैति छथि कोन तरहे गुनगुनयबाक लेल समय निकालि लैति छथि गृहस्थीक जाहि मरूभूमि मे कतेक कवि-कवयित्रीक रस श्रोत सूखी गेल ताही प्रपंच मे हुनक कवि हृदय कोना मात्रा जीविते नहि-सरसता एवं वचन-विदग्धता क प्रचार-प्रसार क रहल अछि से वास्तव मे अभिनन्दनीय बारम्बार वन्दनीय अछि। हुनक नाम शेफालिका क उत्प्रेरक सन्दर्भ। तखन हमर एकटा रचना शेफालिका शीर्षक प्रकाशित भेल छलैक। आ लागले कवयित्रीक जन्म होइत छनि। पिता साहित्य-प्रेमी। तें स्वाभाविके जे अपना नवजात कन्या केर नाम हमर ओहि कविता पर शेफालिका राखि देलनि। एके संग ओ कविताओं ई कन्या-दूनू सार्थक भ गेली। ता देखू-सरस्वतीक कृपा। बालिका भ गेली

कवयित्री भावुकता सँ भरल ममता सँ ओत-प्रोतऋ आ हमर ओ कविता एक जीवंत काव्य प्रतिमा मे रूपांतरित भ गेल अछि। ई केकर सौभाग्य

आरसी प्रसाद सिंह

एरौत

समस्तीपुर

9 7 75

श्रीमती शेफालिका वर्मा स्वयं साकार विप्रलब्धा छथि। भावनाक एकटा सहज सिहकी मे हिनक अश्रु विन्दु जे झहरि जाईत छनि तही मुक्ता सँ सज्जित आखर मे ई कविताक फूल अंकित करैत छथि। एकटा कलामयी मैथलानी एकटा सिसकैत कवयित्री आ एकटा भावभिजल व्यक्तित्व हमरा बंगलाक सुप्रसि(कवयित्री अरुदत्त आ तरुदत्तक झांकी भेटय लागैत अछि हिनक पांती सभ मे।

मणिपद्म

बहेड़ा

सतुआनि 14 4 78

श्रीमती शेफालिका वर्मा आधुनिक मैथिली कविताक पारिजात-पत्र पर अंकित एकटा सिन्दूरी हस्ताक्षर छथि। श्रीमती शेफालिका वर्माक परिगणना ओहि स्कूलक कलाकार मे हेतनि जकर विचार-धारा श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर प्रतिपादित करैत छथि। ई कविता सभ शेफालिका क व्यक्तित्वक निरभ्र-पारदर्शी रूप वेफँ हमरा सभक समक्ष सम्पूर्ण चारुता आ मनोज्ञताक संगे प्रस्तुत करवा मे सफल-समर्थ सि भेल अछि।

मुक्त छंद मे रचित अपन कविता मे जेना शेफालिका नव-अभिनव उपमान आ चित्रा-धर्मी

शब्द-वितान सँ अपना भावक रूप-विन्यास करवा से सफल सि(भेलीह अछि तहिना अपन गीत सभ मे सेहो ओ एक विलक्षण मार्दव आ सौकुमार्य प्रस्तुत कयलनि अछि। हुनक गीत मे नारी सुलभ भावनाक स्वच्छ-स्पफटिक अभिव्यक्ति भेल अछि। हिनक प्राणक अतलता मे सुकुमार भावक जे मधुरिमा आ कमनीयता अपन प्रकाश विकीर्ण करैत अछि तकरा तद्रूपे रमणीय शब्दावली मे प्रस्तुत करवा मे ई सहज समर्थ छथि।

ई कहब आवश्यक नइ जे मैथिली काव्यक विशाल व्यापक संसार मे अनेक कवयित्री

उत्पन्न भेलीह जिनक काव्य-सुमन सँ ई संसार सुरभित अछि मुदा श्रीमती शेफालिका वर्मा आन कवयित्री सभ सँ अपन सर्वथा एकटा पृथक् पफराक विलक्षण आ अनुपम स्थान बनौलनि अछि।

डॉ केदारनाथ लाभ

राजेन्द्र कॉलेज छपरा

10

अन्तिम साँस सँ पहिने आस रहैत छैक जे कोनो आसरा भेटय ओ साँस जे जा रहल हो तँ रुकि जाय। तहिना मैथिलीक महादेवी प्रो हरिमोहन बाबूक शब्द मे एहि सँग्रह सँ मैथिलीक डुबैत आस के ँ निश्चय बचा लेलन्हि। चि शेफाली मैथिली लेल आब केवल हस्ताक्षरे नहि महत्वपूर्ण दस्तावेज छथि। हुनक

कविता पढ़ी प्रत्येक पाठक-पाठिकाक आँखि नोरा जेतन्हि। शब्द के ँ पीड़ा के ँ माध्यम उद्घोष करब ओ पीड़ा के ँ पुनः शब्द से आनब सोझ अग्निपरीक्षा नहि। हमरा हर्ष अछि जे शेफालिका एहि परीक्षा मे सवा सोलह आना खरा भेल छथि।

डॉ सुधाकान्त मिश्र

मंत्राी

मैथिली एकेडमी - इलाहाबाद

मिति 13 7 77

अहाँक कविता सभ खास कय भावा×जलि भाव जगत् केर यात्रा आत्माक लहरि भत्तिक आलोड़न ओहि अदृश्यक दृश्य सृजन की की कहू तत्काल आओर पुनः चिरकाल अवगाहनक वस्तु थीक। हम बूझैत छी ई वास्तविक कविता थीक ,हम ओकर रस मे लुब्ध भ जाइत छी ओकर रसास्वादन करय लगैत छी। तैं जेना प्रथमहि

हमरा आकृष्ट केलक तहिना निरन्तर ई आकृष्ट करत - सेहो पीरीत अनुराग बखानिय तिल तिल नूतन होय। क्षणे क्षणे यन्नवत्यमुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। एके साँस मे पढ़बा योग्य आ साँस साँस मे अनुभव करबा योग्य जाहि सँ पाठक मीरा बनि जाय- मैं तो गोविन्द के गुराा गाऊँ। एकेक पाँति एकर भाव गुम्पफन भाव लहरिक ओहि अरूपक जे शब्दगत अहाँ आरती सजाओल रचाओल अछि तकर आरती उतारल जायतः हम केवल अपन भावावेग किछु व्यक्त कैल अछि जे शब्दगत रोकने नहि रुकि सकैत अछि। अहाँ अपन डुमरा गामक माटिक नहि भू माताक ओहिना भत्तिफ पूर्रा पूजन कैल अछि जेना अयोध्या के सीमा पार करैत काल स्वयं श्री राम मातृ भूमिक माटि अपना रथ मे राखि पुनः अयोध्याक भूमि वेफँ प्रणाम क तखन आगू दोसर राज्य वा प्रदेश

मे प्रवेश कैलन्हि

जगदीश प्र कर्ण

लहेरियासराय

22 1097

अनेक शुभकामनाओं सहित। शेफालिका जी आप साहित्य की दुनिया मे अपना अलग

अस्तित्व बनाएँ।   राजेन्द्र अवस्थी 1/6/83

आयु. शेफालिका जी

अभिमत मैथिली मे किछु दिनसँ कविता के अर्थ भए गेल अछि अव्यस्था-दुरवस्था सत्र

प्रपीड़ित-पराजित आत्माक नपुंसक चीत्कार जेना विपक्ष नेताक भाषण होवा वा अखबारक

अभाव-अभियोग स्तम्भ हो। एहना मे ई मधुगंधी बसात एक टा नबे स्वाद देलक आ एकटा भिन्न वायुमंडल मे लए गेल। एहि मे स्वर तँ ओएह अछि जे कालिदास-विद्यापति-महादेवी वर्मा सँ लए आइ धरि गुंजित होइत आएल अछिऋ किन्तु नव अछि एकर अभिव्यक्ति जे युग-युग मे बदलैत रहल अछि। एके मूल अनुभूतिकेँ अहाँ जे नाना नव-नव रूप देल अछि ताहिसँ भवभूति मन पड़ैत छथि आ हुनके नकल करैत कहि सकैत छी - एका त्रा नामरहिता गहना नुभूतिर्भिन्ना पृथक्-पृथगिवाश्रयते विवर्तान्। मैथिली कविता मे आधुनिक युगक अवतरण विलम्बसँ भेलऋ ता हिन्दी तथा अन्य भाषा

सभ मे कविताक अनेक युग बीति चुकल छल। परिणाम ई भेल जे मैथिली मे रहस्यवादी छायावादी आ रूमानी कविता नाम मात्रो लिखाएल आ चलि पड़ल प्रगतिवाद यथार्थवाद प्रयोगवाद अस्तित्ववाद। एहिसँ मैथिलीक कविताक क्षेत्रा मे जे एकटा खाधि रहि गेल छल तकरा भरबा मे शेफालिका अहाँक ई संग्रह बहुत दूर धरि सफल भेल अछि।

गोविन्द झा

साहित्यकार: अनुवादक: भाषाशास्त्री

हम 1961 क अगस्तक आरम्भ मे एम ए क परीक्षा द गाम चल अयलहुँ। परन्तु ओही

मासक अन्तिम सप्ताह मे मिथिला मिहिर मे शेफालिका मल्लिक वर्मा क नाम सँ पावस-प्रतीक्षा शीर्षक कविता प्रकाशित भेला। ई देखि मोन मे अत्यन्त प्रसन्नता भेल। पुनः अक्टूबर मे शेफालिका मल्लिक वर्मा क दोसर कविता विस्मृत पुफलडाली सेहो प्रकाशित भेलनि। तकर बाद तँ शेफालिकाजी अव्याहत रूप मे मैथिली मे अपन सर्जनात्मक क्षमताक प्रयोग कर लगलीह। हमर मित्रा ललन कुमार वर्मा शेफालिका केँ हमर आग्रहेँ मैथिली मे साहित्य-सर्जनक आग्रह कयलथिन। शेफालिका मैथिली मे रचना कर लगलीह आ आइ ओ मैथिली साहित्य-जगत मे शीर्ष पंक्ति मे आसीन छथि। ई हमरा लेल अवश्ये अविस्मरणीय बात अछि।

श्री रामदेव झा

शेफालिका क पदार्पण मैथिली साहित्यमे ओहि समयमे भेल अछि जखन मैथिली

साहित्यमे महिला-लेखक नाम पर सप्पतो खएबाक स्थिति नइ छल। अहू दृष्टिएं हिनकर सृजनक संज्ञान लेल जएबाक चाही। एहि मे संकलित कविताक विषय मुख्यतः स्त्री-जीवनक नानाविध अनुभव आ थोड़ेक समाजपरक परिस्थितिसं संब(अछि। पितृसत्तात्मक समाजमे स्त्रीक उपेक्षा नारी जातिकें निम्नतर बुझबाक प्रवृत्ति पर हिनकर कविता हंसैत अछि दहेज प्रथाकें धिक्कारैत अछि भारतक न्यायिक व्यवस्थाक विडम्बनाकें दुत्कारैत अछि। मुदा अपेक्षाकृत अपन प्रेम-कवितामे कवयित्री अइ सभ प्रसंगसं बेसी सफल आ स्पष्ट छथि। कहबाक चाही कि प्रेम-कविता मे हिनकर संवेदना बेसी घनीभूत देखाइत अछि।

देवशंकर नवीन

नेशनल बुक ट्रस्ट ए-5 ग्रीन पार्क

नई दिल्ली-110016

मधुगंधी बसात सँ कथा शिल्पक दृष्टि सँ श्रीमती शेफालिका वर्माक कथा पूर्णतः भावपूर्ण होइत अछि। हिनक पचीसो कथा मिथिला मिहिर अग्निपंग तथा आखर आदि प्रत्रिकाक माध्यम मे पाठकक समक्ष उपस्थित भय चुकल अछि।

हिनक कथा मे नारी हृदयक कोमलता औचत्यक दिगदर्शन सभ्यक रूप मे होइत छैक जाहि मे रहैत अछि गतिशील साँसक लय तथा जीवनक आकर्षण बिन्दु के प्रति हृदयक अस्पष्ट मधुर आ गुंजायमान ध्वनि। इ युग युग सें आति रहल नारी सौंदर्यक ओहि रूप कें नहि स्वीकार करैत छथि जकर लक्ष्य विलासिता के प्रदर्शन मात्रा होय छैक। एकरा संगहि ई स्त्री पुरुषक पारस्परिक आकर्षण कँ सेहो अस्वीकारैत नहि छथि वरण् ओहि आकर्षण कँ मर्यादाक सीमा रेखा मे आब(रहब स्वास्थप्रद मनैत छथि। स्त्रीक रूप मे आकखषत भ पुरुष किछ क देखेवाक अपूर्त सुन्दरताक शृंगार करैत अछि- हिनक एकटा कथाक ई पंक्ति उच्छृंखल प्रणयक प्रति विरोध प्रकट करैत अछि। एहि भौतिकवादी युगक जिनगी आ नारीक कोमल भावुक हृदयक बीच होइत संघर्ष मे इ अनेक कथाक माध्यम से जेना नोरक साँस मिथिला दूत कथा हरियर कागजक एकटा मनःस्थिति सोनामाटी आदि कथाक माध्यम मे बड़ रोचक आ माखमक ढंग से अभिव्यक्त केने छथि। हिनक कथा मे निर्वैयक्तिकता सेल्फ डिटेचमेट अंग्रेजीक लेखिका जेन ऑस्टेन जकाँ रहैत अछि।हिनक इएह प्रतिभा हिनका मैथिली एकेडमी द्वारा म म उमेश मिश्र स्मृति स्वर्ण पदक देआय 1974 क सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखिका कयैलक। हिनक एकटा कथा संग्रह शीघ्रे पाठकक समक्ष उपस्थित होयत। मैथिलीक पाठक बून्ह हिनका सँ बहुत किछ आना रखेत अछि। मैथिलीक आधुनिक लेखिका लोकनि जे काष्यक प्रत्येक विधाक माध्यम सँ अपन अपन प्रतिभाक परिचय देलनि एहि श्रेणी मे श्रीमती शेफालिका वर्मा श्रीमती गौरी मिश्र डॉ श्रीमती इलरानी।

मिथिला मिहिर

ले नीरजा रेणु

रविवार 7 दिसंबर 1965

13

मूलतः कवयित्री साहित्यकार शेफालिका वर्मा मैथिली कथा साहित्य मे एकटा न¯ह

बिसरयवाली मजगुत स्तम्भ छथि। तँ मैहिला कथाकारक रूप मे ओ अग्रणी लेखिका छथि हुनकर कथा पर कल्पना अरिपन रहैत छन्हि। छोट-छोट वाक्य सुन्दर भाव-बन्ध आ कोमल कोइलीक स्वर सन प्रवाह। शेफालिका वर्माक कथा मे प्रेम केन्द्रविन्दु मे रहत अछि। ओ तीस वर्ष सँ कथा लीखि रहल छथि। हुनकर कथा मे तीस वर्षक अवधि मे जीबैत जन्मैत युवा होइत प्रौढ़ होइत प्रेमक बानगी छन्हि। सफल प्रेमक उल्लास असफल प्रेमक हाहाकार हेतु हेतु मद्भूत प्रेमक भकजोगनी सँ चोन्हियाइत नीरस जिनगीक आस सभटा छन्हि शेफालिका वर्माक कथा मे। पुफलपाँकी बला प्रदेशक

महीन रसगर माटि कें जौं न¯ह बिसरबाक होअय तँ शेफालिका वर्माक कथा सदति सँग राखी। श्रीमती शेफालिका वर्मा प्रथम कथा झहरैत नोरः बिजुकैत डोर 1965 मे वैदेही मे

प्रकाशित भेल। हिनक प्रारंभिक कथा सभ जेना नोरक एकटा निसाँस अछि। हिनक पँफसड़ीक दू छोड़ कथा मे स्त्री जीवनक पराधीनता देखाओल गेल अछि। भारतीय समाज मे स्त्रीक स्थान सदैव नीचेँ रहल। अपन अस्तित्व रक्षाक लेल हुनका पति पति ओ पुत्राक अधीनस्थ रहय पड़ैत छन्हि।

पिताक इच्छाक विरोध नहि कय शैली सौम्य सँ संबंध विच्छेद क लैत छथि। माय बेटीक हृदय कें जनितो पतिक भय सँ मौन भ जायइत छैक। नारीक सामाजिक स्थितिक आकलने एहि कथा मे भेल अछि। लेखिका अपन नायिकाक पक्ष लैत कहैत छथि माय-बाप एक दिस तँ बेटी कें संपूर्ण पति भक्तिक उपदेश दैत छथि आ दोसर दिस बेटीक प्रदर्शनी लगाए ओकर बर स्वयं तकैत छथि। फँसरीक दूनू छोर माय बापाक हाथ मे अछि आ गरदनि पँफसल अछि कुमारि कन्याक। आ फँसरीक वैह दूनू छोर पतिक हाथि आबि जाइछ। एकान्त सेवा संपूर्ण समर्पणाक बादो पतिक घर मे ओ अन्नक बोर सन राखल रहैछ आ पति आन जान घर मे मुँह दैत अछि। श्रीमती वर्माक अन्य कथा अर्थयुग मे एकटा जूनियर इंजीनियर द्वारा अनैतिक ढंगे द्रव्योपार्जन कय सुख शांति कें तिलांजलि देबाक कथा अछि। आलोक बाबूक पत्नी साड़ी गहना आ सुख सुविधाक सभ वस्तुक उभोग करैत छथि मुदा पति सुख सँ वंचित होइत छथि। मानवमूल्यक

उपहास करैत आलोक बाबू कहैत छथि- मानव मूल्य हा-हा-हा। हे उदय मानव मूल्य मात्रा टाका रहि गेल अछि। टाका मे किछु शक्ति छैक तखन ने दोस्त टाकाहि धर्मः टाकाहि धर्मः टाकाहि स्वर्ग क युग सरिपहु आबि गेल अछि।

उषा किरण खाँ

पटना

शेफालिका जी

निष्ठा को जीवन का धर्म रखें। सफल एवं सुखी जीवन की कामना के साथ।

शीला झुनझुनवाला 01 06 83

समालोचनात्मक खुंडी

शेफालिका जी !

अहाँक ‘‘उपेक्षित’’ कविता हमरा पर टोना कय देलक अछि। हम तै बिसरिये गेल रही जे हमरो बेडिंग अछि। ई कविता पढ़ि काल्हिये सँ हम बेडिंग ताकि रहत छी आ भेटि नहि रहल अछि। भेटिते सूचना देब। अहींक शब्द-एहि समालोचनाक फ्खुंडीय् आदरणीय वकील साहबे कें देखेबन्हि जे कोना अपनेक निश्छल साहित्यिक हृदय-स्नेह स्निग्ध्-वेदना विह्वल-असीम सँ संबंध् जोड़ने कोमलतम भावना हमरा ऊपर निखिलेशो सँ बेशी हावी भै गेल - ई बात अहाँ सँ बेसी वकील साहेब बुझथिन्ह कियेक त बार आ बेन्च भेने हमरा लोकनि समानध्र्मी छी - दियाद-गोतिया छी। अनंत वर्ष धरि अपनेक लेखनी साहित्य-ध्रा पर शेफालिकाक वृष्टि करय एतबेक मात्रा हमर शुभकामना।

अस्तु

मर्यादा पुरुषोत्तम कें नाक मे बड़दवला

स्व रामनाथ झा

डी सी एल आर सहरसा

शेफालिका वर्मा के काव्य का मूल स्वर यही वेदना है जो काव्य का मूल उत्स होता है।

वेदना कुंठा नहीं दृष्टि है। वेदना जब दृष्टि बन जाती है तभी ससीम से असीम की ओर

महाभिनिष्क्रमण होता और साहित्य मे शाश्वत सत्य उद्घाटित होता है। प्रेम की वेदना जब कृष्ण की बाँसुरी की रागिनी बन जाती है तभी राधा की मूर्च्छना मीरा का भजन बन पाती है और इस मूर्च्छना और रागिनी का संबंध सूत्रा है अटूट विश्वास। महादेवी जी अपने परिचय मे कहती हैं- मैं नीर भी दुख की बदली और

शेफालिका जी अपना परिचय देती हैं- सांध्य गगन की मैं अकेली तारिका। कवि भी सामाजिक प्राणी होता है-युग की चेतना के शीर्ष बिन्दु पर का जीव। अतः देश काल परिवेश और परिस्थति से आँखें मून्द लेना उन्हें झुठला देना सदा सम्भव नहीं होता। यदा-कदा ही सही सामाजिक विसंगतियों कुरूपताओं और बदलते जीवन-मूल्यों के प्रति दृष्टिक्षेप कवयित्री की सामाजिक चेतना के प्रति जागरूकता का प्रमणा है। इस युग की सबसे बड़ी विडंबना है- विचारों की संकीर्णता और आचरण और अनैतिकता। कभी कवि बच्चन ने गाया था-

युग बदलेगा किन्तु न जीवन

किन्तु आज- आदमी।

अब आदमी नहीं रहा/उसमे सोचने-समझने की सारी शक्तियाँ/अन्तर्मुखी

हो गई हैं/उसकी सारी संवेदनाएँ/सिर्पफ अपने लिए रह गई हैं/ वह एक सुसंधहीन फूल की तरह है/जो

अपने ही खिलने मे मस्त है।

शेफालिका जी की उपर्युक्त पंक्तियाँ सोसलिज़म और कॉमनिज़म पर सेल्पिफज़म की

करारी चोट है।

कवयित्री डॉ शेफालिका वर्मा की काव्यानुभूति का पफलक बड़ा ही विस्तृत है। वैयक्तिक

पीड़ा और सामाजिक उत्पीड़न के प्रति उनकी सजगता को देखते हुए हिन्दी-जगत उनसे बहुत-कुछ

अधिक की आशा करता है।

रामेन्द्र कुमार यादव रवि

सांसद कुलपति

बी एन मंडल वि वि मधेपुरा।

शेफालिका

तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना जाग तुझको दूर जाना

महादेवी वर्मा 78

Presented with greatest of love to my dearest damsel darling photogenic wife

in the last days of 1983 this book Rajyog is addition to Raj

-Lalan Verma, 24 12 83

16

शेफालिका हमर दृष्टि मे

नारीक रूप मे शेफालिका शक्ति स्वरूपा सेहो छथि जे महिषासुर रूपी दहेज दानव नारी शोषनक प्रतीक शुम्भ निशुम्भ आ स्त्राी समाज के गर्त मे राखवाक प्रयास करै वाला रक्तबीज के बध करवाक संकल्प नेने छथि आ निर्भीक भ एही लेल सतत प्रयन्तशील रहैत छथि। हुनक क्रांतिकारी हृदय स्यात हुनक जन्म दिन 9aug (quit india movement)भारत छोड़ो आंदोलन से प्रेरित छैक।

एक दिसि प्रेम करुणा आ दया से सहजे पसिजय वाली शेफालिका आ दोसर दिसि क्रांतिकारी शेफालिका दुनू व्यक्तित्व क रस्साकसी मे बढ़ैत साहित्यधर्मी शेफालिका स्वतः एक अद्भुद व्यक्तित्व स्वामिनी बनि गेल छथि जे बुझवा मे कखनहु काल हम सेहो अपना के अक्षम पबैत छी ललन ठीके छैक हिनकर कहब हमरा एकदम कर्मकांड मे विश्वास नै अछि। मृत्यु उपरांत जखन हम बाबूजी बड़का बाबूजी काकाजी सबहक श्रा(कर्म देखलौं पंडित सबहक हाहारोह हुनका छाता देवैक तखन ने वर्षा जेता कतेक तरहक पलंग सेज मच्छरदानी आदि आदि जे देवैक से हुनका स्वर्ग मे भेटतैक! परुहार मे डोमि छल पाइक अभाव मे इलाज माय के नहि करा सकल मुदा जमीन बेचि हुनक श्रा(कइ भोज भात केलक एहि सब से हमरा मोने बड वितृष्णा भ गेल हम हिनका कहियेंक हमरा मरैक बाद अहाँ किछ नै करब बस भिखमंगा सब के खुआ देवैक

ई हँसैत बजैत छलाह बाप रे भिखमंगा हम ते बिकैये जायब हमरा तखन तामस उठे बाद मे बहुत सोची विचैर हिनका से सत लेलों एक सत दुई सत तीन सत 1 आर्य समाज रीति से हमर संस्कार करब-तीन दिन मे खतम 2 केओ केश नहि कटाबे 3 बरखी नै होई सब काज 3 दिन मे पूरा भ जाय तखन ओ जाहि दृष्टि से हमरा तकलैथ जेना हमरा चीन्हि रहल होइथ जेना अपना दे सोचैत हम रहब की नहि रहब किन्तु हम आय धरि हुनक ओ दृष्टि आ तकर बाद मौन मूक हमरा चुपचाप अपन करेजा से सटौने रहलैथ कतेक काल धरि आय जखन हम अगसर छी ते जेना ओ मौन मुखर भ सब किछ बाजि रहल अछि 26 मई 2008 कें हमर आत्मकथा किस्त किस्त जीवनक विमोचन-पटनाक विद्यापति भवन मे मुख्य अतिथि जस्टिस मृदुला मिश्रा द्वारा भेल छल! अध्यक्षता जीवकान्त केने छलाह। विमोचन समारोह क समस्त आयोजन शरदिन्दु चौधरी मधुकांत झा एवं पंचानन मिश्रक सहयोग सं केने छलैथ। सोचैत नहि छलौं जे ई समारोह एतेक भव्य होयत। हाल मे लोग खचाखच भरल छल। मंच पर मृदुला जी जीवकांत जीक

संगे विजय नारायण मिश्रा राजमोहन झा मधुकान्त जी शरदिन्दु आदि सभ उपस्थित रहैथ। जस्टिस मृदुला मिश्रा जखन बजलीह-ई पुस्तक हम पढ़ लागलौं तँ हमरा लागल हम अपने जीवन पढ़ि रहल छी- सहरसा मे हमर स्कूली जीवन बीतल अछि- हम घरक सभ काज हाथ मे पोथी नेने करैत रहलौं- हमर अंगुर बुक मार्क बनि गेल- आँखि नहि हटैत छल पोथी पर सँ।

शेफालिका जी कें हम पहिने सँ जनैत छलहुँ किन्तु ई नहि जनैत छलौं जे ओ हमर श्वसुर स्व सतीश चन्द्र झा चीफ जस्टिसक संगी ब्रजेश्वर मल्लिकक बेटी छथि। एतेक नीक आ माखमक ई पोथी छैक जकर बड़ाई लेल हमरा शब्द नहि भेटैत अछि- आ हुनक वक्तव्य क एक एक पाती आ हमरा स्नेह-स्नात करैत गेल हमर पुस्तके नहि जेना हम स्वयं सार्थक भ गेलहुँ- मुदा हमर एहि सार्थकताक सुख भोग लेल नहि तँ पापा छलाह नहिते वर्मा जी अपने-रामानंद रमण बासुकी नाथ झा सभ एहि कृतित्वक परिचय देलनि किन्तु पंचानन मिश्र जखन व्यक्तित्व आ कृतित्व पर बाज लगलाह तँ सहरसा मे जखन हम नगर आयुक्त छलौं ओहि प्रसंगक किछ गप सुनाय हमरा चमत्कृत क गेलाह। मोहन भारद्वाज कहलनि- आत्मकथाक अंत नहि- सरिपों हुनक एहि बात पर आत्मकथा किस्त-किस्तक दोसर खंड पत्र मे छिरिया रहल छी।

उषा किरण खाँ शीला चौधरी प्रेमलता प्रेम सरिता झा आदि महिला सशक्तिकरणक बसात सेहो संगे छल- वास्तव मे आत्मकथा किस्त किस्त मात्रा आप बीती नहि जीवनक महत्व पूर्ण घटना सभक उल्लेखे नहि अछि मुदा कोनो घटना कें जीवन-क्रम मे कोन उन्माद मे कोन आवेग मे जीवलहुँ एकर लेखा जोखा सेहो अछि। किस्त किस्त मे हम अपन मानस दृष्टि अपन भाव बोध कें व्यक्त केने छी- लकीरक पफकीर जकाँ आत्मकथा कें रूप नहि देलौं नहि तँ आत्मकथा कें पारम्परिक तटबंध मे बान्हने छी। भ सकैत छैक केओ एकरा उपन्यास बुझैथ केओ एकटा भावुक नारीक संवेदनशील हृदय नगरीक दर्शन ई तँ पाठक जनैथ आय काल्हि जमाना एतेक तीव्र गति सँ भागि रहल छैक जे ककरो लेल ककरो पुफरसत नहि छैक। रिस्ता नाताक संबंध टूटनाय-न्यूक्लियर परिवारक सर्जन-ताहु मे पटान नहि-हम देखलौं एकर एकटा बड़ पैघ कारण अछि सहिष्णुताक

अभाव। खास कय आजुक लड़की मे स्त्राी मे सहवाक शक्ति नहि छैक। नीक बेजा किछ कहु तुरत जबाब द देत। तखन हम चाहलौं अपन जीवन लिखवा लेल-यदि ओ पढ़ि सकैथ- बुझि सकैथ आत्मकथाक पांडुलिपि तैयार करैत काल कतेक तरहक मानसिक व्यवधान आयल आ तखन हम पंचानन जी कें मोन पाड़लौं। ओ सदिखन हमरा प्रेरित करैत रहलाह-इजोत बाँटैत रहलाह-

आदरणीया

अहाँ स्वस्थ-प्रसन्न होएब करब ई अटूट विश्वास एहि ओजह सँ अछि जे मैथिली एखन

अपना आकांक्षा अहाँ लग अवशेष रखनहि अछि मैथिली कँ कोनहुँ लेखिकाक आत्मकथा सँ श्रीसम्पन्न होएवाक पहिल अनुभूतिक प्रतीक्षा थिकैक आ मैथिल समाज कँ एहन नारी रत्नक मूल्यांकन करब बाँकी अछि जकर

योगदान परिवार समाज आ राष्ट्र लेल एकहि काल-खण्ड मे पारस्परिक महत्ता रखैत अछि। पछिला मास जमशेदपुरक सेमिनार मे बमुश्किल दस मिनटक गप भेल आ ताहिसँ पहिने 1993 मे राँचीक मैथिली सम्मेलन मे भेंट भेल छल आ एकबेर पटनाक मिथिला मिहिर कार्यालय मे कुशलक्षेम धरि। मुदा बौद्धिक स्तर पर अहाँक कथा-कविताक पाठकीय स्तर पर अहाँक समाज सेवाक प्रत्यक्षदर्शीक स्तर पर हम कम सँ कम साढ़े तीन दशक सँ अधिके अवधि जुड़ल रहलहुँ अछि आगहुँ जुड़ल रही से इच्छा ते अछिये। मिहिर अहाँकेँ कथा संसार मे प्रवेश करबाक

अवसर देने छल। पछाति एकटा आकास हमर पाठकीयता केँ संपुष्ट कयने रहय। ओना मिहिरक पाठीकीय मंच मे कैक हमर अभिमत अहाँक कथा प्रसंग छपल अछि से ने तँ क¯टग अछि आ ने स्मरण। मुदा मोन अछि अगवे कथाक पात्राक संवेदनाक देखार होइत स्पर्श अपन संस्कृति-परिवेशक सम्मानित करैत कथाकारक दृष्टि आ पछिला शताब्दीक सातम दशक धरि अपन कुंठा वेदना आ शोषण केँ खूँट मे बन्हैत मानसिकता।

मोन पड़ैत अछि 1976 । कथा लेखिका गौरी मिश्रक सम्पादकत्व मे साहित्य अकादेमी सँ

प्रकाशित कथा संग्रह पर उठल बबंडर आ मिहिरक विचार मंच छल अखाड़ा। अहाँक कथा चयन केँ हमहूँ ताखकक निर्णय मानने रही। हमरा 1965-70 ई क सहरसा मोन पड़ैत अछि। जिला मुख्यालय रहितो एकदम गमैया वातावरण आ ताहि झांपल परिवेशक बीच सहरसा नगरपालिका आयुक्तक अहाँक दस वर्षीय समाज सेवा। आ समाजक प्रति दायित्व पालनक व्यस्तमतम अवधिमे तँ अहाँ मैथिलीक कथा ओ कविताक मूलाधार केँ लेखिकाक स्तर पर बलिष्ठ बनौलहुँ। स्वराज्यक दू अढ़ाय दशकक उपरान्त जँ निष्पक्ष अनुशीलन होअय तँ कथा ओ काव्य दुनू विधा मे अहाँ छोड़ि क्यो नजरि नहि अवैत अछि। गौरी मिश्र चित्रालेखा देवी लीली रे आदि अगवे कथा लिखैत रहथि। जाहि नीरूजा रेणु केँ साहित्य अकादेमी पछाति पुरस्कृत कयलकन्हि तनिक तँ जन्मो नहि भेल छल। कखनहुँ शरदिन्दु चौधरी सम्पादक समय-सालक कहब 26 03 07/दूरभाष सटीक लगैछ जे अहाँक योगदानक तटस्थ मूल्यांकन लेल काव्य कृति विप्रलब्धा भावांजलि एकटा आकास कथा संग्रह नागफाँस उपन्यास यायावरी यात्रा वृतांत स्मृति रेखा संस्मरण क अतिरिक्त शीघ्र प्रकाश्य अर्थयुग अनाम अनुभूति रजनीगंधा आ बान्ह टुटि गेलैक अतिरिक्त कैक संग्रह मे स्थान पओने रचना पत्रिका मे छिड़िआइल कथा कविता केँ सेहो सोझा पथार लगबय पड़तैक। 1974 मे अहाँक स्मृति-रेखा संस्मरण पोथी बहराएल। हम मैथिलीक संस्मरण विधा मे ओहि काल खण्ड मे लेखिका लोकनिक पोथी तकैत छियन्हि आर कोन-कोन कृति अछि जेना कि पछिला खेप अहाँ कहलहुँ किस्त-किस्त मे शीघ्र अहाँक आत्मकथा प्रकाशित होमय जा रहल अछि। एकर प्रकाशन मैथिली केँ नवीनतम उपलब्धि हैत। कोनहुँ लेखिकाक आत्मकथा पहिले-पहिले मैथिली देखि पाओत। अगिला खाढ़ी अहाँक संघर्ष समर्पण आ दृष्टि सँ नव भूमिका स्थिर क सकत। 1993 मे हमर प्रधान सम्पादकत्व मे हजारीबाग सँ पहिल टेवलायड मैथिली मासिक बागमती दोमोदर टाइम्स प्रकाशित होमय लगल। दोसरहि अंक मे मैथिलीक महदेवी: शेफालिका वर्मा अग्रलेख छपल। मौखिक आ लिखित विरोध भेल की गलत छपल छल हम मानैत छी महादेवी

कोटिक गीतमयता अहाँक काव्य मे नहि अछि बिम्ब आ प्रतीकक विशाल परिधि अहाँ नहि अखजत क सकलहुँ मुदा महादेवी तँ संवेदनात्मकता हृद्यविह्वलता आ स्पर्शजन्यता लेल प्रसिद्धि पओलनि। अहाँक काव्य संसार तँ इएह अनुभूतिजन्यता कें प्लावित कयने अछि।मैथिली काव्य मंचक कवयित्रीक रूप मे अहाँ छोड़ि पर्याय के बनल अपन प्रान्ते नहि अन्यत्राहुँ अहींने मैथिलीक प्रति आकर्षण जगौलहुँ जतय धरि हमरा बूझल अछि काउबेल्ट क एहि पूर्वी भाग मे स्त्रिागणक सामान्य आयु 69

सँ 73 मानल गेल अछि। अपन जीवनक साढ़े छः दशक बीतैबतो मैथिली लेल अहाँक ऊर्जा उत्साह आ निष्ठा देखि हमरा झुम्पा लाहिरी नेमसेकक - लेखिका मोन पड़ैत छथि।

बंगला लेखिका तसलीमा नसरीनक हेवनि मे एक साक्षात्कार पढ़लहुँ यूरोपीयन देशक

नागरिकता एही कारणे नहि लेलीह जे अपन भाषा बजनिहार क्यों नहि भेटैत छलन्हि आन भाषा मे लिखवाक अन्तरात्मा अनुमति नहि दैत छन्हि। अहूँ आइ सहरसा छोड़ि पटना-दिल्ली रहय लागल हुँ। भगवती अहाँ कें हिन्दीयो मे यशस्वी बनवाक अर्हता प्रदान कयने थिकीक मुदा अहाँ आइयो तसलीमा बनल छी जकर प्रमाण अछि शीघ्र प्रकाश्य किस्त-किस्त मे। मिथिला सभ दिन मीमांसक भूमि रहल अछि। एतुका साहित्येत्ता बुद्धिजीवी आ पाठकक मनन-चिन्तन मध्य अहाँक चारि दशकक मैथिली सेवा स्थायी परिचित देतनि साहित्यानुभूतिक नवीनता।

सादर।

पंचानन मिश्र

(क्रमसँ दोसर खेप अगिला अंकमे)

२.

बिपिन झा

चहकैत चौक आ कनैत दलान

संक्रमण काल सँ गुजरैत अपन मिथिलांचल आइ अपन क्षीण होइत मर्यादा, सभ्यता एवं संस्कृति कऽ कारण चिन्ताग्रस्त अछि। समस्त विवेकशील बुद्धिजीवी स्तब्ध छथि। मैथिल संस्कार अन्दरे अन्दर विलाप कय रहल

अछि! एकर पैघ उदाहरण थीक चहकैत चौक, हँसैत मधुशाला आ कनैत दलान।

कहियो मिथिला कऽ गामक दलान प्रवुद्ध व अनुभवी बुजुर्ग, उद्यमशील आ विवेकी युवा, संस्कारी किशोर आ बच्चा सभ सँ शोभायमान रहैत छल। आँगन मँ गोसाउनिक घर एकटा तीर्थवत् होइत छल। चौक चौराहा सक्रियता एवं मेलमिलापक अड्डा होइत छलै मुदा आई ? नगर पलायन के कारण दलान सुन्न भय गेल। जे व्यक्ति वचलो छथि से दलान क वजाय अन्तःपुर में व्यस्त रहैत छथि। प्रवुद्ध व्यक्ति गाम में अल्पसंख्यक मय गेलाह। प्रत्येक चाँक पर एकटा विदेशी मधुशाला खूजि गेल जतय पैघघरक बच्चा व्यक्ति सम वच्चन साहेबक ग्रन्थक अनुकरण कय रहल छथि। संगहि इशारा में किछु पड़िया वला चीज संहो सूंघि रहल छथि। इ सर्वत्र व्याप्त वौद्धिक आचार संबंधी प्रदूषण ग्राम समाज के कलुषित करैत-करैत मिथिलाचलक आत्मा नष्ट करवाक उद्यत अछि। आई सबटा बौद्धिक व आचारवान व्यक्ति ग्राम समाज में घुटन महसूस कय रहल छथि एकर जिम्मेदार के छथि ? शायद समस्त समाज।

एहि महामारी कऽ उन्मूलनार्थ समस्त मैथिल समाज के आगा आबय पड़त स्थिति अखनो नियंत्रण में अछि। यदि प्रयास कयल जाय तखनि सब किछु संभव अछि अन्यथा सब सत्यानाशक इंतजार में तैयार रही इ भविष्यक चेतावनी अछि।

आशा अछि से समस्त बौद्धिक समाज एहि समस्या पर चिन्तन करताह आ किछु सामूहिक प्रयासो अवश्य होयत।

१.**डा. राजेन्द्र विमल-** साहित्य सङ्गम



गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर ताल २. **प्रो. वीणा ठाकुर-** जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा- प्रो. वीणा ठाकुर

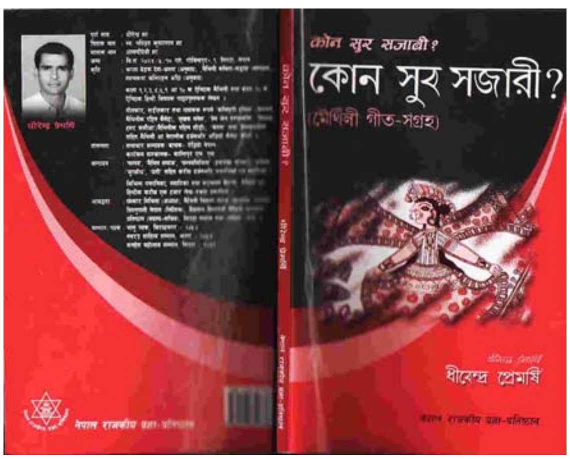
३. - जगदीश प्रसाद मंडल- **कथाक शेष- अर्द्धांगिनी** ४. - जगदीश प्रसाद मंडल- कथा- **अतहतह**

१

–डा. राजेन्द्र विमल

साहित्य सङ्गम

गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर ताल



गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षि नेपालीय मैथिली गीत संसारक प्रायः सभसँ मूल्यवान उपलब्धि थिकाह– विविधतामय विषयक दृष्टिएँ, संख्यात्मकताक दृष्टिएँ, उच्च काव्यमूल्यक दृष्टिएँ, विविध शिल्प प्रयोगक दृष्टिएँ, विविध अलङ्कार, गुण, रस, भाषिक प्रयोगक दृष्टिएँ, शैलीगत विविधताक दृष्टिएँ, सामाजिक सचेतताक दृष्टिएँ आ सभसँ बढ़िकऽ मस्तिष्क आ हृदयक सुन्दर सहयात्राक दृष्टिएँ । हिनक गीतसङ्ग्रह 'कोन सुर सजाबी ?' क गीतसभमे प्रेमतत्व, व्यङ्ग्यतत्व, वेदनातत्व, नवरसतत्व, उद्बोधनतत्व, आख्यायिका तत्व, सामाजिक तत्व, धार्मिक तत्व, राजनीतिक तत्व, सांस्कृतिक तत्व आदि विविध तत्व मिलाकऽ जे कलात्मक रूपाकृति गढ़ल गेल अछि से विलक्षण थिक । हमरा आन गीतकारक किछु गीतक किछु पंक्ति भीतरधरि छूबैत अछि, मुदा धीरेन्द्रक बहुतो गीतक प्रायः सभ पंक्ति मर्मकेँ बेधि जाइत अछि । जीवन जगतक यथार्थ शक्ति आ सम्भावनाक प्रति अदम्य निष्ठा एवं सजगतासँ पोनगल आन्तरिक आ वाह्य सौन्दर्य जखन सुरमे सजैत अछि तँ जेना चेतनाक लहरिकेँ लयबद्ध कऽ लैत अछि । जीवनक कियारीमे फुलाइछ सत्य आ सौन्दर्यक फूल जे प्रत्येक रूप रङ्गमे मङ्गलकारी थिक । परिवेशक यथार्थबोध हेतु आवश्यक वैज्ञानिक दृष्टिक विरोधमे ठाढ़ भेल कुण्ठित सौन्दर्यबोधसँ बेसी तकर साहचर्यमे परिमार्जित आ विकसित सौन्दर्य चेतनाक कारणेँ गीतकारक सहज

प्रेमोच्छ्वासो कोनो अदृश्य चन्द्रलोकसँ आएल नहि, हृदय किंवा धरतीसँ उपजल लगैछ ।
कविमे सौन्दर्य चेतनाक इन्द्रधनुषी रङ्ग यत्र तत्र सर्वत्र छलकि उठल अछि से सत्य, मुदा सौन्दर्यक रसग्राह्यता मिथिलाक धरती आ संस्कृतिक प्रति सहज संस्कारक रूपमे विकसित मधुर अनुरागसँ अभिप्रेरित अछि । बहुजन रञ्जनक सङ्ग बहुजन मङ्गलक भाव हिनक अनेक गीतक संवेदनाकेँ समसामयिक आ सतत गतिशील सत्यक संवाहक बना देने अछि, मुदा तौँ ओ देश कालक अन्तर्सत्यसँ आबद्ध अछि । स्पष्ट कही तँ हिनक समकालीनता परिवेशजन्य अन्तरङ्ग क्षणक अभिव्यक्ति थिक । हिनक भाषा, भङ्गिमा, भावबोध, छन्द, लयमे एतेक नवीनता आ ताजापन एहि दोआरे बूझि पड़ैछ जे ओ सद्यःजात कमलक फूलसन टटका अछि, जकर जड़ि भने परम्परामे होइक, मुदा प्रस्फुटन नितान्त मौलिक छैक ।
धीरेन्द्र प्रेमर्षिक गीतसभकेँ निम्नलिखित कोटिमे वर्गीकृत कएल जा सकैछ– १) श्रम, सङ्घर्ष, आस्थाक गीत २) मानवीय सम्बन्ध आ संवेदनाक गीत ३) सौन्दर्य चेतना आ प्रीतिक गीत ४) चिन्तनपरक दार्शनिक गीत ५) माटिपानि आ सामाजिक राजनीतिक सचेतताक गीत ।
१. श्रम, सङ्घर्ष, आ आस्थाक गीत : जीवनक अरण्यमे काँट छैक तँ फूलो छैक, पतझड़ छैक तँ बसन्तो छैक, ग्रीष्म प्रदाह छैक तँ छाहरिक शीतलतो छैक । जीवनकेँ स्वीकार करबाक लेल ओकर सम्पूर्ण यथार्थकेँ स्वीकार कऽ उत्साहक सङ्ग जीबऽ पड़तैक । विडम्बनापूर्ण जीवनक ई स्वीकृति आ जिजीविषा गीतकारकेँ काँटक बीच फूल खोजबाक प्रेरणा आ उत्साह दैत छन्हि–

चारि दिनक ई जीवन धाम
हरखक पल ताहूमे बाम
कलिका खोँटिकऽ फेकैत हम
ताकि रहल छी फूलक गाम

ई धरती, एकर उत्सव आ शोक, स्मिति अश्रु, जय पराजय प्राणवन्तताक प्रमाण थिकै, तँ कोनो कल्पना कुहरमे भटकैत सत्य सूर्यक खोज करब बतहपनी छैक । सृष्टिक गर्भसँ जनमल सत्य मात्र गीतकारकेँ स्वीकार छन्हि–

सत्यक जननी सृष्टि तमाम
कर्मक सिञ्चन हम्मर काम.....

प्रेमर्षि श्रमहीन जीवनकेँ जिनगीक भ्रम मानैत छथि आ शोषणपर आधारित जीवन व्यवस्थाक विरुद्ध छाती तानि ठाढ़ भऽ जाइत छथि । शोषणक विरुद्ध केहन घृणा छन्हि प्रेमर्षिक मोनमे–

गामक गाम उजाड़ि बनाओल
महल अटारी नइ चाही
देशक खून आ गरीबक आहसँ
भरल बखाड़ी नइ चाही
लाखोक धूर निलामीक जनमल
एक जिमदारी नइ चाही....."

एहन अवस्थामे ओ कहैत छथि– हमरा अपन गरीबियो बरदान लगैए.....
गरीबक जिनगीक केहन मार्मिक शब्दचित्र प्रस्तुत कएने छथि प्रेमर्षि–

पीठकेँ झँपैत छी तँ माथा उघार
माथकेँ झँपैत छी तँ पीठहि उघार
चूनि चूनि खढ़पात खोँता बनाबी
चुबिते रहि जाए तैयो जिनगीक चार......

२. मानवीय सम्बन्ध आ संवेदनाक गीत : मनुक्ख अनेक स्तरपर एक दोसराक रागतन्तुसँ बन्हाएल अछि । नितान्त वैयक्तिक स्तरपर, पारिवारिक स्तरपर, सामाजिक स्तरपर, राष्ट्रिय स्तरपर, अन्तर्राष्ट्रिय स्तरपर, ब्रह्माण्डीय स्तरपर । राग विरागक ई खेल चिरन्तन थिक, सार्वभौम थिक । जाधरि मनुक्ख जीवित अछि, नेह छोहक एहि रेशमी बन्धनकेँ तोड़ि फेकब ओकरा हेतु दुःसाध्य थिकै । एहि रागात्मकताकेँ प्रेमर्षि जीवनक स्पन्दन, प्राणज्योति, अपरिहार्य अङ्ग रङ्ग मानैत छथि–

बीस बरखा टेरलिङिया कुरता
तैपर साटल चेफरी छै
शीतलहरीमे ओक्कर ओढ़ना
पोतीक फेकल केथरी छै
सोना गढ़िकऽ इएह फल पौलक
अपने बनि गेल ताम सन
वाह बुढ़बा तैयो बाजैए
हम्मर बेटा राम सन....

अद्वितीय !! ई सम्बन्ध बन्ध अपराजेय आ अमर रहए, भगवान !!

३. सौन्दर्य चेतना आ प्रीतिक गीत : कोनो राजनीतिक वादक झण्डातर बैसि गीतकेँ विज्ञापन वा प्रचारक माध्यम बनबैत अथवा अनुभवशून्य विषयपर शब्दक कलाबाजी देखबैत जीवानुभव वा जीवनसत्यक दिससँ शुतुरमुर्गी शैलीमे आँखि मुननिहार गीतकार नहि थिकाह प्रेमर्षि । तँ ओजस्वी भावनाक हथौड़ासँ शब्दकेँ लोहारजकाँ पीटि पीटि सङ्घर्षक हेतु फरसा आ गड़ाँस बनबैत प्रेमर्षि जखन छेनीसँ पदावलीकेँ तरासैत सोनारजकाँ रचि रचिकऽ पेरयसीक हेतु कोमल कण्ठहार बनबैत छथि तँ हमरा कृष्णक कुरुक्षेत्रक योद्धारूप आ वृन्दावनक रासलीला रचबैत प्रेमीरूप एक्कहिबेर मोन पड़ि जाइत अछि ।

श्रृङ्गारक दुनू भेद– संयोग आ विप्रलम्भक मोहक चित्रण हिनक गीतमे भेटैत अछि–

प्रेमक घटसँ जते निकाली
जलक हुअए ने अन्त
हमर अहाँकेर प्रेमक चिड़िया
भऽ गेल बेस उड़न्त.......

४. चिन्तनपरक किंवा दार्शनिक मुद्राक गीत : चिन्तन जखन भावनाक तलपर आबि गाबऽ लगैछ तँ उच्च कोटिक गीतक जन्म होइत छैक । प्रेमर्षिक किछु गीतमे चिन्तनक जे चिनगी दहकैत अछि से जिनगीक चरम सत्यधरि लऽ जाइत अछि–

जीवन थिक मेला दू दिनमा
ई ईर्ष्या द्वेष किए प्राणी

आखिरमे देह गलिए जएतह
बस रहि जएतह अमृत वाणी.....
वन वन बौआइत अछि
कस्तूरीक टोहमे मृग जहिना
सदिखन औनाइत अछि
माया आ मोहमे मन तहिना.....

५. माटि पानि आ सामाजिक राजनीतिक सचेतताक गीत : धीरेन्द्र प्रेमर्षिक गीतमे जयदेवक कृत्रिम कलात्मकता नहि, विद्यापति गीतक सहज कलामय तन्मयता अछि । तैँ ई गीतसभ मिथिलाक सुगन्धसँ महमह करैत अछि । मिथिलाकेर व्यथा दहेज, नवका साल पुरने हाल, जनतन्त्रक बहाली, जय हो पेट धरमवीर, हे देखियौ हमर समाजमे, ओ बमभोला, सत्ताक माछ, देशी मुर्गा बिलाइती बोली, जागरण गीत एहि कोटिक गीत थिक । एहि गीतसभमे अत्यन्त तीक्ष्ण व्यङ्ग्य अछि–

बम भोला
छोड़ूÞ भङगोला
जँ पियब अछि अति आवश्यक
पीबू कोकाकोला.....
मुर्गा देलक बाङ
दुलरिया दारू ला......
पहिने डबरा खत्ता घुमी
भेटए बस गरचुन्नी
बाँटैत चुटैत पबैत छलियै
एक्कहि दूटा कुन्नी
एहिबेर पोखरिक जीरा भेटल
सटि गेल ठोरमे
आब तँ मोन परकि गेल हम्मर
माछक झोरमे...........
दूर्गापूजा डी.पी. बनि गेल
भरदुतिया राखीतर दबि गेल
जुड़शीतल शीतलहरीक मारल
हैप्पी न्यू इयर बस फबि गेल
बम फटाक फुलझड़ीक बीचमे
डूबि गेल हुक्का लोली
देशी मुर्गा बिलायती बोली.....

एहि सभ गीतक उचित मूल्याङ्कन मैथिल संस्कृतिक गवाक्षसँ निरखिकऽ करब बेसी उचित होएत । कारण हुनक गीत संसार सोरसँ पोरधरि मैथिल संस्कृतिक रङ्गमे सराबोर अछि । एत्तऽ धरि जे उपमोसभ खाँटी

मैथिल भूमि, जीवन, समाज वा संस्कृतिसँ लेल गेल अछि–

भेल प्रेमक रौदी एहि जगमे
तेँ धधकए सभतरि दावानल
जुड़शीतलक जल थपकीसन
बरिसाउ प्रिये कने प्रेमक जल.......

सुच्चा मैथिल गीत थिक– अछिञ्जल सन पवित्र ! एकटा पाँती देखल जाए–

भौजीकेँ बस कोबरे भाबनि
मुदा दियरसभ आबि सताबनि
भैया बहाने काल भगाबथि
बारहमासा गाबि सुनाबथि.........

गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मादे टिप्पणी दैत नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानक उपकुलपति, नेपाली समीक्षाशास्त्रक युगपुरुष, प्रकाण्ड विद्वान प्रा.डा. वासुदेव त्रिपाठी उचिते लिखलैन्हि अछि– "करीब सैँतीसे वर्ष (तत्कालीन) क लहलहाइत उमेरमे अनेक विधा आ क्षेत्रमे रहल हुनक साधना आ तकर विस्तृत आयामक अवलोकन कएलापर हमरालोकनिक मोनमे सहजहिँ महान नेपाली साहित्य स्त्रष्टा मोतीराम भट्टक स्मरण भऽ अबैछ ।" मैथिलीक एहि मोतीरामपर मिथिला मैथिलीक इतिहास सर्वदा गर्व करत से हमर अटल धारणा थिक ।

२.



प्रो. वीणा ठाकुर

अध्यक्ष, मैथिली विभाग

ल.ना.मि.विश्व विद्यालय दरभंगा।

जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा- प्रो. वीणा ठाकुर

श्री जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास 'जिनगीक जीत' पढ़वाक अवसर भेटल। उपन्यास पढ़ि बुझाएल जे ई उपन्यास तँ वास्तवमे मिथिलाक संस्कृतिक जीत थिक, जीवनक जीत थिक, संस्कारक जीत थिक। जौं एक शब्दमे कहल जाए तँ यएह कहल जा सकैत अछि जे ई 'लोक'क जीत थिक। जखनहि लोकक जीत थिक तँ स्वभाविक अछि जे एहि उपन्यासक मध्य लोक साहित्यक सुगन्ध चतुर्दिक पसरल हएत।

उपन्यासक कथा मिथिलाक एकटा गाम कल्याणपुरक थिक, जतए जीविकाक मुख्य साधन थिक कृषि, जतए आधुनिक वैज्ञानिक युगक प्रकाश नहि पहुँचल अछि। जतए उच्चतम शिक्षाक लक्ष्य थिक बी.ए. पास करब आओर जतए एकैसम शताब्दी एखन धरि नहि आएल अछि आओर नहि आएल अछि शाइनिंग इंडियाक प्रकाश। उपन्यासकार प्रमुख पात्र छथि नायक बचेलाल, नायिका रूमा, मुख्य पात्र छथि बचेलालक माए सुमित्रा, अछेलाल, अछेलालक पत्नी मखनी इत्यादि। कथा अछि बचेलालक द्वन्द्व एवं द्वन्द्वसँ उपजल अवसादक एवं जीवन संघर्षक, सुमित्राक मिथिलाक नारीक गरिमाक अछेलालक कर्त्तव्य निष्ठताक, संगहि मानवीय संघर्षक, द्वन्द्वक आओर भविष्यक आशा-आकांक्षाक। नायकक मानसिक द्वन्द्व जौं जीवनक सार्थकता लेल अछि तँ नायकक माए सुमिताक दृष्टि स्पष्ट मानवीय गरिमासँ युक्त अछि। नायकसँ एक डेग आगाँ बढ़ि द्वन्द्वसँ मुक्तिक वाद देखबैत प्रकाश पुंज मध्य अछि। नायकक पत्नी रूमाक चरित्रपर प्रकाश नहि देल गेल अछि, ताहि कारणे रूमा उपन्यास मध्य गौण पात्र भऽ गेल छथि।

कोनहुँ समाजक जातीय मनीषा, सामुदायिक चेतना, जातीय बोध मानवीय मूल्य आओर जीवन दर्शनक विविध पक्षमे अवगत होएवा लेल ओकर लोककेँ बुझब आवश्यक। उपन्यासकार एहि उपन्यास मध्य अत्यन्त इमानदारी पूर्वक अपन समाज, मिथिलाक समाज, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा एवं समयक सत्य लिखने छथि। समाजक निम्न वगर्क, कृषक वर्गक जीवनक चित्रण अत्यन्त इमानदारी पूर्वक कएने छथि। उपन्यासकार मिथिलाक वास्तविक चित्रण करवामे सफल भेल छथि, मिथिलाक तात्कालीन दशाक चित्रण कएने छथि तँ मात्र और मात्र अपन भाषा, देश एवं सामाजिक दायित्व समाजक प्रति प्रेम एवं प्रतिबद्धताक कारणे हिनकासँ ई उपन्यास लिखवा लेने अछि। यद्यपि कथाक प्रवाह अवरूद्ध अछि तथापि कथा अपन अंकमे देश-समाज, मानव, प्रकृति, संस्कृति, विकृति आदिकेँ समेटि अपन लक्ष्यपर पहुँचवामे सफल भऽ गेल छथि। हिनक उपन्यासमे हिनक व्यक्तित्व पाठकक समक्ष स्पष्ट प्रतीत भेल अछि।

जीवन दर्शन आओर आध्यात्मसँ लऽ कऽ मनुष्यक समस्त राग-विराग 'लोक'मे विद्यमान अछि। मिथिलाक लोक संस्कृति संवाहक उपन्यास 'जिनगीक जीत'मे उपन्यासकार जीवनक ओहि सत्यकेँ आत्मसात् करबाक प्रयास कएने छथि जाहिमे जीवनक समस्त 'सार' नुकाएल अछि। उपन्यासक मध्यमे उपन्यासकार मनुष्य जीवनक समस्त राग-विराग, आशा-आकांक्षा, दीनता-हीनता, उत्कर्ष-अपकर्षक चित्रित करैत वस्तुत: जीवनक शाश्वत तथ्य- जीवाक इच्छाकेँ उजागर करवामे सफल भेल छथि। वस्तुत: ई उपन्यास ई उपन्यास भाषा अथवा वोलीमे जातीय स्मृतिक आ साहित्यिक रूप थिक जे हमर जातीय चेतना अथवा जातीय वोधकेँ सुरक्षित राखने अछि। मिथिलाक सूच्चा चित्र अंकित करैत उपन्यासकार अपन जीवनानुभवसँ संचित कएल 'सार' आओर 'सत्य'केँ अभिव्यक्त कएने छथि। वस्तुत: ई उपन्यास मिथिलाक संस्कृतिक प्रतीक थिक आओर

एकर सार थिक शाश्वत। उपन्यास मध्य प्रकृति, परिवेश, आध्यात्म, समरसता आओर समन्वयक छवि आओर छटा सर्वत्र दृष्टिगोचर होइत अछि।

वर्तमान साहित्यमे ई प्रवृति प्रमुख अछि- एक समाजोन्मुख दोसर व्यक्ति निष्ठा तथा आत्म केन्द्रित। उपन्यासकारक प्रवृति समाजोन्मुख अछि। सम्पूर्ण उपन्यास मध्य मिथिलाक गामक लोकक रहन-सहन, अचार-विचारक चित्रण एतेक सजीव अछि जे पाठककेँ ओहि लोकमे लऽ जाइत अछि, जिनका गाम छुटि गेल छन्हि। उपन्यास मध्य मिथिलाक समाजक चित्र एतेक वास्तविक रूपमे चित्रित्र भेल अछि जे मिथिलाक माटि-पानिक सुगन्धसँ पाठकक हृदय सहजहि आहलादित भऽ जाइत अछि। वर्तमान समएमे गामक लोकक पलायन शहर दिशि भऽ गेल अछि, गाम पाछाँ छूटल जा रहल अछि। मुदा पाठक उपन्यास पढ़ि पुन: गाम घुरि जाइत अछि, गामक स्मृतिसँ पाठक बान्हल रहि जाइत अछि।

सामाजिक प्रश्नक प्रती सजग उपन्यासकार अपन एहि रचनामे सामाजिक जीवनक अर्न्तविरोध, विसंगति एवं परिवेशक चित्रण करैत, सामाजिक प्रश्नक निदान मूलत: व्यक्तिमे ताकवामे सफल भऽ गेल छथि। मिथिलाक ग्रामीण समाजक, निम्न वर्गक एवं कृषक समुदायक मान्यता एवं परम्पराकेँ प्रस्तुत करैत उपन्यासकार उपन्यासकेँ अत्यन्त संवेदय बना देने छथि संगहि एकटा नव संदेश- आशाक संदेश, भविष्य निर्माणक संदेश देवाक सेहो प्रयास कएने छथि। एहि संदेशकेँ उपन्यासकार लोकक भाषामे व्यक्त करैत संकीर्ण एवं अव्यवहारिक पक्षकेँ मानवीय सरोकारसँ जोड़ैत कल्पनाशीलता एवं संवेदन शीलताकेँ केन्द्रमे राखि अपन उदेश्यकेँ चित्रित करवामे सफल भऽ गेल छथि। 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'क ध्वनि बुलंद करैत उपन्यासकार दया, ममता, आस्था, त्याग, परोपकार सदृश मानवीय गुणक पक्षधर प्रतीत होइत छथि। दोसर दिशि एहि गुणकेँ प्राप्तिक दिश निर्देश सेहो कएने छथि। आधुनिक बुद्धिजीवी मानवक कार्य, ज्ञान आओर इच्छाक बीच तालमेलक अभाव आधुनिक जीवनक विडम्बना थिक। मुदा उपन्यासकार मिथिलाक सरल, निश्छल एवं सहज लोकक चित्रण करैत वस्तुत: मिथिला शुद्ध, पवित्र एवं सत्यस्वायनक चित्रण कएने छथि।

उपन्यासक सभसँ पैघ विशेषता थिक समाजक निम्नवर्गक बोलचालक भाषा, लोक संवाद एवं लोकोक्तिक प्रयोगक संग समाजक विषमता एवं विसंगतिपर प्रहार करव। अपन जीवनानुभवकेँ अलग शैली एवं शिल्पक माध्यमसँ निरूपित करवामे उपन्यासकार सफल भऽ गेल छथि। संगहि इहो सत्य जे उपन्यासकारक अर्न्तमन अत्यन्त कोमन तन्तुसँ निर्मित छन्हि तेँ हिनक उपन्यास मध्य 'रिसेप्टीविटीक' स्तर बहुत गाढ़ भऽ गेल छन्हि। उपन्यासकार प्रमाणित कऽ देने छथि जे सहज लोक भाषाक माध्यमसँ नहि मात्र अपन अन्तर्परिष्करण सम्भव अछि अपितु प्रकारान्तरसँ मानवीय दायित्वक निर्वहन सेहो।

संवंधक अभावमे मनुष्य सुखा जाइत अछि। मनुष्य अपनामे वंद होएवा लेल नहि बनल अछि। मनुष्यमे जतेक जे अछि, सभ ओकरा अन्यसँ माने दोसरसँ जोड़ैत अछि आ प्रसन्नताकेँ बाँटैत अछि। सम्भत: यएह उपन्यासकारक इष्ट छन्हि। हम हिनक मंगलमय भविष्यक कामना करैत अंतमे मैथिली साहित्यक भंडारकेँ समृद्ध करवा हेतु साधुवाद दैत छियन्हि।

पोथीक नाम- जिनगीक जीत (उपन्यास)

उपन्यासकार- जगदीश प्रसाद मंडल

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, राजेन्द्र नगर दिल्ली।

मूल्य- २५० टाका मात्र।

प्रकाशन वर्ष- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स,

वार्ड न.६, निर्मली, सुपौल, मोवाइल न. ९५७२४५०४०५

३



जगदीश प्रसाद मंडल

कथाक शेष-

अर्द्धांगिनी

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जहिठाम ओसारपर चपरासी बैसैत। सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछुए पढ़ुआकाका रहथि कि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल। जे कक्को देखथि। सीढ़ी लग पहुँच आगू तकलनि जे चपरासी घुरि कऽ अबैए आकि नहि। मुदा नहि देखि काकामे पौरूष जगलनि। मनमे उठलनि अखन तँ सेवा निवृत्तो नहिये भेलौंहेँ, तहन किअए अनकर सेवा लेवा लेल मुँह ताकब। सीढ़ीसँ उपर तँ चढ़ि गेलाह मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै दलनि आगूसँ घेरि लेलकनि। जे (चपरासी) बाबा कहैए, ऑफिसोक सभ भैये, काका कहै छथि मुदा कि से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए। जँ से नहि तँ परिवारमे किअए कहल जाइए। नजरि ठनकलनि, अगर बीस बर्खक आधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उमरे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए। मन हल्लुक भेलनि। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलनि। हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़आ काकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतनि। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसरि चुकल छल।

स्टाफ रूम पहुँचते एक नहि अनेक तरहक खटका खटकए लगलनि। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार बेसी मनकेँ हौंड़ैत रहनि। कुरसीपर बैसतहि मनमे उठलनि। मुदा तह दैत मनसँ हटौलनि। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बुझि पड़नि। किछु व्यंग्यबातसँ क्रमकेँ बदलौ चाहथि तँ ओहन बेवहारे नहि छलनि। चालिसँ थाकल रहबे करथि आँखि झल-फलाए लगलनि। गमे-गम नीनो आबि गेलनि। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलनि। आँखि मूनल देखि इशारामे उतरीक चर्चा हुअए लगल। मुदा पढ़ुआ काकाक आँखि बन्न तँ किछु बुझवे ने करथि।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजे ट्रेन, तँ स्टाफ सबहक बीच चिल-मिलक कुचकुची जकाँ, देह-हाथ चुल-चुलाए लगलनि। कुरसीक पौआ सबहक अवाजसँ पढ़ुआ काकाक भक्क खुजलनि। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगलाह कि ऑफिसक बाड़ाबावू आवि कऽ काकाकेँ कहलकनि- ''अपनेक पत्र अछि जे चारि बजेमे देल जाएत, तँ अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?'' कहि ऑफिस दिस बढ़ि गेलाह। ठाढ़े प्रणाम कऽ कए संगियो सभ निकलि गेलनि। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआ काका असकरे कोठरीमे बैसल। बड़ाबावूक भाषापर नजरि गेलनि। आन दिनक जे बोली रहैत छलनि ओहिमे किछु कड़ुआहट बुझि पड़ि रहल अछि। भषे नहि अखने कि देखलौं काल्हि धरि सहयोगी सभ अरिआति कऽ पहिने विदा कऽ दैत छलाह तेकर वादे कियो जाइत छलाह। नौकरीक एससाह भेलनि। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा (विद्यार्थी) सभसँ कि संबंध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैसि पढ़ौनाइ। पानि पीवाक इच्छा होइत छलए आ बजै छलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइत छलए। जे पहिने लोटा पकड़ि पानि अनै छलै ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझैत छलै। मुदा आइ कि देखै छी शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैत अछि। कोना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहियेसँ विद्यालय सरकारीकरण भेल तहियेसँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत छात्र-

विहीन विद्यालय भऽ गेल। ओना महीनवारी बेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। महीने-महीना नहि भेट सालक चुकती सालमे हुअए लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नहि अपन काज बुझै छलौं मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे कतौ बंधनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते ऑफिसक बाड़ा बावू, ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआ काका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बही आगू बढ़ा देलखिन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पत्ति टुटैत तहिना पढ़ुआ काकाकेँ नौकरी टुटि रहलनिहेँ। हस्ताक्षर करिते पढ़आ काका हतास भऽ गेलाह। मनमे उठलनि सब किछु हड़ा गेल। जत्ते पढ़ने छलौं ओहिमे सँ पहिने ओते हड़ाएल जेकर उपयोग नहि भेल। जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीवैक आशा बँचल छल ओहो हड़ा गेल। कि हम एहिठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएव आकि......। मन पड़लनि अपना संग किनको हाथो पकड़ने छिअनि कि ने? दू प्राणीक जिनगी कोना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै ओ हमरा बुते कएल हएत। अखन धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बाड़ा बावू आनि कऽ हाथमे जे दइ छलाह ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छलिएनि। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत। जिनगीक एक्कोटा ब्रत निमाहै जोकर नइ छी। दुनद्गमे छाती दलकए लगलनि। तहि बीच चपरासी आबि कहलकनि- ''कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौक।'' अर्द्धचेत अवस्थामे पढ़ुआ काका कोठरीसँ निकलि पताइत-पताइत ओसारपर एलाह। डेगे ने उठनि। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओङठि कऽ बैसि गेलाह। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलनि। जेबीसँ निकलि पढ़ए लगलथि। सूचना देल जाइत अछि तेसर मासक अंतिम तिथिसँ सेबा-मुक्त होएब। निचला पाँति पढ़ौ नहि लगलथि, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेकि लहरैत मने उठि कऽ विदा भेलाह। मुदा जहिना नदीक किनछड़िक पानिमे पैसैसँ बड़द पाछु पाएर करैत तहिना पढ़ुओ काकाक पाएर आगू-पाछु हुअए लगलनि। मनक लहरिसँ पाएर तनेलनि। आगू बढ़ए लगलाह। विद्यालयक फाटक (गेट) लग पहुँच पाछु धुरि तकलनि तँ बुझि पड़लनि जे जना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहनि। फुरेलनि, जहन जीवैक सभ रास्ता बन्न भए रहल अछि तहन मरैयोक तँ ढेरी उपाए अछि, मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत। जीवैले अपराध कऽ कए कियो मृत्यु प्राप्त करैत अछि मुदा मृत्युले अपराध.....।

बीच रस्तापर आबि क्रोधक लहरिमे आरो ओझरा गेलाह। मुदा मनमे हुबा जगलनि। फुरेलनि, जहन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइये देलक तहन एक्केटा उपाए अछि जे जिनकर हाथ पकड़ि भार नेने छिअनि हुनक लग पहुँच कहिएनि जे अखने दुनू प्राणी हरिद्वारक रास्ता धड़ू। छोड़ू अइ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मंदिरक पुजेगरी बनि जाएव आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सुनब आ अपनो नचारी कहबनि। डमड़ूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचवो करब। तखने एकटा छुछुनरि दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआति टपैत रहै कि भक्क खुजलनि। ताबे छुछुनरि ससरि कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलनि जे छुछुनरि पाएरमे काटि लेलक। झुकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगलथि। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलनि। मन मानि गेलनि जे छुछुनरि काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलनि। काजक बेरि रहने सभ छिड़िआएल रहए। रास्ता खाली। विद्यालय दिशि तकलनि। सभ चलि गेल छलाह। मनमे एलनि

छुछुनरिक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलनि। मुदा लगले मन बदलि गेलनि। अपन बीख अपना बुते कहाँ झरैत अछि। तँ कि ऐठाम पाएर पटकि कऽ मरि जाएब जतऽ मनतरिया भेटत ओतऽ जाँच करा लेब। ताधरि अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनावे....दू एक।

मंत्रकेँ चारि चरणमे वाँटि, एक चरण पढ़ि मुँहसँ फुकि दथि। अबैत-अबैत गामक सीमापर पहुँच गेलाह।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पद्धुआ काका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लाल काकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहनि। किसाने परिवार देखि लाल काकीक पिता कुटुमैती केलनि। ओना पढ़ल बर पाबि दुनू प्राणीक हृदए जुरा गेल रहनि जे लछमीक संग सरस्वतीयो छथि।

जहिना एकटा सीमा टपने एसिया-रूरोपक दू तरहक सब कुछ भेटैत, तहिना पद्धुआ काकाकेँ सीमा पर अविते बुझि पड़लनि। साओनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकनि। पानि जकाँ बुद्धि पसरि गेलनि। जीवित छी कि मुइल से होशे ने रहलनि। थुस दऽ बैसि रहलाह। मन पड़लनि अकाजक हएब। दुनिया तँ काज करैबलाक छी। कि मृत्यु सय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक होइत सेहो नहिये हएत। जिनगीमे कहियो जइ हाथसँ घुस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा ब्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि। मन राँइ-बाँइ भऽ फाटि गेलनि। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदए दिशि बहि गेलनि। हृदए पसीज गेलनि। मन पड़लनि अर्द्धांगिनी। पेइतालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे बृत्ति अछि, ओहिसँ हटल राखैमे ककर दोख भेल? कि हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नहि सकै छलिएनि। जँ से केने रहितौं तँ जिनगी वेलाइग किअए होइत जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितहुँ। दू मिलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलिएनि। अपनो एते होश नै केलौं जे सए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत। शेष जिनगी कोना चलत? अपनो नै छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं। निराश मनमे सासुर मन पड़लनि। वियाहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहाले रूसैए। मुदा सासु मन पड़ितहि मन मधुआ गेलनि। जँ लोक सासु लग नहि रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ कतऽ करत? आरो मन पघिल गेलनि। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छथि। मुदा फेरि मनमे उठलनि जे रूसवो तँ कते रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रूसव एक्के रंग कोना हएत। तत्-मत् करैत विचारलनि जे सियानी रूसवसँ शुरू करब आ जते निच्चाँ धरि सुतरि जाएत तते निच्चाँ धरि आबि अटकि जाएब। फुड़फुड़ा कऽ उठि घर दिस विदा भेलाह। चारू भर चकोना होइत जे कियो देखे नहि। मुदा से सुतरलनि। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हड़ि कऽ बजलाह- “ई घर मनुक्खक रहैबला छी, एम्हर मकड़ाक झोल लटकल अछि ते ओम्हर विढ़नी छत्ता लगौने अछि।” कहि रूसि कऽ सिरहौनीपर मूड़ी रखि आँखि तकिते सुति रहलाह। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देखि नेने रहनि। हँसुआ-खुरपी बाड़ियेमे छोड़ि आङन दिस बढ़लीह तँ किछु अवाज बुझि पड़लनि मुदा नीक नहाँति नहि बुझि सकलीह। ओना पद्धुओ काका मुँह दाबिये कऽ, लोकक दुआरे बजैत रहथि। दोहरा कऽ फेड़ि तरसँ गुम्हरैत बजलाह- “एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाड़ि करैबला अछि।”

पढ़ुआ काकाक बात लाल काकी बुझि गेलखिन जे कतौ किछु भेलनिहैं। दू बीघा हटल अबाजमे लालकाकी बजलीह- “एलौं।”

‘एलौं’ सुनि पढ़ुआ काकाकेँ सबुर भेलनि। लाल काकी मने-मन सोचैत जे पुरूखक लटारम्भ कि धमना लटारम्भ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी बौस कऽ शान्त कऽ देवनि। माल-जाल अबैक बेरि अछि करजानमे उपद्रव करत। सएह केलनि।

पत्नीक अबाज सुनि पढ़ुआ काकाकेँ छाती दहलि गेलनि। नाङड़ि सुरैर कऽ विद्यालय घर धड़ौलक। कतौ के ने रहलौं। मन गरमेलनि बमकि कऽ बजलाह- “काल्हिये विद्यालय जा कऽ लिखि कऽ दऽ देबै जे आइयेसँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हुअए तँ मनिआर्डर कऽ रूपैआ पठा दिअए नइ होइ तँ नहि पठबए।” मुदा लगले मन थलथला गेलनि। जना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत। एना पाइयक खेल किअए भऽ रहल अछि। विद्यालयक शिक्षक होइक नाते एहि खेलकेँ किअए ने बुझि रहलौंहैं। कि अर्थशास्त्र पढ़बक अभाव रहल?

लग अविते लाल काकी बजलीह- “चूड़ा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला कऽ रखने छी नेने आएव?”

लाल काकीक बात सुनि पढ़ुआ काकाक मन मचकी जकाँ झुलए लगलनि। मुदा आससँ दोसर दिस भऽ गेलनि। खिसिया कऽ बजलाह- “हूँ। चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा।”

मुस्की दैत लाल काकी उत्तर देलखिन- “हमरे छी अहाँक नै छी?”

पत्नीक बात सुनि मन सिहरि गेलनि। बेरूका सूर्जक रौद जकाँ पढ़ुआ काकाक गरमी कमलनि। बजलाह- “एकटा गप कहए चाहै छी?”

“भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धुराएल अछि। हाथ-पाएर धोने अबै छी तखन अंडी तेलसँ घुट्ठियो ससारि देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदति काल कहैत रहै छी जे मोटर गाड़ी लऽ लिअ। अरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सुनब। तइकालमे कहब जे मौगी-मेहरीक गप छी।”

लाल काकीक गप सुनि पढ़ुआ काकाक मन आगिमे पकैत भट्टा जकाँ असुआ गेलनि। लजबीजी जकाँ दुनू पीपनी सटि गेलनि। कल पड़ल रोगी जकाँ लाल काकी बुझि सहटि कऽ निकलि **ठोकनो** बाड़ी पहुँच गेलीह।

अखन धरि पढ़ुआ काकाक जिनगीक देल दस बीघा जमीन अन्हि। अपने जमीनकेँ सोलहन्नी बिसरि गेलाह। खाली गाछी-बँसवारिटा धियानमे रहलनि। किसानक बेटी लाल काकीकेँ खेतीक सोलहो आना लूड़ि। अन्नक खेती बटाइ लगा लेने छथि, पाँच कट्ठा चौमास आ गाछीक सेवा टहल अपने करै छथि। दूटा गाइयो पोसिये लगौने छिथि। जहिसँ सुभ्यस्त भोजन भेटैत। पक्का घर बना सब बेवसथो केनहि छथि।

हँसुआ, खुरपी, कोदारि आङनमे रखि लाल काकी झाड़ू लऽ कऽ आङन बहारि, कलपर पाएर-हाथ धोइ पानि पीवितहि रहथि कि मन पड़लनि पतिक रूसव। मन पड़लनि अपन जिनगी। जाधरि माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं, तँ दुनू गोटेक इच्छा सदति काल यएह रहनि जे धिया-पूता कखनो कानए नहि। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बूढ़ी (सासु) सदति काल कहैत रहै छलीह जे कनियाँ आङनाक मालिक स्त्रीगणे होइत छथि। तँ आङनकेँ विवाहक मड़वा जकाँ सतरंगा फुल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नहि जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बुझि सती धर्मक पालन करैत एलीह- सावित्री, दमयन्ती। कडुआ कऽ किछु कहब उचित नहि। तहि बीच दरबज्जा परक अवाज सुनलनि। "हे भगवान, जानह तू।"

मने-मन पद्धुआ काका संबंधमे सोचैत रहति। आमोक गाछी तेहन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहिये। गोटे साल मोजरबे ने करैत, तँ गोटे साल बिजलोकेमे मोजर जरि जाइत। गोटे साल बिहाड़ियेमे आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। मोटा-मोटी पाँच बर्खपर दू मास आम खा कऽ जीबि सकै छी, वाकी.....?

दरबज्जापर लाल काकीकेँ अवितहि पद्धुआ काकाक टूटल मन कलपि उठलनि। गोरथारीमे बैसि लाल काकी बजलीह- "पाएर सोझ करू।"

लाल काकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पन्नसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पद्धुआ काकाक बोल निकललनि- "पाएर नै टटाइए, हृदयक व्यथा छी।"

पतिक बात सुनि फड़कि कऽ चौकीपर सँ उठि लाल काकी मधुआएल स्वरमे बजलीह- "साँचे स्त्रीगणसँ सुनै छी जे पुरूख नङर-कट होइ छथि। कुत्ता जकाँ सदति काल नाङरि टेढ़े रहै छन्हि।"

"जे बुझी।"

"तँ कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुड़ जकाँ कि टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेकि आओत।"

"चौकीपर सँ उठलौं किअए? डाँड़ सोझे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोटेक एक्के वृत्त करैत तँ बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।"

पद्धुआ काकाक व्यथा सुनि लाल काकीक मन कानि उठलनि। जाधरि ओछाइनोपर पड़ल रहताह ताधरि..... सत्ती साध्वी तँ.....।

चौकीपर बैसितहि पद्धुआ काका आँखिमे आँखि मिला कहलखिन- "सब अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनाओल जिनगीक आधा भाग अहाँ छी।"

"अहाँ छी।"

पढ़ुआ काकाकेँ मन पड़लनि छठियारीक **भार**। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन- "भारी भूल भेल जे आहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नहि केलौं। जेकर प्राश्चित अहाँ मुँहे सुनव।"

अवसर पावि लाल काकी पुछि देलखिन- "अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात वुझा देलौं जे दुनू परानी कते दिन जीबि। जते दिन जीबि ओते दिन कहेन जिनगी जीबि। राजा-दैविक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब? अखन दुनू परानी जीवै छी मुदा इहो तँ भऽ सकै-ए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।"

पत्नीक बात सुनि उछलि कऽ चौकीपर सँ ठढ़ होइत बजलाह- "नोकरी छीनि निहत्था केलक मुदा तँ कि मरि जाएव। जँ अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रक्षा कऽ सकैए तहन......।"

४



जगदीश प्रसाद मंडल

कथा

अतहतह

तीन बजे भोरे झामलाल बैग नेने गरजैत चौकपर पहुँचल। ओना एकादशीक चान डुबि गेल रहए मुदा सुरूजक लालीसँ दिशा फरिच्छ हुअए लगल। झामलालकेँ चौकपर अबैसँ पहिने भुटुकिलाल डिबिया बारि चाहक चुल्हि पजारि नेने रहए। पाँच बजे चुल्हिमे आगि पजारैबला अढ़ाइये बजे पजारैक सुरसार करए लगल रहए। तेकर कारण भेल रहए जे पनरह दिनसँ राहड़िक दालिमे रोटी गुड़ि कऽ नहि खेने रहए। तै खातिर

खाइये काल दुनू परानीक बीच झगड़ा भऽ गेल रहए। नहि खेने माटियेसँ चारि घुस्सा दाँतमे लगा, कुड्डुड़ कऽ झामलाल दोकानपर पहुँच बाजल- “भुटुकि भाय, रौतुका सोठियाएल छिअ। खेवाक किछु नहि रखने छह?”

“अच्छा पहिने अधा-अधा कप चाह पीवि लिअ। जहिना अहाँ सोठियाएल छी तहिना हमहूँ छी। आन चीज कि भेटत। बिस्कुट सबमे कोनो लज्जैत रहै छै। मुदा छालही अछि।”

“चलह हुन्डे दाम कहि दहक?”

“सबटा अहीं लऽ लेबै आ अपने?”

“पाइ हम्मर आ खाइमे दुनू गोटे अधा-अधी।” अधा-अधी सुनि भुटुकिलाल उछलि कऽ बाजल- “अधा किलोसँ बेसिये हएत, मुदा अहाँ एक्के पौआक पाइ दिअ।”

“एहनो बुड़िबक जकाँ कियो बजैए। बैग खोलि कऽ देखि लहक। एक किलोक पाइ आ सवा सौ रूपैया उपरसँ देवह। खाली भरि दिन संग पुरह।”

“हम तँ पेट-बोनिया आदमी छी भाय। जतऽ पेट भरत ततऽ रहब।”

“चौकक खर्च हम देलियह आ मालिक तू भेलह। मुदा पहिने खा लाए किएक तँ भरि दिन बहऽ पड़तह।”

अधा-अधा छालहीमे सँ उठा-उठा मुँहोमे दैत आ गप्पो करैत “टटके छालही बुझि पड़ै छह।”

“कौल्हुके छी।”

“छालहीक रस तँ तेसर दिनसँ बनव शुरू होइ छै। मुदा टटकोक अपन रस छै। आइ गामक झंडा गारि देलियह।”

“से की, से की?” बगुला जकाँ मुँह उठा-उठा भुटुकिलाल झामलालसँ पुछलक। पानि पीवि झामलाल बाजल- “हमरा तँ बुझिते छह जे बैग आ मोटरे साइकिलमे कारोबार अछि। मुदा कहुना-कहुना पाँच लाख पीटिये दैत हेबइ। बान्हल तँ अछि नहि। दसटा कम्पनीक एजेंसी रखने छी जेकर जाल सगरे देशमे छै। एते पहुँच रखने छी। जहिना आइ खच्चरपुर बलाक खच्चरपनी झाँड़ि मुता-मुता भरेलौं तहिना ओकर आगि-पानि कथा-कुटुमैतियो ढाठि देबइ। तइले नअ पड़े कि छह।”

“ठीके कहै छी भाय, एहेन-एहेन अगिलह सभकेँ एहिना हुअए।”

चाह पीवि झामलाल बाजल- “भाय, अइपर सँ जे पान सए नम्बर पत्ती देल पान खइतौं तँ आरो बुलन्दी आबि जइतै।”

“भाय, पान तँ तेहन खुआ दैतौं जे जेहेन बुलन्दी चाही तहूसँ सातबर बेसी आबि जाइत। मुदा पानबला छौड़बा अछि मौगियाह। बसन्ती नीन छोड़ी औत। सात बजेसँ पहिने थोड़े औत। ताबे सुपारी आ तमाकुलक पत्ती दऽ काज चला लिअ।”

“तोहूँ भारी इसकी छह। आइ तोरे दरबारमे आसन जमेहब। जना-जना तू कहबह तेना-तेना करब। मुदा एकटा बात अखने अइ दुआरे कहि दइ छियह जे बिरड़ोमे झंडा उड़िया देलियै मुदा ओकरा तँ बाँसमे लगा जमीनमे गाड़ए पड़त की ने?”

“अहाँ खाली बैगक ताला खोलि कऽ रखने रहू एक्के घंटामे चौकक चकचकी देखा दइ छी।”

उतसाहित भऽ झामलाल- “भाय, तोरे सबहक असिरवादसँ दूपाइयो देखै छी आ दूटा लोको लगमे रहै छी। मुदा कमेनाइये-खेनाइटा तँ जिनगी नइ ने छिऐ। फेरि दोहरा कऽ सुन्दरपुरमे जन्म लेब। तँ जहिना गामक झंडा अकासमे उड़िआएल तहिना बचबैले जे करए पड़त, से करब।”

“अच्छा छोड़ू अगिला बात, अखैन की करब से विचारू।”

“तोहीं बाजह?”

“दूटा चाहबला छी। दूटा पानबला अछि। तीनटा मजरूटी अछि। भरि दिनक खर्च उठा लिअ।”

“मजरूटी की कहलहक?”

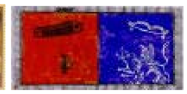
“मैजरिटी, एक मजरूटी गाँजा पीआकक अछि। दोसर ताड़ी-पोलिथीनबला अछि आ तेसर इंग्लीस पीआकक अछि।”

“तीनूमे कते खर्च हेतह?”

“अहाँ खाली बैगक मुँहमे हाथ देने ने रहिऔ। सब गप ने कऽ लेब।”

“सब तँ फुट-फुट बैसत तखन रौतुका बात कहबै कना?”

“मामूली लोक सबहक मजरूटी छी। सब कलाकार सबहक छी। जखने चाहक दोकानपर औत आ भरि दिनक मौज-मस्ती गछि लेबइ तखने चौकक ताल देखि लेबइ।”

"किछु कहबहक नइ?"

"कहबै कि मंत्र देबइ। दुइयेटा मंत्र दैक काज छै। अकासमे झंडा उड़ि गेल आ खच्चरपुरबलाकँ सभ खचड़पनी घोंसारि देलिऐ। माटि दइ छिऐ जे जतऽ फड़िअबैक मन होय फड़िया लिअ हमरा समाजसँ।"

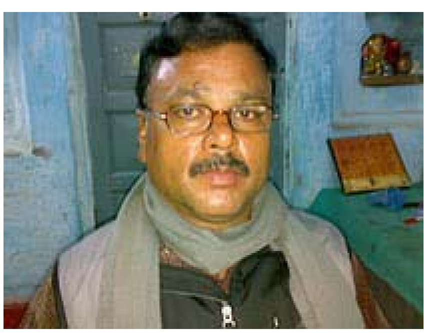
घंटे भरिक पछाति चौकक जुआनी आबि गेल।

क्रमशः

१.दुर्गा नन्द मंडल- **बुढ़िया फूसि** २.जितेन्द्र झा- **नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि**

३. *बेचन ठाकुरक नाटक- बेटीक अपमान आगाँ-* ४. नन्द विलास राय- कथा- **चौठचन्द्रक दही** ५.**दुर्गानन्द मंडल- शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी-** कथापर दू शब्द

१



दुर्गा नन्द मंडल

बुढ़िया फूसि

किछु कहैत संकोच नहि, लाजो नहि होइत अछि जेना निर्लज्ज भऽ गेल छी। आँखिक पानि जेना सुखि पड़ल हो। एहन बुझना जाइत अछि जेना द्वापरेसँ अथार्थ ६३जन्म पहिनहिसँ फूसिक खेती करैत आिव रहल छी, निश्तुकी बाप-पुरखा सेहो एहेने सिद्धस्त खेतिहर हेताह। मुदा उपजा ताहि समएमे कम होइत छल, आ आइ बुझू जे बोड़े कट्ठा फूसि सभठाँ उपजि रहल अछि। आ सभ सभ दिन सभठाम फूसिये फूसि बाजि रहल हो। यर्थातोमे २६जनवरी हो या १५अगस्त, एहनो राष्ट्रीय पावनिक सुअवसरोपर बाजव हमरा लोकनि अपन जन्म सिद्ध अधिकार बुझैत छी। सरकारी वा कोनो गैर सरकारी कार्यालय किएक ने हो, राष्ट्रक सम्मानक अढ़मे अपमान करब हमरा लोकनि नहि विसरि पवैत छी। सिया लैत छी बेस नम्हर-चारि मीटर खादीक एकटा डलगर कुर्त्ता, एक गोट पैजामा आ एकटा गाँधी टोपी। आध सेर सुतरी दू जिस्ता सभ रंगक कागत आ कागतेक बनल प्लेट। उज्जर आ ईंटा रंगक बुकनी, पुरने झंडाकेँ साफ-सुथरा कऽ किछु फूल लऽ सए-पचास झूठाक समक्ष झंडोतोलनक वाद छोड़ए लगैत छी, फूसिक गपौड़ी। अनेने व्यर्थ- किएक तँ आत्मासँ एहेन कोनो गप्प नहि जे स्वीकार करैत हो, मुदा अनेरे ठोर पटपटा-पटपटा अपनाकेँ सूच्चा देश भक्त, कर्मठ, सुयोग्य, इमानदार पदाधिकारी वा कर्मचारी सावित करए लगैत छी- फूसिक बखारी खोलि दैत छी। एकसँ बढ़ि कऽ एक फूसि बजैत छी झुट्ठा सभ थोपड़ी बजवैत अछि। उहो थपड़ी पारए लगैत अछि। फूसिए चन्द्रशेखर आजाद, गाँधी, नेहरू, भगत सिंह, उधम सिंह, सुभाष आदिक नाम लऽ बच्चा सभकेँ फूसलाबए चाहैत छी। फूसिये राष्ट्रक विकासक लेल छिट्टाक-छिट्टा सप्पत किरिया खाइत छी। किरिया खाइत-खाइत ने तँ पेट भरैत अछि आ ने मुँह दुखाइत अछि। एकरो एकटा कारण अछि जे हमरा लोकनि पुस्तैनी झुट्टा छी। सालमे तीन-चारिटा एहेन पावनि तँ जरूर अबैत अछि जे भरि मन फूसि बजैत छी से कोनो की चोरा कऽ नै यौ चिकरि-चिकरि फूसि बजैत छी। आ फूसियाही सभ सुनैत रहैत अछि।

मुदा जखन सेबै-बुनियाँ रूपी प्रसादक तलक लगैत अछि तखने फूसिक सप्पत खा विराम लैत अछि। तत्पश्चात बुनियाँ-भुजिया खा तृप्तिक ढेकार लऽ उगरलाहा बुनियाँ-भुजिया रूमालमे बान्हि अपन-अपन जन्म स्थानपर अबैत छी।

कहूँ जे एहेन तरहक जे व्यर्थ बातक संभाषण करब कहाँ तक उचित? राष्ट्रकेँ ठकब कि अपने ठकाएव नहि थिक। कि फूसि बाजि अपने आपकेँ नहि परतारि रहल छी? राष्ट्र ध्वजक समक्ष लेल यएह सभटा सप्पत साँच अछि आकि बुढ़िया फूसि? सत्ते- ई थिक बुढ़िया फूसि।

२

जितेन्द्र झा

नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि



बबिता ठाकुर दिल्लीसँ मधुश्रावणी पुजऽ अपन नैहर जनकपुर आएल छथि । भोरसँ साँझधरि पुजेमे अपस्याँत बबिता मिथिलाक सँस्कृति आ परम्परासँ निकजकाँ भिजबाक अवसर भेटल कहैत खुशी व्यक्त करैत छथि । तहिना रीमा झा सेहो काठमाण्डूसँ जनकपुरमेँ आविकऽ मधुश्रावणी पुजलनि । एक निजी च्यानलमे समाचारवाचिका रीमा एहि पावनिसँ आत्मीयता जुडल बतबैत छथि । हिनके सभजकाँ बहुतो मैथिल ललना अपन व्यस्त जीनगीक पन्द्रह दिनमे मधुश्रावणीक आनन्द उठौलनि । पढाइ लिखाइ आ पारिवारिक झन्भटिके कतियबैत नवविवाहितासभ गीत नाद आ खिस्सा पिहानीक आनन्द उठौलनि मधुश्रावणी पावनिमे ।

साओन महिनाक रीमझिम वर्षा आ ताहिमे सखी बहिनपा सभक सँग फुल लोढबाक आनन्द शायदे कोनो आन संस्कृतिमेँ होइक ।

नवविवाहिता मैथिल महिलासभक जीवनमेँ नव रोमाञ्च लऽ कऽ आएल मधुश्रावणी । लोककथा आधारित ई मधुश्रावणी वैवाहिक जीवनके एकटा अदभुत आ हृदयस्पर्शी शुरुवात बनल अछि । नवविवाहिता जोडीके एक दोसराके बुझबाक परखबाक अवसर सेहो जुडा दैत अछि ई पाबनि ।



'पावनि पूजू आज सोहागिन प्राण नाथके संग हे ।
कारी कम्बल झारि गंगाजल काजर सिन्दुर हाथ हे ।
चानन घसू मेहदी पिसू लिखू मैना पात मे ।
पावनि साजी भरि भरि आनल जाही जुही पात मे ।
कतेक सुन्दर साज सजल अछि लिखल मैना पात मे । ' (पावनिक गीत)



ओना नोकरिहारा वरसभक लेल मधुश्रावणी पावनि फिक्का रहल । कनिञाक संगहि कोहवर घरमेँ बैसकऽ काम दहन आ गौरी महादेवक विवाहक कथा सुनबाक अवसर अमेरिकामे रहल प्रमोद झाके नहि भेटलनि । जनकपुर पिरडियामाइस्थानक प्रमोद वितलाहा अषाढ महिनामे परिणय सुत्रमे बान्हल छलाह । गामसँ कोशो दूर रहल कनिञासभ भलेहि पुजा पुजऽलेल नैहर पँहुच गेलि होथि मुदा वरसभके त मन मसोसिएकऽ रहऽ पडलनि ।

मिथिलामे पण्डिताइयक प्रथाके विपरीत ई पाबनि महिलेद्वारा पुजाओल जाइत अछि । समाजक वा घर परिवारक प्रौढ महिला पवनैतिके ई पाबनि पुजबैत छथि ।

ई पाबनि नवकनिञा अपन नैहरमे पुजैत छथि तेँ विवाहक बाद सासुरक जिम्मेवारीवहनके दायित्वक बीच नैहरक मनोरन्जन सुखदायी भऽ जाइत अछि । पुजावास्ते प्रयोग होबऽबला सभ समानसभ कनिञाक सासुरेसँ अबैत छैक, पुजा नैहरमे मुदा पुजाक वस्तु सासुरक ।

मधुश्रावणी पुजा कोहवर घरमेँ करबाक प्रचलन अछि । वर कनिञाक नितान्त व्यक्तिगत घर कोहवरके मधुश्रावणीलेल निक जकाँ सजाओल जाइत अछि । विवाहक बाद मधुश्रावणीमे वर कनिञा कोहवरके श्रृंगार बनि जाइत अछि ।

'कोवर कोवर सुनियै हे प्रभु कोवर कोना होइ हे ।
पिसु पिठार लिखू जल पुरहर कोबर एहन होइ हे ।
ताहि कोवर सासु पलंगा ओछाओल ओलरल धीया जमाय हे ।
घुरि सुतु फिरि सुतु ससुरक वेटिया अहाँ घामे गरमी बहुत हे ।
हम नहि घुरबै अहाँक बोलिया पर घर बाज कुवोल हे । ' (कोबरक गीत)'

साओन इजोरिया पक्षक तृतीया दिन सिन्दुरदान होइत अछि । ई सिन्दुरदान अहिवातक तेसर सिन्दुरदान होइत अछि । एहिसँ पहिने विवाहक राति आ चतुर्थीक भोरमेँ सिन्दुरदान भेल रहैत छै । मधुश्रावणी विवाहके पुर्णता देबऽबला पाबनि बनि गेल अछि ।

मिथिलामेँ विवाहपुर्व वर कनिञा एक दोसरासँ विल्कुल अन्चिन्हार रहैत अछि एहन मे मधुश्रावणी पावनि आ साओनक महिना सामीप्यतालेल सहज अवसर जुटा दैत अछि । कतबो व्यस्त जीवन होइतो प्रायः नवदम्पत्ति एहिमेँ संगहि कथा सुनैत छथि एहिसँ सामाजिक आ पारिवारिक समरसता बढबामेँ मदति भेटैत अछि ।

मधुश्रावणीमेँ सासुरसँ पठाओल गेल दीपक टेमी दगबाक चलन अछि । एहि चलनके सभ गोट अपने तरहसँ देखैत अछि । टेमीक फोँका सौभाग्यक प्रतीक मानैत अछि मैथिल महिला ।

शीतल बहथु समीर, दही दिश शीतल लेथु उसासे ।
शीतल भानु लहुक लहु उगथु शीतल भरल अकासे ।
शीतल सजनि गीत पुनि शीतल शीतल विधि व्यवहारे ।
शीतल मधुश्रावणी विधि हो शीतल वसन श्रृंगारे ।
शीतल घृत शीतल वर वाती शीतल कामिनी आँगे ।
शीतल अगर सुशीतल चानन शीतल आबथु माँगे ।
शीतल कर लए नयन झपावह शीतल देलह पाने ।
शीतल हो अहिवात कुमर संग शीतल जल अस्नाने । ' (टेमी कालक गीत)

संस्कृतिविद्सभ मिथिलामेँ मुगल शासकके आक्रमणके बाद पतिव्रताक रक्षाके लेल एहन चलन शुरु भेल कहैत छथि ।

बदलैत समयक प्रभाव मधुश्रावणी पावनि पर सेहो देखा रहल अछि । फुल गुलसँ भरल गामघर आब सुनसान प्राय भऽ रहल अछि । एहनमेँ जाही जुही, अगर तगर, नीम दाडिम आ मेहदीक पातसभ सनके वस्तु भेटब कठिन भऽ जाइत अछि । शहर बजारमे रहनिहार पवनैतिन सभके एहन वस्तुक अभाव खटकल करैत छन्हि । फुल लोढीलेल सेहो आव फुलवारी सभ नहि रहि गेल अछि जे रंग विरंगक फुल तोरि सखी बहिनपा डाला सजेबाक प्रतिस्पर्धा कऽ सकथि ।

३



बेचन ठाकुरक नाटक-

बेटीक अपमान आगाँ-

अंक दोसर

दृश्य पहिल-

(स्थान- महेन्द्र पंडितक आवास। महेन्द्र पंडित दीपक चौधरीक नडोटिया संगी। दीपक अपन संगी महेन्द्रक ओहिठाम जा रहला अछि।)

दीपक- महेन्द्र बावू, यौ महेन्द्र बाबू, महेन्द्र बाबू।

महेन्द्र- हँ, हँ आबि रहल छी। कने बरतन गढ़ैमे हाथ लागल अछि। बैसू, तुरत अएलहुँ।

(दीपक बैस जाइत छथि। शीध्र महेन्द्रक प्रवेश होइत छन्हि।)

महेन्द्र- जय रामजी की दोस।

दीपक- जय रामजी की।

महेन्द्र- कहु दोस, आइ केम्हर सूर्य उगलैए, कहु कनिया-बहुरिया ओ धिया-पुताक हाल चाल।

दीपक- दोस, अहाँ एखन धरि नहि बुझलौहुँ। कनिया हमर पौरे साल स्वर्गवास भए गेली। खूनी बेमारी भए गेल छलन्हि। मुदा धिया-पुताक कुशल बढ़िया अछि।

महेन्द्र- बेटा-बेटी कए गोट अछि दोस?

दीपक- कहाँ कोनो बेसी अछि। मात्र तीनिटा बेटे अछि बेटी नहि।

महेन्द्र- तहन तँ जीतल छी दोस। अगबे चानीए अछि।

दीपक- दोस अहाँकें?

महेन्द्र- हमहुँ कोनो बेजाए नहि छी। हमरो चारिटा बेटे अछि।

दीपक- तहन तँ अहाँकँ सोने अछि।

महेन्द्र- आब कहु दोस, केमहर-केमहर पधारलहुँ अछि।

दीपक- यएह, बड़का बेटा मोहनक लड़िकीक जोगारमे। अपने गाम-घरमे वा आस-पासमे कोनो नीक लड़कीक नहि अछि?

महेन्द्र- यौ लड़िकीऽ......, लड़िकीक बड़ अभाव देखि रहल छिऐक।हमरा गाममे बेसी लड़िके देखाइत अछि। चौधरी टोलमे एक दिन कियो बजैत छलाह जे हमरा टोलमे नामो लए बेटी नहि अछि। किनको एगो बेटा, किनको दुगो, किनको पाँच गोट।

दीपक- ई तँ समस्या बुझाए रहल अछि दोस। खाइर देखैत छी अपन मामा गाममे जा कऽ। बेस तहन, जय राम जी की।

महेन्द्र- जय रामजी की।

(दीपकक प्रस्थान)

पटाक्षेप

दोसर दृश्य-

(स्थान- सुरेश कामतक मकान। सुरेश कामत दीपक चौधरीक मामा छथिन्ह। दीपक सुरेश ओहिठाम पहुँच रहला अछि। दीपकक ममिऔत भाए सोनू छथि।

दीपक- मामा, मामा, सोनू, सोनू, मामी, मामी।

(दीपक सोर पाड़ैत-पाड़ैत अन्दर घुसैत छथि। फेरि शीध्र मामाक संग प्रवेश। दुनू कुर्सीपर बैस कऽ लड़िका-लड़िकीक संबंधमे गप-सप्प करैत छथि।)

सुरेश- कहऽ भागिन, पहिने घरक हालचाल।

दीपक- माँ सरस्वतीक किरपासँ आ अपने सबहक चरणक दुआसँ सब ठीके अछि मुदा एक गोट गड़बड़ अछि।

सुरेश- से की भागिन?

दीपक- से यएह जे कनियाक मूइलाक उपरान्त हमरा भनसा-भातमे, घर-गृहस्थीमे बड़ कष्ट होइत अछि। कोनहुँ लड़िकीक सुर-पता अछि मामा श्री अपन बड़का बौआ लेल।

सुरेश- हँ हँ, बलवीर चौधरी एक दिन बजैत छलाह जे हमरा एहि बेर एक गोट कन्यादान केनाइ अछि।

दीपक- तहन बुझियौक ने मामीश्री। लड़िकीकेँ भऽ गेलैक वा नहि। लड़िकी अहाँ देखने दिऐक मामा?

सुरेश- हँ, हँ, जरूर देखने छिऐक। लड़िकी तँ सएमे एक अछि।

दीपक- मामाश्री, कने हुनका एहिठाम जा कऽ बुझियौक।

सुरेश- बेस भागिन, अहाँ घर जाउ। जदि लड़िकीकेँ नहि भेल होएतन्हि, तहन ई कुटमैती अवस्स कराए देब।

दीपक- पार्टी केहेन अछि मामा?

सुरेश- पार्टी गरीबे जकाँ अछि। ओना पहिने हमरा बलवीर चौधरी ओहिठाम जाए दिअ तहन ने।

दीपक- बेस, जाउ मामाश्री।

(सुरेशक प्रस्थान)

पटाक्षेप-

क्रमश:

४



नन्द विलास राय

कथा-

चौठचन्द्रक दही-

आइसँ चौठचन्द्र पावनि चारि दिन अछि। चारिम दिन तँ पावनि हेबे करत। तँ ओइ दिन दही नै पौरल जाएत। सोमनी जन्मअष्टमीसँ पहिनहि गुरकी हटया बनगामासँ तीनटा छाँछी आ दूटा मटकुरी किन कऽ अनने छलि। सोचलक जे पहिने कीनलासँ बासन सस्ता हएत मुदा से नहि भेल। पाँचटा माटिक बासन पच्चीस टाकामे भेल। अपना ते नै महिसे छल आने गाइये। सोमनी सोचलक अपना गाए-भैंस नहि अछि तँ की हेतै

सौंसे गाममे तँ गाइये-भैंस अछि। की हमरा दस गीलास दूध नै हएत। जौं दूओ-दू गिलास कऽ कए पाँच गोटे दूध दऽ देलक तैयो पाँचटा बासनमे दही भऽ जाएत। मरर लेल खीर रान्हैले भजैत ओहिठामसँ एक्को गिलास दूध लऽ आनव केनाहिओ कऽ पावनि कऽ लेब।

सोमनी आ मंगल दू परानी। मंगल दिल्लीमे दालि मिलमे नौकरी करैत। सोमनी गाममे खेती-बाड़ीक काज करति। सोमनी-मंगलक परिवारमे पाँच गोटे छल। सोमनी, मंगल, बेटा राधे आ बेटी फूलिया, गुलबिया। पाँचो परानीक नाओपर सोमनी पाँचटा बासनमे दही पौर चौठी चाँद महराजकेँ हाथ उठबैत छलि। सोमनी एक बीघा खेत छल। एकटा बरद रखने छल। गामेमे बीतबासँ हरक भाँज लगौने रहए। नूनू बावूक दस कट्ठा खेतो बटाइ करैत छलि। अपन खेतीक वाद हर बेचीयो लैत छलि। जहिसँ किछु ढउआ सेहो भऽ जाइत छलै। मंगल तँ दिल्लीएमे कमाइत छल तेँ बीतबा सोमनीओक खेतमे हर जोति दैत छल। बीतबाकेँ अपन डेढ़ बीघा खेत छल आ एक बीघा बटाइ करैत छल। तँइ बीतबा सोमनीओक खेत जोति दैत छल। बीतबाकेँ हर जोतैक बदलामे सोमनी बीतबाकेँ खेत रौपि दैत छलि। दुनू गोटेमे मिलानी खुब रहए।

काल्हि चौठचन्द्र छी मुदा आइ साँझ धरि सोमनीकेँ कियो एक्को गिलास दूध नहि देलक। जे ओ कोनो बासनमे दैत। ओकर मन घोर-घोर भऽ गेल। ओ बड़ड खौझा गेलि। अपना आंगनमे खौंझाइत बजलि- ''हमर बेगरता लोककेँ नै हेतै। जँ गाममे रहब तँ आइ ने काल्हि हमरो बेगरता लोककेँ पड़बे करतै। तहिया मन पाड़ि दैबनि।'' माएकेँ खौंझाइत देखि बेटा राधे बाजल- ''माए गै चून चून बाबा जे मरल रहथीन तँ हुनकर भोजमे देखलिऐ पाउडरक दही पौरने। चौकोपर दैखै छीऐ जइ चाहबलाकेँ दूध सधि जाइए तँ पाउडरेकेँ घोड़ि कऽ चाह बनबैत अछि। कह ने तँ चौकपर सँ आधा किलो पाउडर आनि दै छिओ। ओकरा खूब कऽ औँट लिहेँ आ बासन सभमे दही पौर लिहेँ।''

बेटाक बात सुनि सोमनी बाजलि- ''पोडरबला दूधक दहीसँ पावनि कोना हएत।''

राधे बाजल- ''जँ गाए, भैंसक दूध नै भेटलौ तँ की करबीही। पाउडर तँ गाइये महिसिक दूधकेँ बनैत अछि।''

सोमनी गुन-धुन करैत बजली- ''ठीक छै। जँ चौठी चाँद महराज अपना गाए-भैंस नहि देने छथीन तँ पोडरेक दूधसँ पावनि करब। जो भुटकुनक दोकानसँ आसेर नीमनका पोडर नेने आ। आ हे दू टाकाक जोरनले दहीओ लए लिहेँ।''

राधे चौकपर विदा भेल। ओतएसँ पाउडर बला दूध नेने आएल। ओइ दूधकेँ औट दही पोरलक।

आइ चौठचन्द्र छी। भोरे सोमनी राधेकेँ लोटा दऽ कऽ बीतबा ओहिठाम दूध आनेले पठौलक। बीतबा आइ बैसले अछि किएक तँ पावनि छीऐ। राधेकेँ देखिते बाजल- ''लोटा राखि दही दूध खीर रन्हैले हम तोरा माएकेँ गछने छेलिओ मुदा अखन नै हेतौ। साँझमे लऽ जहिहेँ।''

साँझखन जखन राधे दूध आनैले गेल। बीतबा चाहबला गिलाससँ एक गिलास दूध देलक। दूध देखि सोमनी दुखी भऽ गेलि। सोचलक जे एतबे दूधसँ खीर कोना रान्हल जाएत। मुदा कोनो उपाए नहि। तँ ओही दूधमे पानि मिला खीर रान्हलक।

सोमनी चौठी चाँद महराजकेँ हाथ उठबैत कहलक- “हे चौठी चाँद महराज जँ हमरा दरवज्जापर एकटा नीक लगहैर गाए भऽ जाएत तँ अगिला साल एक छाँछी दही आओर देब।”

क्रमश:

५



दुर्गानन्द मंडल, निर्मली

शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द-

कथा पढ़ल चिन्तन कएल, बुझना गेल कथा यथार्त परख अछि जेना कथाकार अपनहि एहि स्थितिसँ गुजरल होनि। यदि अनुभव हमर सत्य तँ सार्थकता शत्-प्रतिशत।

एक कात कथाकार विद्यापतिक भूमिकामे छथि मनमे सिनेह छन्हि जे माए कने ओ भूमिका देख लेती तँ हमरा नीक लागत। एम्हर माए ओलतीमे गुम-सुम बैसल छलीह कारण महाअष्टमीक राति एक टूक अखड़ साड़ी नहि रहलाक कारणे ओ भगवतीक खोंइछ कोना भरती? ई जानि बालक मातृत्व प्रेमवश बावूजीक साखपर कपड़ाबला महाजनक दोकानसँ एकटूक साड़ीक पत्नी माएक हाथमे थमा दैत छथिन। माएक टूटैत विश्वास मायक रूपमे नहि अपितु बेगुसरायक बेटी रूपमे स्पष्ट होइत अछि। हाथक चुड़ी टूटव, काँचक किछु कण माएक हाथमे गड़ब आ टप-टप शोनितक आपादान- कविजीक साखपर दाग सदृश्य बुझना गेल। मुदा सत्य जानि अपन अपराध बोधक अनुभव कऽ माए बैस बालककेँ कोरामे लऽ कऽ सिनेह सागर अविरल धारा प्रवाहित केलनि। सारत्व स्वरूप स्वामीक अर्थात कथाकारक बावूजीक आनल लाल रंगक सिफनक

सोहनगर साड़ी नहि पहिर बालकक आनल सुती साड़ीसँ भगवतीक खोंइछ भरब, प्रभु प्रेमक एकटा अलग पराकास्ठाक परिचएकेँ पाठक बन्धु नहि बिसरि सकताह। कथाक सार्थकतापर इजोत छोड़ैत अछि। जे निश्तुकी एकटा माजल कथाकारक कथा बुझना जाइछ। मुदा जँ माँ.... क जगह कोनो आन उपयुक्त, समुचित शब्दसँ सजवितथि तँ कथामे मैथिली समृद्धता आरो स्पष्ट होइत। शेष सभ चिकनहि चिक्कन। धन्यवाद- ।

१.शिव कुमार झा 'टिल्लू', जमशेदपुर

समीक्षा- मैथिली चित्रकथा २.**जितेन्द्र झा-** नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल ग्लानि

३.***शिव कुमार झा 'टिल्लू'* समीक्षा-** मिथिलाक बेटी (नाटक)

१

शिव कुमार झा 'टिल्लू', जमशेदपुर

समीक्षा

मैथिली चित्रकथा

आठ वर्ख पहिने 'मैथिली' भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल कएल गेल। कतिपय हर्षित भेलहुँ जे हमरो भाखाकँ वैधानिक अस्तित्व देल गेल। मोने-मोन ओहि सभ गोटेक प्रति कृतज्ञता आ मंगल कामना करैत छलहुँ जनिक प्रयाससँ ई काज भेल। मुदा! एकटा कचोट अर्न्तमनकँ हिलकोरि रहल छल जे आगाँ की हएत? अपन भाखाक भविष्य नीक नहि देखि रहल छलहुँ।

एहि व्यथाक सभसँ पैघ कारण छल हमरा सबहक भाषा साहित्यकमे कोनो क्रांतिक आश नहि नजरि आवि रहल छल। वर्तमान पीढ़ी मातृभाषासँ दूर भऽ रहल छलाह। अगिला पीढ़ीक गप्प की कहू? कतेक नेनाकेँ ओलती, चिनुआर, थान, छान-पग्घाक अर्थ बूझल अछि? जौं कोनो अभिभावकसँ पूछैत छी जे नेनासँ अपन वयनामे गप्प किए नै करैत छी तँ जवाब भेटैत अछि जे स्कूल जाएत तँ हिन्दी आ अंग्रेजी नहि बूझत तँ अखनेसँ सिखा रहल छी। नेनोमे चेतना नहि किएक तँ वाल-साहित्य मैथिलीमे लिखले नहि गेल। जौं किछु अछि तँ ओकर अर्थ कतेक नेना बूझैत छथि। महान लेखक वा कविक श्रेष्ठ भाषामे लिखल रचना हम नहि बूझैत छी तँ हमर धीया-पूता कोना बूझतथि? एहि मध्य मैथिलीमे विदेह-सदेहक पदार्पण भेल। नव रूप, नवल सोच आ सकारात्मक दृष्टिकोणक संग। मौलिक विन्दुपर रचना होअए लागल। उपेक्षितकेँ नव आश भेटल। साहित्य आन्दोलनक एकटा परिणामक चर्च हम पाठकसँ कऽ रहल छी- मैथिली चित्रकथा- श्रुति प्रकाशन दिल्ली द्वारा विदेहक सौजन्यसँ ई पोथी सन् २००८मे बहराएल। एहि पोथीक लेखिका छथि श्रीमती प्रीति ठाकुर। हिनक ई दोसर रचना थिक। विषय पूर्णत: नव, बाल साहित्यक चित्रकथा। हम एहिसँ पूर्व एहि विषयक पोथी मैथिलीमे नहि देखने छलहुँ। एकरा रचना नहि कहल जा सकैछ, किएक तँ एहिमे कोनो साहित्यक सृजन नहि, लोक कथा आ जन-श्रुति जे मिथिलामे पहिनेसँ सुनल जा रहल छल ओकरा चित्रक संग चर्च कएल गेल अछि। एहि प्रकारक जन श्रुति गाम-गाममे बूढ़-पुरानक मुँहसँ बाजल जाइत छल मुदा आव विलीन भऽ रहल अछि। ओहि विलुप्त विषयपर चित्रकथा लिखि प्रीति जी बड़ड नीक काज कएलनि। एहि पोथीमे जे विशेष आ नव सकारात्मक पक्ष देखलहुँ ओ अछि- विषयक आ कथाक चयन। सम्पूर्ण मिथिला एहिमे समाएल छथि। सभ जाति समाजक लोक-कथाक चित्रण कएल गेल अछि। मोती दाइ कथामे रजक जातिक निष्ठाक चित्रण तँ राजा सलहेसमे दूधवंशीक भावनाक व्याख्या। मिथिला दरवारक वोधि-कायस्थक गंगा लाभ मनोरम लागल। बहुरा गोधिन आ नटुआ दलाल बेगूसरायक लोक कथा थिक। पहिने लोकक मानसिकता छल जे बेगूसरायक लोक मैथिली भाषी नहि छथि। हमरो मर्म होइत छल किएक तँ हमर मातृक बेगूसरैए जिलामे अछि। एहि कथाकँ पढ़ि तिरहुतिया आ दछिनाहाक भेद हियासँ मेटा गेल।

हमरा सबहक समाजक एकटा उपेक्षित जाति छथि- मुसहर। मुसहरोमे दूटा आदर्श पुरूष भेल छलाह दीना आ भद्री। ओहि दीना भद्रीक कथा बड़ड नीक लागल। पहिने बूझैत छलहुँ जे तपस्वी वनवाक लेल वौद्धिकता आ भौतिकता पैघ मापदंड थिक, मुदा आव ई भ्रम दूर भऽ गेल। एहि प्रकारे बहुत रास कथाक चित्रण कएल गेल अछि।

एकबेरि आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल आ बेचन ठाकुर जीक रचना पढ़ि हम लिखने छलहुँ जे **'विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन' मैथिली पर लागल जातिवादी कलंककँ धो देलक।** जौं ई गप्प सत्य अछि तँ ओहिमे एहि पोथीक भूमिकाकँ नहि नजरि अंदाज कऽ सकैत छी। वर्तमान पीढ़ीक लेल प्रेरणादायी आ अगिला

पीढ़ीकेँ मैथिलीक प्रति सिनेह जगावए लेल ई पोथी प्रासंगिक अछि। भाषा संपादन नीक लागल। चित्रक स्तर बड़ सुन्नर आ व्यापक अछि। श्रुति प्रकाशन सेहो धन्यवादक पात्र छथि। नीक कागतक प्रयोग कएलन्हि आ चित्रक रंग संयोजन सेहो सेहंतित लागल।

अंतमे हम प्रीति जीकेँ धन्यवाद दैत छिअनि जे हमरा सबहक बीच एकटा झाँपल विषएपर लेखनीक प्रयोग कएलनि। आगाँ सेहो हम आशा करैत धन्यवाद ज्ञापन करैत छी।

पोथिक नाम- मैथिली चित्रकथा

प्रकाशन वर्ष- २००९

लेखिका- प्रीति ठाकुर

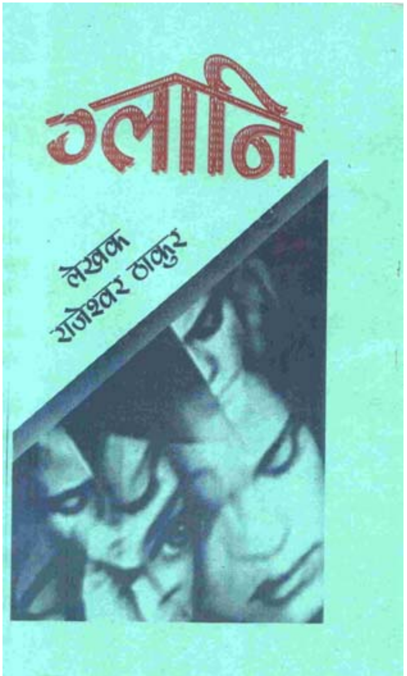
प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन, राजेन्द्र नगर- दिल्ली।

दाम- १००टाका मात्र

पोथी प्राप्ति स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स वार्ड न. ६ निर्मली, सुपौल, मोवाइल न. ०९५७२४५०४०५

२

**जितेन्द्र झा-** नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल ग्लानि



नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल ग्लानि-

मैथिली भाषामे उपन्यास विधामे न्युन रचना भऽ रहल कहैत साहित्यकारसभ चिन्ता व्यक्त कएलनि अछि । नेपालसँ मैथिलीमे एखन धरि मात्र चारिटा उपन्यास प्रकाशित भेल कहैत साहित्यकारलोकनि औपन्यासिक कृति लेखन आ प्रकाशन नइँ हएब दुखद रहल मन्तव्य व्यक्त कएलनि अछि ।

राजेश्वर ठाकुर रचित ग्लानि मैथिली राजनीतिक लघु उपन्यासके साओन २७ गते राजधानीक भृकुटीमण्डपमे आयोजित कार्यक्रममे विमोचन कएल गेल । प्राज्ञ रामभरोस कापडि 'भ्रमर' ठाकुरक प्रथम कृति ग्लानिके विमोचन कएलनि । भ्रमर नेपालीय मैथिली साहित्यकार उपन्यास रचना करबादिस रुचि नइँ देखौने छथि कहलनि । नेपालमेँ कुल १ सय पचासटा मैथिली पुस्तक प्रकाशित अछि जाहिमे उपन्यासक संख्या मात्र चारि रहल हुनक कहब छलनि । उपलब्ध चारिटा उपन्याससेहो आह्लादकारी नइँ रहल टिप्पणी भ्रमरके छलनि ।

राजेश्वर ठाकुर ग्लानिक सम्बन्धमे कहलनि जे उपन्यासक प्रमुख पात्र रमेश अछि जे मधेश आ मधेशीके हक अधिकारके लेल लडऽ चाहैत अछि । गजेन्द्र बाबुके मधेश आन्दोलनमे रमेश नौकरी छोडिकऽ कुदि जाइत अछि मुक्ति कामनाक सँग । पहाडिया शासन प्रवृतिक विरोधीक रुपमे आगु बढैत रहैत अछि रमेश । मुदा सत्ता लिप्सामे डुबि जाइत अछि राजनीतिक व्यक्तित्वसभ । एहन अबस्थामे रमेशके ग्लानि उत्पन्न होइत छैक आ लघु उपन्यासक जन्म होइत अछि ।

ओही अवसरमे मन्तव्य दैत डा रामदयाल राकेश राजेश्वर ठाकुरक ग्लानि कृतिसँ मैथिलीक उपन्यास साहित्यमे एकटा नव अध्याय जुडल कहलनि । कार्यक्रममे सहभागीसभ नेपालीय मैथिलीमे उपन्यास विधामे कलम चलएबादिस साहित्यकारसभके लगबाक आग्रह कएने रहथि । कार्यक्रममे डा गंगा प्रसाद अकेला गोपाल अश्क संचारकर्मी चन्द्रकिशोर झा सहितके व्यक्ति सहभागी रहथि ।

३.



शिव कुमार झा 'टिल्लू'

जमशेदपुर

समीक्षा-

मिथिलाक बेटी (नाटक)

इसा संवत् सन २००८सँ लऽ कऽ वर्तमान कालकेँ अद्यतन मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक क्रांति-काल कहल जा सकैत अछि। एहि अवधिमे रंग-विरंगक साहित्य सरितासँ सजल पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ भेल अछि। जाहिमे प्रमुख अछि- विदेह ई पत्रिका, विदेह-सदेह, मिथिला दर्शन (पुनर्प्रकाशन), पुर्वोत्तर मैथिल, झारखंडक सनेस, नवारम्भ, मिथिला सृजन आदि-आदि। एहि पत्र-पत्रिकाक प्रयाससँ नव-नव साहित्यकारक प्रवेश मैथिली साहित्यमे भेल। जाहिमेसँ किछु साहित्यकार तँ अपन रचनासँ मिथिलाक मानस पटलपर एहेन स्थान बना लेलनि जाहिसँ हुनका जौं काल पुरूष माने मेन ऑफ टाइम कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि हएत। एहि रचनाकारक भीड़मे एकटा साम्यवादी आ बहिर्मुखी प्रतिभासँ सम्पन्न रचनाकार छथि- श्री जगदीश प्रसाद मंडल। हिनक व्यक्तिगत जीवन कोनो रूपक हो मुदा साहित्यिक सृजनशीलतासँ हिनका बहिर्मुखी व्यक्तित्वक व्यक्ति कहल जा सकैत अछि।

हिनक पहिल रचना 'विसाँढ़' आ 'भैँटक लावा' घर-बाहरमे आ दोसर रचना 'चुनवाली' मिथिला दर्शनमे प्रकाशित होइते मैथिली पत्रिकाक संपादक मंडलक संग-संग प्रबुद्ध पाठकक मध्य हड़होरि मचि गेल। 'पहिने आउ आ पहिने पाउ'क आधारपर विदेहक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर हिनक रचना सभकेँ अपन पत्रिकामे छपाबए लेल हथिया लेलन्हि। एहि प्रकारक शब्दक प्रयोग करवाक हमर तात्पर्य अछि जे जगदीश जी कोनो नव रचनाकार नहि छथि, तिरसठि बर्खक माजल साहित्यकार छथि, मुदा हिनक रचनाक प्रदर्शन नहि भेल छल। समग्र रचनासंसार हिनक पुत्र उमेश मंडल जीक कम्प्यूटरमे ओझराएल छल किएक तँ छपयवाक लेल कैंचा कतएसँ अएत?

आदरणीय संपादक गजेन्द्र ठाकुरक विशेष अनुग्रह आ श्रुति प्रकाशनक अधिष्ठाता श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारी जीक कृपासँ हिनक एकसँ वढ़ि कऽ एक रचना हथिया नक्षत्रक गनगुआरि जकाँ पाठकक आगाँ आवि रहल अछि। एहि पुष्पांजलि महक एकटा फूल लऽ हम पाठकक सोझा राखि रहल छी- 'मिथिलाक बेटी।' मिथिलाक बेटी एकटा नाटकक नाम अछि। शीर्षकसँ स्पष्ट होइत अछि जे हमरा सभक समाजक वनिताक आस्तित्व आ अस्मितासँ एहि रचनाक संबंध अछि। मुदा....... पोथीक गर्भावलोकनक वाद हमर मोनसँ ई भ्रम भागि गेल। एहिमे समाजक विषमताक स्पष्ट दर्शनक अनुभूति भेल। जगदीश जी साम्यवादी विचार धाराक सम्पोषक छथि, तँ समाजमे पसरल व्याधिपर श्रमक विजय, श्रमजीवीक विजय, दृष्टिकोणक विजय, इमानक विजय, सम्यक भौतिकताक विजय, वौद्धिक आ चेतनाक विजय देखयवाक प्रयास कएलनि।

पाँच अंकक एहि नाट्कमे नौ गोट पुरूष पात्र आ पाँचटा नारी पात्र छथि। रचनाक केन्द्र विन्दु छथि पैंतालीस वर्खक विकट पुरूष पात्र- बावू कर्मनाथ- एकटा प्रशासनिक अधिकारी। विकट एहि दुआरे किएक तँ भ्रष्ट समाजक मध्य कर्तव्यपरायण इमानदार व्यक्ति आ बावू एहि दुआरे किएक तँ अधिकारी छथि। स्नातक उर्त्तीर्ण कएलाक वाद हिनक पिता सोमनाथ हिनक विवाह एकटा भौतिकवादी परिवारमे पक्का कए लेलनि। द्रव्य, धन धान्य आ बीस विघा जमीनक जुआरिमे। मुदा ओ कर्मनाथ जीक मौन समर्थनक आशमे बैसल छलाह। एहि मध्य जेठ मासक गरमीमे एकटा कायाहीन आ निर्धन व्यक्ति हिनक दलानपर अएलनि। व्यथित आ थाकल अपन कन्याक हेतु वर तकवाक क्रममे सोमनाथक दलानपर अचेत भऽ गेलाह। सोमनाथसँ हुनक व्यथा नहि देखल गेल। ओहि गरीबक कन्यासँ वियाह करवाक लेल आतुर भऽ गेलाह। कालान्तरमे ई वियाह सम्पन्न तँ भऽ गेल मुदा, परिवारमे सामंजस्य नहि रहि सकल। पिता सोमनाथ आ दू भाँइ क्रमश: नूनू आ लालबावू हिनक निर्णएसँ दुखी भऽ गेलनि, किएक तँ कुवेरक भंडारक आशपर कर्मनाथ जी नोन छीटि देलनि। प्रतिभाशाली छात्र कर्मनाथ प्रशासनिक अधिकारी बनि गेलाह परंच हिनक इमान भौतिकतापर भारी पड़ि गेल जाहिसँ नव-नव समस्या उत्पन्न भऽ गेल। पत्नी चमेली, पुत्र फुलेसर आ पुत्री दूय चम्पा आ जूही- ई अछि हिनक परिवार। भावक सर आ विश्वासक शतदलक संग जीवन क्रम चलैत रहल। पिता सोमनाथ अदूर्दर्शी व्यक्ति छलाह, जाहिसँ अन्य दुनू पुत्र अवण्ड भऽ गेलनि। कर्महीन नूनू आ लालबावू जथा बेचि-बेचि कए कर्मनाथक बरावरि करवाक प्रयास कऽ रहल छलथि। पितासँ महिमा मंडित होएवाक कारणें दुनूक जीवन नारकीय भऽ गेल। परिवारक दशा ओ दिशाकेँ देखि कऽ कर्मनाथक माए आशाक आश टूटि रहल छल। कर्मनाथ जीक पितृ परिवारमे मात्र हिनक माएक व्यक्तित्व सोझराएल छल। किएक नहि रहत, सभ माएक इच्छा होइत अछि हुनक पुत्रक नाओसँ समाज गौरवान्वित होअए।

जगदीश जी एहि नाट्य कथाक नायकक स्पष्ट उद्घोषण नहि कएलनि मुदा, हमर मतसँ एहि नाटकक नायक छथि विकास, एकटा सेवा निवृत्त शिक्षक। आदर्श आ सहज विचार धाराक व्यक्ति श्री विकास अपन समाजक चितंक छथि। मिथिलाक गाम एखनो विकासक धारामे पाछाँ पड़ल अछि। शिक्षाक अभाव, सामाजिक समरसताक अभाव आ साधनक अभावक कारण विकास सन प्रबुद्ध व्यक्तिक ग्राम्य समाजमे आवश्यकता अछि। गामक प्राय: नव आ अधवयस पीढ़ी हुनक छात्र रहलनि अत: हुनक सलाहकेँ मानैत

छथि। श्रीचन किसान हाटपर प्रचार करवाक लेल आएल शंकर बीज कंपनीक प्रलोभनमे आवि टमाटरक विदेशी बीआ खरीद लैत छथि। टमाटर उपजाक कोन कथा जे लत्तिओ गलि गेल। श्रीचन संताप आ क्रोधक मारे आकुल छलाह। विकास जी हुनका सान्त्वना दैत कहलनि जे प्रचारक चकाचौंधमे नहि अएवाक चाही अपन स्वदेशी वस्तु ओहि विदेशी समानसँ सोहनगर अछि। विकास जीक प्रयासँ कर्मनाथक पुत्री चम्पाक वियाह रामविलास मिस्त्रीक पुत्र मदनसँ तँए कएल गेल। एहि वियाहकेँ केन्द्र विन्दु मानि एहि पोथीक रचना कएल गेल अछि।

आव प्रश्न उठैत अछि जे एहि पोथीमे नव की भेटल? मिथिलाक बेटी नाट्क 'कर्म प्रधान विश्व करि राखा' सिद्धान्तक आधारपर लिखल गेल अछि। एकटा कर्मठ आ इमानदार व्यक्तिकेँ समाजमे की-की सहय पड़ैत अछि, ओहि परिपेक्ष्यक मार्मिक चित्रण कएल गेल अछि। कथाक मूलमे कर्मनाथक वियाह क्रममे आएल एकटा गरीब (चमेलीक पिता) व्यक्तिक मनोदशाक प्रस्तुति नीक अछि। ओ व्यक्ति गरीब छथि मुदा 'चार्वाक दर्शन'क पालक। 'पेटमे खढ़ नहि सिंहमे तेल' जेवीमे कैंचा नहि मुदा नौ हन्नाक बटुआ जाहिमे भोगक वस्तु छलिया सुपारी पान आ तमाकू। हमरा सबहक गाममे एहिना होइत अछि, भोजन नहि मुदा, पान अवश्य। पग-पग पोखरि माछ मखान... मधुर बोल मुस्की मुख पान... नेना पढ़लक, नहि पता, कनियाकेँ पथ्य भेटल नहि जनै छी, बेटीक लेल दूध अछि... नहि। मुदा! पान अतिआवश्यक, हाथी मरि गेल, छान आ पग्घा लऽ कऽ बौआ रहल छी। कर्मनाथक अपन पत्नी चमेलीक संग वार्तालापमे 'खट्टर ककाक तरंग'क दर्शन होइत अछि। गाममे प्रचलित लोकोक्तिक हास्य मुदा, सत्य प्रस्तुति।

कर्मनाथ जीक पुत्रक नाम फुलेसर प्रशासनिक अधिकारी भऽ कऽ एहेन नाम.....। एहिसँ हुनक गामक प्रति सिनेहक झाँकी भेटैत अछि। गाममे एहने नाम सभ होइत अछि। अपन दुनू पुत्री आ पुत्रकेँ छायावादी रूपमे जीवनक शिक्षा दैत छथि..... कर्मनाथ। एना करव आवश्यक किए तँ एहिसँ जिज्ञासा बढ़ैत अछि। राम विलास सेवा निवृत मिस्त्री छथि। वाल्यकाल साधनक अभावमे, युवावस्था संघर्षमे विता कऽ भौतिक साधन प्राप्त कएलनि। जीवनक अंतिम पड़ावमे माधुरीसँ माने अपन पत्नीसँ अपन जीवन-यात्राक व्याख्यान करैत छथि, आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ। जिनका संग चालीस बर्खक यात्रा कएलनि ओ हिनक जीवन दर्शन नहि जनैत छलीह। हमरा सबहक समाजमे एहि प्रकारक घटना होइते अछि। गरीव नेनपनक वाद सोझे प्रोढ़ भऽ जाइत छथि। जे कर्मवादी छथि हुनक अंतिम अवस्था सुखमय नहि तँ......। अपन कर्मक नावकेँ कलकत्तामे मजवुत कऽ सोझे गाम आवि जाइत छथि। मातृभूमिक प्रति सिनेह, गाममे गैरेज खोलवाक योजना अछि। चौघारा घर बनाएव, दलान अवश्य रहत, किएक तँ दलान समाजक मर्यादा थिक गामक जीवन शहरसँ सुखमयी अछि। एहि पोथीमे पलायनवादक विरोध कएल गेल अछि।

कर्मनाथक चरित्र पंडित गोविन्द झा लिखित 'वसात' नाटकक नायक कृष्णकान्तसँ मिलैत अछि। राम विलास जीवन संघर्षमे विजयी भेलाह तँ पुत्रक वियाह आदर्श करताह। विकास जीक चरित्र नाटकक लेखक जगदीश बावूसँ मिलैत अछि। साम्यवादी, ग्रामीण सभ्यताक दिग्दर्शक। एहि पोथीमे जातिवादी व्यवस्थाक विरोध कएल गेल अछि। आन गामक स्वजातीयकेँ भोजमे निमंत्रण देवासँ अनिवार्य अछि अपन गामक सभ जातिकेँ आमंत्रित करब। किएक तँ वेर-कुवेरमे पॉजरि लागल लोक काज दैत छथि, चाहे ओ कोनो जातिक हो।

एहि पोथीमे जीवनक सभ रूपक व्यापक दर्शन कएल गेल अछि। कुलीन व्यक्ति जनिक परिवार नीचाँ मुँहे जा रहल अछि ओहि परिवारक कन्याक वियाह उर्ध्वमुखी साधारण परिवारक पुत्र (जे आव सम्पन्न छथि) हुनकासँ भऽ सकैत अछि। एहि पोथीमे अन्हारपर इजोतक विजय देखाओल गेल अछि। भौतिकतापर बौद्धिकता आ सम्यक जीवनक जीत एहि पोथीक केन्द्र विन्दुमे समेटल अछि पुत्रक वियाहमे तिलक लेवासँ वेसी अछि कुलीन कन्याक चयन। सम्पूर्ण पोथीमे देशज शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। पोथीक अंतिम पृष्ठपर श्री गजेन्द्र ठाकुरक कथन मैथिली साहित्यक इतिहास (जगदीश प्रसाद मंडलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मंडलसँ) पढ़लहुँ पहिने तँ अनसोहाँत लागल मुदा पोथीक अध्ययन कएलाक पश्चात् हमरा सहज लागल। भाषा अत्यन्त सामान्य मुदा रस, अलंकार आ छंदसँ परिपूर्ण अछि। कलात्मक शैलीमे जगदीश जी अंक-अंकमे अपन दर्शनकेँ सहेजि लेने छथि। हिनक ई रचना कोनो विशेष कथाकार वा नाटक कारसँ प्रभावित नहि। हिनक रचनामे राजकमल जी, पंडित गोविन्द झा, हरिमोहन बावू, धूमकेतु, गुलेरी जी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, ललन ठाकुर सन रचनाकारक शैलीक मिश्रित दर्शन होइत अछि। मिथिलाक बेटी अर्थनीतिसँ प्रभावित अछि मुदा, सम्यक अर्थनीतिसँ। अर्थपर मानवताक विजय, जगदीश जीक विश्वास नीक लागल।

जेना कोनो व्यक्ति पूर्ण नहि भऽ सकैत अछि तहिना कोनो रचनाक संग होइत अछि। 'मिथिलाक बेटी'पोथीमे किछु त्रुटिक दर्शन सेहो भेल। प्रथमत: एहि पोथीक शीर्षक अप्रासंगिक लागल। बेटी तँ एहि दर्शनक माध्यम मात्र अछि, स्त्रोत नहि। एहिमे मानवीयताक जीत देखाओल गेल अछि बेटीक जीवन तँ घटना मात्र थिक।

एहि नाटकक भाषा सरल मुदा, शनै: शनै: गमनीय अछि तँ मंचन करवाक योग्य नहि, मुदा एकर कलात्मक मंचन कएल जा कएल जा सकैत अछि।

निष्कर्षत: जगदीश प्रसाद मंडल जी हमरा सबहक बीच एकटा नव जीवनक आयाम लऽ कए आएल छथि। बहुरंगी जीवनक आयाम आ सकारात्मक सोचक आयाम। मानवीय मूल्य एखनो धरि जीवित अछि। एहि तरहक घटना कठिन अछि मुदा असंभव नहि। विश्वास आ कर्मक संग जीवन जीवाक प्रयत्न करवाक चाही। एहि पोथीक शब्द-शब्दमे झंकार अछि। भाषा प्रवाहमयी लागल। प्रकाशन दलक प्रयास नीक, शब्द संयोजन आ संपादन अति उत्तम। धन्यवाद।

पोथीक नाम- मिथिलाक बेटी

रचनाकार- जगदीश प्रसाद मंडल

प्रकाशक- श्रुति प्रकाशन राजेन्द्र नगर दिल्ली।

मूल्य- १६० टाका मात्र।

प्रकाशन वर्ष- सन् २००९

पोथी पाप्तिक स्थान- पल्लवी डिस्ट्रीब्यूटर्स, वार्ड न.६, निर्मली, सुपौल, मोवाइल

न. ९५७२४५०४०५

१.  मनोज झा मुक्ति -महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान २.-

सुशान्त झा- मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य



मनोज झा मुक्ति -महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान

'अपना गामठामक विकास करबाकलेल सरकारी पाई एन.जि.ओ. या आ.एन.जि.ओ.क आवश्यकता नहिं अछि आवश्यकता अछि त सकारात्मक दृष्टिकोणकेँ आ अपना माटिप्रतिक आस्था एवं आत्मबलकेँ' यैह नारा लऽ कऽ महोत्तरी जिलाक यूवा शंखनाद कएने अछि देशके सुन्दर बनएवाक अभियानकेँ ।

जौँ पाइयक बलपर विकास भऽ सकैत त नेपालक सभ गाम स्वर्ग भऽ गेल रहैत । नेपालक कोनहुँ स्थान विकाससँ बञ्चित नईं रहैत । सरकार नेपालक प्रत्येक गामें प्रतिवर्ष २० सँ ३० लाख अनुदान दैत अछि जिला विकास समितिक मादे अरबोक बजेट रहैत अछि विकासकलेल से अलग सँ । एकरा अतिरिक्त सभासद सबके क्षेत्र विकासलेल बजेट भेटैत अछि तकर बाते छोडु । तहिना समाज आ देशक विकास हेतु एन.जि.ओ. आ आ.एन.जि.ओ. मार्फत नेपालमे प्रति वर्ष खरबो रुपैया अवैत अछि ताइसँ कतऽके विकास होइत अछि भगवाने जानथु ।

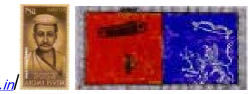
चाहे गामक कोनो पार्टीक नेता हुए जे गामक विकासकलेल गा.वि.स.के प्रतिनिधि बनल करैत छथि या जिला विकास समितिमे पार्टीक प्रतिनिधि बनैत छथि जँ ओसब अपना कर्तव्यप्रति कनिक्को सचेत रहितथि त नेपालक गामसब पूर्ण नहि त बहुत विकसीत भऽगेल रहैत । अपना गामकलेल या जिलाक लेल आएल बजेटमेंसँ कमीशन खाकऽ कागजपर विकासक काज गा.वि.स. सचिव आ जि.वि.स.क एल.डि.यो.सँ करौनिहार नेतेसबके एहि तरहक रवैया अछि तहन कोना भऽ सकत नेपालक विकास ? आश्चर्य त तखन लगैत अछि जखन देश विकासक लेल आएल बजेटके खएनिहार नेतासब अपनाके देश आ जनताक हितैषी आ अगुवा कहैत नईं थकैत अछि । ईमान्दारी आ सत्यपर सँ आम जनताके विश्वास उठाबऽमे नायकक भूमिकामे रहल

अधिकांश कमिशनखोर नेताक कारण किछु ईमान्दार एवं नैतिकवान राजनीतिकर्मीसब अनेरे बदनाम भेल करैत अछि । ताँए जरुरी अछि आम जनतामे आत्म विश्वास जगएवाक आ सत्यपर भरोषा बढएवाक । आ एकर शुरुवात कऽ रहल अछि महोत्तरी जिलाक किछु यूवासब ।

महोत्तरीमें अभियानमे लागल यूवाक कहब छन्हि 'अपना गामठामक विकास करबाकलेल सरकारी पाई एन.जि.ओ. या आ.एन.जि.ओ.क आवश्यकता नहिं अछि आवश्यकता अछि त सकारात्मक दृष्टिकोणकेँ आ अपना माटिप्रतिक आस्था एवं आत्मबलकेँ' । ओसब अभियानक शुरुवात कऽ रहल छथि वृक्षारोपणक काजसँ । जखन हुनकासबसँ जिज्ञासा राखल गेल कि वृक्षेरोपण किया ? त हुनक कहब छन्हि ' गामघर या जिलामे जत्र तत्र व्याप्त भ्रष्टाचारके एक्कहिवेर कम नहि कएल जा सकैय । कोनो गाममे जौँ कोनो विकास निर्माणक काज होइत अछि त स्थानिय नेता कार्यकर्ता या यूवा ओहि काजमे निक जकाँ अभिरुचि लैत अछि । मुदा दुर्भाग्यक बात हूनका सबमेंसँ ९८ प्रतिशत लोकक अभिरुचिक अभिप्राय रहैत छन्हि कमिशन लेवाक काज चाहे कागजेपर किए नई भऽ जाय । ताँए पहिने काज कएल जाए तकरा बाद कर्मचारी जनता आ नेताके सचेत करबाक काज शुरु हुए ।'

अपना अभियानक शुरुवात ओसब नेपालक गाम ठाममें वृक्षारोपण क कऽ करऽ चाहैत छथि । हुनकसबहक कहब छन्हि 'काज ककरो देखयवाकलेल नहिं होएवाक चाही अपना आपसँ इमान्दारिता करैत काज करैत जाउ लोक चाहे जे कहय । जँ नीक काज करबई त दुश्मनो के ई कहैएटा पडतैक जे '....ओना त छौंडा बदमाश अछि मुदा काज नीक कऽ रहल अछि ।' एहि उद्देश्य ल कऽ हमसब जतबे सकब सबहक सहयोगसँ नेपालक कोना कोनामें वृक्षारोपण करब आ कराएब । ओसब अपना वृक्षारोपणक अभियानमें आम देशवासी सँ एहि तरहक अनुरोध कएल करैत छथि ' हमरा सबहक वृक्षारोपणक अभियानमें जँ आँहाँ सहयोग करऽ चाहैत छी त एकटा बाँस दऽ दिय नहिं त एकटा कोनो फूलक या फलक गाछ दऽ दिय । जँ से नहि त एकदिन आबिकए पानि पटा दिय नहिं त सप्ताहमे आधा घण्टा आबिकऽ वृक्षारोपण स्थलमें बैसि जाऊ । जँ आँहाँलग समयक आभाव अछि आँहाँ कर्मचारी छी त अपना गाम गेल वेरमे अपना खेतमे या दरबज्जापर एहि अभियानक नामपर एकटा अपना नीक लागऽबला वृक्ष लगालिय आ नहिं त जँ आहाँके ई अभियान नीक लगैय त कम स कम हमरा अभियानी मीत्रके हौसला बढादिय । हमर स्वार्थ याह अछि जे केओ कतौ गाछ वृक्ष लगाओत या लगौने हायत त ओकर आक्सिजन हमहुँ लेब आ सबकियो लेत बटोहीके रौदमे छाहरि भेटतैक एवं बहुतो गरीबकेँ घरक आँचकलेल ओकर पात काज औतैक । ताएँ सब गाम शहरकेँ फूल आ वृक्षसँ सजाबी जतऽ किछुदेर कियो वैसिकऽ स्वच्छ हावा लऽ सकय ।'

तहिना ओ सब कहैत छथि जे जतेक नेताके देखू सब देशे विकासके बात करत । आर्मी पुलिस कर्मचारी देशक या कहु माटिक सपथ खाइत रहत । पत्रकार या बुद्धिजीवि दिन राति देशक उन्नतिक गप्प करैत नईं थाकत । जे अपनाके जनता कहैत छथि ओ सब दिन राति नेतासबके गारि पढैत नहिं थकैत छथि जे नेतासब देशके बेच देलक । एकर मतलब जे गारि पढनिहारक भीतर सेहो देश या कहु माटिप्रतिक सिनेह छन्हि ताईमें दू मत नहि । एहि बातक विश्लेषण करैत अभियानी यूवा सब सम्पूर्ण नेपाली सँ एहि तरहें अभियानमे जुटवाक आग्रह करवाक सोंच बनैने छथि 'सबकियो अपन काज करैत अपना माटिकलेल किछु कऽ सकैत छी । जौँ आहाँ किसान छी सबदिन अपना खेतमे काज करु आ ४÷५ दिनमें एक घण्टाकलेल कोनो दोसर चौरी÷बाधमे टहलि जाऊ आ ककरो खेतक लगाओल बालीमे कोनो प्रकारक रोग या गड़बड़ी देखाइत



अछि त सम्बन्धित किसानकेँ सलाह दऽ दियौक । जौँ आँहाँ शिक्षित छी आ अपना कोनो काजमे लागल छी या कर्मचारी छी त अपना ड्यूटीक अतिरिक्त प्रतिदिन÷दूदिनक एक घण्टा नियमित रुपसँ ओतुक्का बच्चाके पढ़ा देल करियौ । एहिं तरहें अपन काजके हर्जा नहिं करैत अपन नियमित जेब खर्चमे कटौति ककऽ अपना धर्तीकलेल बहुत किछु कऽ सकैत छी । जँ हमसब एहि तरहक काज करबैक त विकासक नामपर पाइ हजम करऽबला सबके आँखिमे अवश्य लाज लगतैक आ एकदिन हमरो धर्ती हँसबेटा करतैक ।'

महोत्तरीक यूवाक अभियानक आहाँके नीक लगैय जौं अहुँ एहि अभियानक सहयात्री बनऽ चाहैतछी त जुटि जाऊ आइए सँ आ अहुँ शंकनाद कऽ दिय अपना गाममे वृक्षारोपणक अभियानक संग।

२.सुशान्त झा

मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य

समाद पर मिथिला आ बिहार सं संबंधित लेख पढि कय ओतय चलै बला विकासपरक गतिविधि के अंदाज लागि पाबैये। इम्हर हमर एहेन मैथिल मित्र के संख्या मे बड तेजी सं बृद्धि भेलय जे बिहार या मिथिला के विकास के बारे मे जानय त चाहैत छथि लेकिन जखन समाद पर मैथिली मे लेख पढ़य कहबनि त दिक्कत भय जाय छन्हि। हुनका मैथिली बाजय त अबै छन्हि लेकिन पढ़य नहि आबै छन्हि। ओ हिंदी बड आराम सं पढ़ लैत छथि लेकिन मैथिली पढ़य मे दिक्कत के वजह सं ओ मैथिली साईट पढ़िते नहि छथि। ई बड़ड पैघ समस्या अछि।

देखल जाय त अमूमन जे कोनो भाषा के अपन लिपि जीवित छैक ओकरा पढ़ैबला के कोनो दिक्कत नहि होईत छैक-कारण जे ओ बच्चे सं ओहि भाषा के ओहि लिपि मे पढ़ै के अभ्यस्त होईत अछि। जेना तमिल, तमिल मे लिखल जाईत अछि, त एकटा औसत अंग्रेजीदां तमिलभाषीयो के ओकरा पढ़ै मे कोनो दिक्कत नहि होईत छैक। लेकिन कल्पना करु कि अगर तमिल के देवनागरी मे लिखल जाई त की होयत ? ओ आदमी तमिल त बाजि लेत-चूंकि ओ ओकरा अपन माय या परिवार के अन्य सदस्य के मुंह सं सूनि क सिखलक अछि-लेकिनि ओकरा पढ़ै मे बड़ड दिक्कत हेतैक। ओकरा देवनागरी लिपि सेहो सिखय पड़तै। हमर भाषा संगे येह दिक्कत अछि। मैथिली के अपन लिपि त छैक, लेकिन ओ देवनागरी मे लिखल जा रहल अछि-जाहि

लिपि मे हम सब सिर्फ हिंदी पढ़ै के आदी छी। अधिकांश मैथिली बजै बला के मैथिली त आबै छन्हि-कियेक त ओ सुनि कय सिखने छथि लेकिन ओ पढ़ि नै सकै छथि, कियेक त पढ़ैके आदत हुनका हिंदी के छन्हि।

ई बात स्वीकार करय मे हमरा कोनो संकोच नहि जे हमर भाषा हिंदी के भाषाई साम्राज्यवाद के शिकार भेल अछि। ई संकट मैथिलिये टा संग नहि, बल्कि हिंदी क्षेत्र के तमाम भाषा जेना अवधी, भोजपुरी, ब्रज, राजस्थानी सबके संगे छै। देखल जाय त भोजपुरी कनी नीक अवस्था मे अछि कारण जे एकरा बाजार सेहो सहयता कय रहल छैक। लेकिन जेना-जेना शहरीकरण बढ़ि रहल अछि देश मे छोट-छोट भाषा आ बोली के स्पेश खत्म भय रहल अछि। देश के एकात्मक स्वरुप के विकास के लेल हिंदी आ अंग्रेजी अनिवार्य बनल जा रहल अछि। हलांकि दक्षिण के प्रांत आ उत्तर मे बंगाल या उड़ीसा अहि स बहुत हद तक मुक्त अछि-ओना संकट ओतहु कम नहि। हमर भाषा मैथिली जनसंख्या के आकार, भौगोलिक स्थिति, प्राचीनता आ व्याकरण के दृष्टिकोण सं कोनो भाषा सं कम नहि लेकिन तैयो हम सब असहाय किये छी-ई एकटा विचारणीय प्रश्न अछि।

हमर दोस्त सब जिनकर जन्म पटना या दिल्ली मे भेलन्हि ओ हिंदी मे बात करैत छथि। हलांकि ओ अपन मां-बाबूजी सं मैथिली बाजि लैत छथि लेकिन अन्य मैथिल भाषी सं ओ हिंदीये मे संवाद करैत छथि। एकर पाछू कोन मानसिकता अछि, कोन कारक एकरा प्रभावित कय रहल अछि, ताहि पर विवेचना आवश्यक।

दोसर बात हीन मानसिकता के सेहो। हम सब अपन संस्कृति के जेना बिसरि गेलहुं अछि। हमरा सब ज्ञान के मतलब अंग्रेजी के जानकारी मानि लेने छी, आ संस्कारित होई के मतलब हिंदी के नीक ज्ञान यानी खड़ी हिंदी के दिल्ली या टीवी के टोन मे बाजै के ज्ञान मानि लेने छी। हमरा अपन प्राचीन परंपरा के ज्ञान सं या त वंचित कयल जा रहल अछि या हम सब खुद अनभिज्ञ भेल जा रहल छी या केयक टा आर्थिक वजह हमरा सबसं अमूल्य समय छीन रहल अछि जे हम सब अपन भाषा या संस्कृति के बारे मे सोची। हमर कैयकटा मैथिल मित्र के ई ज्ञान नहि छन्हि जे सर गंगानाथ झा या अमर नाथ झा के छलाह। हुनका उमेश मिश्र के बारे मे नहि बूझल छन्हि। हुनका सरिसव पाही या बनगाम महिसी के भौगोलिक जानकारी तक नहि छन्हि। हुनका मंडन मिश्र या जनक या मिथिला के प्राचीन विद्रोही विद्रोही परंपरा के बारे मे बिल्कुले पता नहि छन्हि। लोरिक या सलहेस एखन तक यादवे या दुसाध के देवता कियेक छथि ? आ मैथिल के मतलब मैथिल ब्राह्मणे कियेक होईत छैक ? की हम एकात्म मैथिल के रुप मे कोनो प्रश्न के सोचैत छी? अहू सवाल सं टकरेनाई आवश्यक।

इंटरनेट अहि दिसा मे नीक काज कय रहल अछि। एम्हर कयकटा वेबसाईट पर मैथिली या मिथिला के बारे मे नीक जानकारी आबि रहल अछि। लेकिन की एतब काफी अछि ?

एकटा प्रश्न मिथिला राज्य के निर्माण सं सेहो जुड़ल अछि। मिथिला के इलाका अप्पन दरिद्रता, विशालता, भाषाई विशिष्टता के वजह सं राज्य के दर्जा पाबै के पूरा हकदार अछि, लेकिन की सिर्फ मिथिला राज्य बनि गेला सं हमर भाषा के पूरा विकास भय पाओत? हम एतय राज्य बनि गेला के बाद आर्थिक विकास के उम्मीद त कय सकै छी लेकिन की भाषाई आ सांस्कृतिक विकास भय पाओत ? उत्तराखंड या छत्तीसगढ़ बनि गेला के बादो ओतय के स्थानीय भाषा के की हाल अछि, ई एकटा शोध के विषय भय सकैत अछि। दोसक गप्प, मैथिली के एकरुपता सं जुड़ल अछि। एतय मैथिल भाषी आ ओकर साहित्यकार खुद एकर जिम्मेवार छथि। दरभंगा-मधुबनी के मैथिली के मानक बना कय हम केना पूरा मिथिला के ठीका उठबै के दावा कय सकैत छी ? एखनो दरभंगा-मधुबनी के भाषाई अहं, सहरसा-पूर्णिया आ मधेपुरा बला के अहि आन्दोलन के शंका के दृष्टि सं देखै पर मजबूर कय रहल अछि। हमर ई माननाई अछि जे मैथिली कतौ के हुए, ओकर मूल रुप मे जाबे तक ओकरा स्वीकार नहि कयल जाओत, मिथिला आ मैथिली आन्दोलन के बहुत फायदा नहि हुअ बला।

दोसर बात फेर लिपि के अछि। की हम मिथिला राज्य बनि गेला के बादो मैथिली के मिथिलाक्षर मे लिखि सकब ? की हम देवनागरी सं मुक्त भय सकब ? की हम राष्ट्र के मुख्यधारा सं टकराई के साहस कय सकब...आ दरभंगा-सहरसा के शहरी वर्ग के मैथिली बाजै आ लिखै के लेल मना या प्रेरित कय सकब-ई लाख टका के प्रश्न। देखल जाए त सांस्कृतिक रुप सं हमर मिथिला, बंगाल के बेसी नजदीक अछि, लेकिन हमर राजनीतीक जुड़ाव हिंदी पट्टी सं स्थापित कय देल गेल अछि। इतिहास के अहि आघात सं मुक्ति कोना भेटत, राज्य निर्माण एकटा कदम त भय सकैत अछि, लेकिन हिंदी के इन्फ्रास्ट्रक्चर हमर जनता के मजबूर कय देने अछि जे हम अपन लेखन या पाठन हिंदी मे करी। हमरा ओकर लत लागि गेल अछि आ हमर भाषा सिर्फ बाजै के भाषा बनि कय रहि गेल अछि। तखन उपाय की अछि ?

मैथिली के बारे मे किछु विज्ञ लोक सं जखन चर्चा होईत अछि त कहैत छथि जे 50 या 60 के दशक मे जते मैथिली के आन्दोलन मजबूत छल ओते आब नहि। सर गंगानाथ झा, या अमरनाथ झा या उमेश मिश्र

या हरिमोहन बाबू घनघोर मैथिलवादी छलाह। ओ या त अंग्रेजी मे संवाद करैत छलाह या फेर मैथिली मे। ओ हिंदी के भाषाई साम्राज्यवाद के चीन्ह गेल छलाह- ओ उर्जा एखन कहां देखि रहल छी ?

हमर बहिन कैलिफोर्निया मे रहैत अछि। ओकरा ओतय कयकटा मैथिल टकराईत छथिन्ह जे मैथिलीये मे गप्प करैत छथि। लेकिन ई चेतना भारत मे कहां अछि ? एतय ओ हिंदी कियेक बाजय लगैत छथि ? जे अपनापन ओ अमेरिका मे ताकय चाहैत छथि ओ भारत मे कियेक नहि करैत छथि-एकर कोनो जवाब हमरा नहि सुझाईत अछि।

एम्हर किछु लोग बहुत एलीट भेला के बाद फेर सं अपन रुट सं जुड़ै के कोशिश कय रहल छथि। शायद ओ हॉलीवुड स्टार सबसं प्रेरणा ल रहल होईथि। ओरकुट या फेसबुक पर मिथिला के गामक तस्वीर फेर सं जागि रहल अछि। एकटा महत्वपूर्ण भूमिका मिथिला पेंटिंग के सेहो अछि। लेकिन लेखन या पठन के स्तर पर एखनो लोग मैथिली सं कहां जुड़ि पेला अछि? जाहि भाषा-भाषी के जनसंख्या 2 करोड़ सं ऊपर हुए ओतय कोनो नीक अखबार या पत्रिका कहां देखि रहल छी। तखन त इंटरनेट के धन्यवाद देबाक चाही जे ओ एहि दिसा मे नीक काज कय रहल अछि-कारण जे अहि मे पूंजी कम लगैत छैक।

एकटा उम्मीद ऑडियो-विजुअल माध्म सं अछि लेकिन हमर भाषा ओहू मोर्चा पर भोजपुरी जकां प्रदर्शन नहि कय रहल अछि। हलांकि भोजपुरी के विशाल आबादी आ अंतराष्ट्रीय बाजार ओकरा सहयोग कय रहल छैक लेकिन ओहू सं बेसी महत्वपूर्ण हमरा जनैत ई जे हमर भाषा बेसी क्लासिकल होई के वजह सं अहि मोर्चा पर पिछड़ि रहल अछि। मैथिली भाषा लेखन के परंपरा सं विकसित भेल अछि आ बेसी मर्यादित अछि, जखन की भोजपुरी मे लेखन के परंपरा सं बेसी बाचन के परंपरा छैक। ई क्लासिकल भेनाई हमर भाषा के पोपुलर कल्चर सं काटि कय राखि देने अछि। मिथिला मे संभ्रान्त वर्ग के मैथिली अलग आ आम जन के मैथिली अलग भय गेल छैक। एकर अलावा लेखन के परंपरा होईके कारण एकर लोकगीत आ नाट्य मे एक प्रकारक अश्लीलता या बेवाकपन के बड़ड कमी छैक जे भोजपुरी मे प्रचुर रुप सं छै। ताहि कारणें हमर भाषा मे हाहाकारी रुप सं हिट लोकगीत के कैसेट या फिल्म नहि बनि पबैत अछि। परिणाम ई जे मैथिलियों के दर्शक भोजपुरिये गीत या फिल्म के आनंद बेसी लैत छथि-जे बाजार द्वारा हुनकर बेडरुम तक पहुंचा देल गेल अछि। लोक 'महुआ' चैनल त देखैत छथि लेकिन 'सौभाग्य मिथिला' के बारे मे कतेक लोक के पता छन्हि ? मैथिली के बाजार नहि बनि पायल अछि। इहो प्रश्न विचारणीय।

तखन हमर भाषा के उम्मीद कतय अछि ? की सिर्फ 'विल पावर' आ गार्जियन सबके अतिशय जागरुकताये हमर उम्मीद अछि जे ओ अप्पन बच्चा सबके कम सं मैथिली जरुर सिखाबथु या आओर किछु ?

लगैये हम बेसी निराश भय रहल छी। शायद हमरा एतेक निराश नहि हुअक चाही। जे भाषा हजार साल सं लेखन आ वाचिक परंपरा सं जीवित अछि ओ आगूओ जीवैत रहत। एकर त्राता ओ किछु हजार या लाख लोग नहि छथि जे दरभंगा-पटना या दिल्ली मे आबि क कॉरपोरेट भय गेल छथि-बल्कि ई भाषा करोड़क करोड़ मैथिल भाषी के हृदय मे जीवित अछि जे एखनो कोसी के बाढ़ि आ जयनगर रेलवे लाईन के कात मे पसरल हजारो गाम मे रहैत छथि। हमर ई विवशता अछि जे हमर युवा आबादी, जवान होईते देरी दिल्ली-बंबै भागि जाईत अछि। अबै बला समय मे जखन आर्थिक गतिविधि हमरा इलाका मे पसरत त लोक के पलायन नहि हेतै, लोक अप्पन भाषा मे संवाद करैत रहत। अहि शुभेच्छा के जियबैक लेल हमरा आर्थिक लड़ाई लड़य पड़त। दिल्ली आ पटना के सरकार सं अप्पन हक मांगय पड़त, इन्फ्रास्ट्रक्चर मजबूत करय पड़त। शायद मिथिला राज्य ओहि दिसा मे एकटा पैघ कदम साबित हुए। कमसं कम मिथिला राज्य के निर्माण के अहि आधार पर जरुर समर्थन करक चाही। आ मैथिल बुद्धिजीवी सबके के अहि आन्दोलन मे अहम भूमिका के निर्वाह करैय पड़तन्हि।

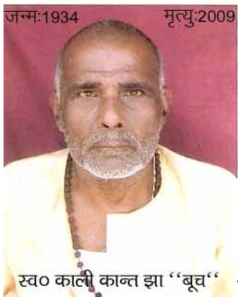
३. पद्य

३.१.कालीकांत झा "बुच"1934-2009-आगाँ

३.२.राजदेव मंडलक ६टा कविता

३.३.ज्योति सुनीत चौधरीस्वतंत्रता दिवस

श्री कालीकान्त झा "बुच"



कालीकांत झा "बुच" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन ग्राममे 1934 ई. मे भेलनि । पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक

प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह। माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह। अंतरस्नातक समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुरसँ कयलाक पश्चात बिहार सरकारक प्रखंड कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कयलनि। बालहिं कालसँ कविता लेखनमे विशेष रूचि छल । मैथिली पत्रिका- मिथिला मिहिर, माटि- पानि,भाखा तथा मैथिली अकादमी पटना द्वारा प्रकाशित पत्रिकामे समय - समयपर हिनक रचना प्रकाशित होइत रहलनि। जीवनक विविध विधाकेँ अपन कविता एवं गीत प्रस्तुत कयलनि। साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित मैथिली कथाक इतिहास (संपादक डा. बासुकीनाथ झा)मे हास्य कथाकारक सूची मे, डा. विद्यापति झा हिनक रचना ''धर्म शास्त्राचार्य"क उल्लेख कयलनि । मैथिली एकादमी पटना एवं मिथिला मिहिर द्वारा समय-समयपर हिनका प्रशंसा पत्र भेजल जाइत छल । श्रृंगार रस एवं हास्य रसक संग-संग विचारमूलक कविताक रचना सेहो कयलनि । डा. दुर्गानाथ झा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक रूपमे हिनक उल्लेख कएल गेल अछि |

!! हे तात !!

ई कातर प्राण, चतुरथीचान -
धरक धरि ध्यान रहय अनुखन ।
ई बेलक गात सजय नवपात
पड़य हे तात, अहींक चरण ।। 1 ।।

मनक सभबात बनय जलजात
कि भऽ बरू जाउ एकातक आक
फड़य सभ मौन मनोरथ फूल
रहय अथबा बनिकऽ मरू खाक ।

करी सभदान, लियऽ भगवान

उपस्थित दीन धथूर क मन ।।
ई कातर प्राण, चतुरथीचान -
धरक धरि ध्यान रहय अनुखन ।। 2 ।।

हे त्रिपुरारि, अहॉक दुआरि,
सुनी दिन राति भिखारि भिखारि
सुनू अबधून ई दास अभूत
ने माड़त आब कही पर चारि ।

हरू सभ दोष, भरू संतोष
करू उद्घोष - “ई हम्मर जन” ।।
ई कातर प्राण, चतुरथीचान -
धरक धरि ध्यान रहय अनुखन ।। 3 ।।
स्वः काली कान्त झा “बूच“

!! झूला !!

झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।।
डूबि डूबि श्यामल नीरद मे -
चान उगै छथि आधा ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।।

कालिन्दी कूलक कदंब सॅ -
रेशम डोरी लाधा ।।
झूलि रहल मणि खचित मनोहर
झूला एक अबाधा ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।।

कंकण ताल खनन खन बँसुरी -
बर कमाल, स्वर साधा
खसली श्याम क कोर उछलिकऽ

सम्हरथि सम्हरथि जा जा ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।।

देखि देखि नाँचल “बुचबा”
ताथैया - धिक् - धिक् - धा धा ।।
विरह विकल मन विहग लेल ई -
याद भेल अछि व्याधा ।।
झुलबथि कान्ह, झुलै छथि राधा ।।

१.राजदेव मंडलक ६टा कविता

राजदेव मंडलक 6टा कविता-

1 शिष्ट-अशिष्ट

भीड़ मध्य दसो अँगुरी जोड़ैत

टेढ़ भऽ गेल हमर हड्डी

कियो दैत अछि- आर्शीवाद

कियो नमस्कार

किनको मुँहसँ निकलैत अछि

“नहि चीन्हलहुँ....”

तब बिधुआ जाइत अछि

हमर मुँह

परन्तु गोटेक तँ

घुरियो नहि तकैत अछि

हमरा जुटल हाथ दिशि

मन अनोन भऽ जाइत अछि

लागैत अछि जेना-

नङटे ठाढ़ छी

आ लोक सभ चला रहल अछि

आँखिक तीर

ताहि कारणे छोड़ि देलहुँ

हथजोरी करब आ सिर झुकाएब

आब चलि देने छी- सोझहिं

गुम्मा बनि।

2 ढहैत महल

नहि जोरगर बिहाड़ि

नहि झितिकम्प भेल

शायद आधार छल

कमजोर भेल

तेँ ई विश्वासक महल

ढनमना कऽ गिर पड़ल

खण्ड-खण्ड भऽ गेल- रँगीन दिवार

जेकरा ठाढ़ करबामे

कतेक अमूल्य काल-छल नष्ट भेल

उतुंग गिरि सन-जर्जर भवनकेँ

खसलाक भयंकर शब्दसँ

चिड़इ-चुनमुनी उड़ि गेल

बिहाड़ि सन लगैछ

उड़ैत धूरा

मध्य बनि रहल-नव आकृति

ओ सभटा वृति

जेकरा बरिसों पहिले

छोड़ि-छोड़ि

मातल छलहुँ निन्नमे।

3 अश्रुधार

हमरा प्रेयसीक नैनसँ

बहैत रहैत अछि

हरक्षण नोरक- नदी

आ ओहि अश्रुजलमे

लोक करैत अछि- अवगाहन

केकरो ठण्ढ़ा आर केकरो होइत अछि

गर्मानुभूति

कियो कहैत छथि- वाह-वाह

कियो कहैत छथि- बड्ड अधलाह

किन्तु आन्हर-बहीर हमरा संगिनीकेँ

नहि छैन्हि परवाह

हुनक नोर नि:सृत

होइते रहैत अछि

किन्तु किछु दिनसँ ई लादने अछि- चुप्पी

शाइत सधि गेलन्हि-नोर

वा कऽ रहल अछि

अक्षय अश्रु संग्रह।

4 नाचैत भूत

कतेक दिनसँ ई भूत

नाचि रहल अछि

हमरा माथपर

चूसि रहल अछि

हमरा शोणितकेँ

भऽ गेलहुँ भूतचढ्ढू

तइयो नहि छोड़ैत अछि ई निखढ्ढू

बड़का-बड़का ओझा-गुणी

कएलक प्रयास

किन्तु ई नहि पड़ाइत अछि

केहेन बेसुरा अछि- एकर नाचब

राग-ताल विहीन

लगैत अछि-जेना

पीट रहल अछि-कियो

फूटल टीनकेँ

"झन-झनाक-झन"

कुनमुना उठैत अछि हमर मन

एहि भंयकर शब्दसँ

करैत अछि दरद

कएकबेर कएलहुँ यत्न

भूतकेँ खसेबाक

परन्तु खसि पड़ैत छी- अपनहि

ई धऽ लेने अछि गहिया कऽ

हमरा कपारक केशकेँ

कसने अछि सवारी

तेँ आब हम कऽ रहल छी

शीर्षासन

जँ नहि उतरता ई भूत

तँ कऽ देबैक थकचुन्ना

अपनहि शरीरक भारसँ।

5 माय

5(क)

दोसरोक माय

अछि हमरे माय

तँ कि यौ भाय

अपना मायकेँ बिसरि जाइ

जे करौलक अमृत-पान

भेलहुँ जवान देशक शान

ओहिठामसँ ससरि जाइ

मायक सिनेहकेँ बिसरि जाइ

कि यौ भाय।

(ख)

मैथिलीक अछि असीम भंडार

एहि बातकेँ हम सोचि ली

घर भरल हो जखन

दोसरासँ किएक पैंच ली

राखि संतोष करी उपाय

कि यौ भाय।

(ग)

नहि होइ खिन्न

नहि लिअ पड़ए ॠण

करू कोनो उपाय

हे मैथिली माय

भऽ जाए हमरो अभ्युदय

कि यौ भाय।

6 यत्न

हरियर पातक मध्य पीयर फल

देखतहिं मन ललचागेल

ओकर सरस स्वादक अनुभव

जगा देलक- तृष्णाक आिग

मारय लगलहुँ- छड़पनियाँ

करए लगलहुँ- उछल-पूछल

तोड़बाक हेतु

किन्तु डारिमे हाथ स्पर्श भेलासँ पूर्वे

खैंच लैत अछि-नीचाँ

टाँग पकरि- धरती

ठाँहि दऽ लगैत अछि- चोट

ऍंड़ीमे

यत्नपर यत्न कऽ रहल छी

परन्तु फल नहि तोड़ि पाबैत छी

लगैत अछि जेना

भुकुर-भुकुर तकैत

हमरा विफलतापर

चला रहल हो- व्यंग्य-बाण ई वृक्ष

लाज नहि होइत छन्हि- हिनका

हमरे रोपल-पैघ भेलापर

देखा रहल अछि- हमरे ठेसी

किन्तु बसात अछि निशब्द मारने

दऽ रहल अछि- पूर्वाभास

उठल जोरगर-आन्हड़-बिहाड़ि

निश्चय टूटत-ई फल।

. ज्योति सुनीत चौधरी

जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी ; शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूल टिस्को साकची गर्ल्स हाई स्कूल, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेज़, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी डबल्यू ए आइ (कॉस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान- लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर झा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा झा, शिवीपट्टी। ज्योतिकेँwww.poetry.comसँ संपादकक चॉयस अवार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) भेटल छन्हि। हुनकर अंग्रेजी पद्य किछु दिन धरि www.poetrysoup.com केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि। कविता संग्रह 'अर्चिस्' प्रकाशित।

<u>स्वतंत्रता दिवस</u>

स्वतंत्रता दिवस आयल छल

देशभक्तिक अभिव्यक्तिक दिन

देशक शहीदकेँ श्रद्धांजली देबक

जकर ऋणी हमसब प्रतिदिन

एक सदीक प्रयासक बाद सफल

साढ़े तीन सए साल रहल पराधीन

वीर वीरांगणा पुरूष स्त्रीक बलिदान

केलक फिरंगीकेँ शक्तिविहीन

एक स्वतंत्र प्रजातंत्रक निर्माण भेल

एक-एक तिनकासँ बिन-बिन

सब जनहितक कानून बनल मुदा

ज्ञाता वैह जे छथि उच्चपद पर आसीन

देशक आर्थिक सहायताकँ भोगैत

उद्योगपति अपन तिजोरी भरैमे लीन

सत्ताक ताकत लेब' लेल प्रयासरत

नेता केने श्वेत वर्दीकँ मर्यादा हीन

स्वयंके शक्तिशाली बनेनाइ प्राथमिक

राष्ट्रविकासक स्थान जेना होय सबसँ अंतिम



प्रकाश प्रेमी, जनकपुर

गीत

सुनैत छी फुलबारीमे प्रेम रस बहैछै
नित्यौह कली संग भमरा नचैछै ।
चुमि नचै छै भमरा कली के कोमलता
मुस्कै छै कली आ निखरै छै सुन्दरता ।।

सिनेहियाकें बाट हम सैदखन तकै छी
प्रेम रस पिबएला कछमछ करै छी

आउ सिनेहिया जुडा दिय मनकें
परती अछि अंग भिजा दिय तनकें
वसन्तक वहार हमर मन तरसाबे
कोईलीकें कुहकी जिया ललचाबे
मधुयायल मज्जर नै टिकुला बुमmु
कोषा भेल आम हम डमरस लगै छी

प्रेम रस पिबएला कछमछ करै छी

साउन सरधुवा अगन लगाबे

रिमझिम बदरीया हमरा सताबे

व्यसक उमंग आब रहलो नै जाइय

प्रेमक अगन आब सहलो नै जाइय

भमरा हमर अहाँ कत बैसल छी

प्रेम रस पिबएला कछमछ करै छी

प्रेम राग रस सँ गगरी भरल अछि

बांटलाए सैदखन जिया तरसल अछि

आबि घनश्याम प्रित सँ नहा दिय

तृप्त होइ से रस हमर पिया दिय

ब्याकुलता सहेजने पिपहिया बनल छि

प्रेम रस पिबएला कछमछ करै छी

किशन कारीग़र

संवाददाता, आकाशवाणी दिल्ली

परिचयः- जन्म- 1983ई0 कलकता में ,मूल नाम-कृष्ण कुमार राय 'किशन'। मूल निवासी-ग्राम-मंगरौना भाया-अंधराठाढ़ी, जिला-मधुबनी बिहार। हिंदीमे किशन नादान आओर मैथिलीमे किशन कारीग़रक नामसँ लेखन। हिंदी आ मैथिलीमे लिखल नाटक, आकाशवाणीसँ प्रसारित एवं लघु कथा, कविता, राजनीतिक लेख प्रकाशित।

वर्तमानमे आकशवाणी दिल्लीमे संवाददाता सह समाचार वाचक पद पर कार्यरत।शिक्षाः-एम फिल पत्रकारिता एवं बी एड कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र सँ।

।स्वतंत्रता दिवस पर एकटा विशेष।

बीर जबान

मातृभूमीक रक्षा लेल
शहीद भऽ जाइत छथि बीर जबान
समहारने छथि ओ देशक सीमान
नमन करैत अछी 'कशन ,अहॉ छी बीर जबान।

मरब की जीयब
तेकर नहि रहैत छनि हुनका धियान
मुदा, देशक रक्षा लेल ओ सदखनि
न्योछाबर करैत छथि अपन जान।

सैनिक छथि ओ इन्सान
देशक दुशमन पर रखैत छथि धियान
आतंकवादीक छक्का छोड़ा दैत छैक
परमवीर छथि, हिन्दुस्तानक बीर जबान।

महान छथि ओ बीर जबान, देशक खातिर
जे हसैँत-हसैँत देलथिहिन अपन बलिदान
भारतवासी गर्व करैत अछि अहॉ पर
नहि बिसरत कहियो अहॉक त्याग आओर बलिदान।

सीमा पार सँ, केलक आतंकी हमला
कऽ देलियै आतंक के मटियामेट अहॉं
भऽ गेलहुँ अपने लहु-लुहान मुदा
आतंक सँ बचेलहुँ सभहक जान

कारगील सँ कूपवाड़ा तक
आतंकवादी सँ लैत छी अहाँ टक्कर
अहाँक बीरता देखी कऽ
अबैत छैक ओकरा चक्कर।

बीर जबान यौ बीर जबान
समहारने छी अहाँ देशक सीमान
कोना कऽ हेतै देशक रक्षा
सदखनि अहाँ रहैत छी हरान।

गजेन्द्र ठाकुर

पिता-स्वर्गीय कृपानन्द ठाकुर, माता-श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर, जन्म-स्थान-भागलपुर ३० मार्च १९७१ ई., मूल-गाम-मेंहथ, भाया-झंझारपुर,जिला-मधुबनी।

लेखन: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक सात खण्ड- खण्ड-१ प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, खण्ड-२ उपन्यास-(सहस्त्रबाढ़नि), खण्ड-३ पद्य-संग्रह-(सहस्त्राब्दीक चौपड़पर), खण्ड-४ कथा-गल्प संग्रह (गल्प गुच्छ), खण्ड-५ नाटक-(संकर्षण), खण्ड-६ महाकाव्य- (१. त्वञ्चाहञ्च आ २. असञ्जाति मन), खण्ड-७ बालमंडली किशोर-जगत कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक नामसँ।

मैथिली-अंग्रेजी आ *अंग्रेजी-मैथिली* शब्दकोशक ऑन लाइन आ प्रिंट संस्करणक सम्मिलित रूपेँ निर्माण। पञ्जी-प्रबन्धक सम्मिलित रूपेँ लेखन-शोध-सम्पादन आ मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यंतरण "जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी. सँ २००९ ए.डी.)-मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध" नामसँ।

मैथिलीसँ अंग्रेजीमे कएक टा कथा-कविताक अनुवाद आ कन्नड़, तेलुगु, गुजराती आ ओड़ियासँ अंग्रेजीक माध्यमसँ कएक टा कथा-कविताक मैथिलीमे अनुवाद।

उपन्यास (*सहस्त्रबाढ़नि*) क अनुवाद १.अंग्रेजी (द कॉमेट नामसँ), २.कोंकणी, ३.कन्नड़ आ ४.संस्कृतमे कएल गेल अछि; आ एहि उपन्यासक अनुवाद ५.मराठी आ ६.तुलुमे कएल जा रहल अछि, संगहि एहि उपन्यास *सहस्त्रबाढ़निक* मूल मैथिलीक ब्रेल संस्करण (मैथिलीक पहिल ब्रेल पुस्तक) सेहो उपलब्ध अछि।

कथा-संग्रह(*गल्प-गुच्छ*) क अनुवाद संस्कृतमे।

अंतर्जाल लेल तिरहुता आ कैथी यूनीकोडक विकासमे योगदान आ मैथिलीभाषामे अंतर्जाल आ संगणकक शब्दावलीक विकास।

शीघ्र प्रकाश्य रचना सभ:- *१.कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* सात खण्डक बाद गजेन्द्र ठाकुरक *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक-२* खण्ड-८ *(प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना-२)* क संग, *२.सहस्रबाढ़नि* क बाद गजेन्द्र ठाकुरक दोसर उपन्यास *सहस्रं शीर्षा* , *३.सहस्राब्दीक चौपड़पर* क बाद गजेन्द्र ठाकुरक दोसर पद्य-संग्रह *संहस्रजित्* ,*४.गल्प गुच्छ* क बाद गजेन्द्र ठाकुरक दोसर कथा-गल्प संग्रह *शब्दशास्त्रम्* ,*५.संकर्षण* क बाद गजेन्द्र ठाकुरक दोसर नाटक *उल्कामुख* ,६. *त्वञ्चाहञ्च* आ *असञ्जाति मन* क बाद गजेन्द्र ठाकुरक तेसर गीत-प्रबन्ध *नाराशंसी* , ७. नेना-भुटका आ किशोरक लेल गजेन्द्र ठाकुरक तीनटा नाटक- *जलोदीप,* ८.नेना-भुटका आ किशोरक लेल गजेन्द्र ठाकुरक पद्य संग्रह- *बाङक बङौरा* , ९.नेना-भुटका आ किशोरक लेल गजेन्द्र ठाकुरक खिस्सा-पिहानी संग्रह- *अक्षरमुष्टिका* ।

सम्पादन: *अन्तर्जालपर विदेह ई-पत्रिका* "विदेह" ई-पत्रिका http://www.videha.co.in/ क सम्पादक जे आब प्रिंटमे (देवनागरी आ तिरहुतामे) सेहो मैथिली साहित्य आन्दोलनक प्रारम्भ कएने अछि- ***विदेह: सदेह:१:२:३:४ (देवनागरी आ तिरहुता)***।

ई-पत्र संकेत- ggajendra@gmail.com

१.नजरि लागि जाइ छै

माए कहै छथि

जे नजरि लागि जाइ छै

बेटाकेँ देखि जे लागैए ओ आइ सुन्दर

साँझमे छाह पड़ि जाइ छै ओकर मुँहपर

से तँ सत्ते! हमरा सन ककर बेटा

मुदा मोनमे ई अबिते नजरि लागि जाइ छै

कोनो काज शुरू करैए

मारिते रास काज एक्के बेर

खतम होएबा धरि सुधि नहि रहै छै

कियो कहैए जे कतेक नीक अछि अहाँक बेटा

तँ माएक करेज धकसँ रहि जाइत छै

करेज बैसऽ लगै छै

की करै छै?

कोन सुन्दर छै?

मुदा कहैत रहै छथि माए

जे नजरि लागि जाइ छै

बाते-बातपर हमर बेटाकेँ

कनिञा कहैत छथि सासुकेँ

माँ अहाँक बेटा घबराइ बला नहि अछि

दुष्टक नजरि नहि लगै छै अहाँक बेटाकेँ

माए मुदा शनि दिन, सरिसौ-तोरी आ मेरचाइ जड़बैत छथि

सुरसुरी लागि जेतै ओकरा तँ बुझब जे नजरि नञि लागल छै

आ सुरसुरी जे नञि लागतै तँ बुझब जे नजरि लागि जाइ छै

कनेक काल सुरसुरी नञि लगलापर माए होइत छथि चिन्तित

देखियौ ने हमरा बेटाकेँ नजरि लागि छै छोटो-छोट गपपर..

नजरि लागि जाइ छै...बाते-बातपर हमर बेटाकेँ...

मुदा तखने छिकैत छन्हि बेटा, ओकरा सुरसुरी लागि जाइ छै

माएक मुँहपर अबै छन्हि मुस्की

सरिसौ-तोरी आ मेरचाइ सरबामे कनेक आर दऽ दै छथि...

कहलियन्हि ने माँ दुष्टक नजरि नहि लगै छै अहाँक बेटाकेँ

२.ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी

पानक जड़ि लग गारल खरही देखैत छी

आ ओहिपर ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी

राड़ी घासक टुकड़ी आ काइससँ बान्हल हमर उल्लास

सरपत घासक टुकड़ीपर चढ़ि गेल लत्ती जेकाँ

लत्ती जेकाँ हम अपनाकेँ पबैत छी

बन्हकासँ बान्हल पानक ढोल बनि गेल छी

मोड़ल पानकेँ सीकीसँ,

बाँसक पातर शलाकासँ गाँथल अछि

बेल निकलल शाखा कनार,

इकरीसँ गछउठौनी

पानक छर्रा लत्ती, गीरहसँ युक्त छर्रा बेल बनि गेल छी

लत्तीक छीपकेँ काटब, छपटा करब

जड़ि लगक चारि-पाँचटा पानक पात माने घासन जेकाँ

ऊपर चारि-पाँचटा पानक पात माने कूट-खूट कचलेवारि होइत

छीप परक पात मुड़वारि भऽ गेल छी

पात तोड़बाकाल कूटक एक-दूटा पात तज्जीबला कठोर पात

किछु काल लेल छोड़ि देल

जड़िसँ छीप धरि दुपन्ना आ लेवार सभ

झलमा बीमारी भेने पान कड़ू भेल

फुट्टा बीमारी भेने गलल पात सन हम असकरे घुमैत छी

तुबैत, तेलगगरा भेने आ झरकैत; बढ़ती भेने अग्रभाग झरैत

पातकेँ फेरफार कऽ मृत्युकेँ टारैत छी किछु काल धरि, बहुती!

चौठैय्या, ढोली, लेसो, भीड़ा बनि गेल छी

पातमे बान्हल भीड़ी, से पतौरा जेकाँ तैयार भेल कल्लामे जएबा लेल धड़फड़ाइत

डंटी लागल सौँस छुट्टा पान सन पूजा लेल निहुछल

तबक सन चमकैत पन्नीमे ठूसल बजारक समान बनि गेल छी

आ तखन

पानक जड़ि लग गारल खरही देखैत छी

आ ओहिपर ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी

३.हमर आकांक्षाक अग्नि

आँचब आ प्रज्वलित राखब, हम्हरब आगिकेँ

खोरनाठब मुदा, तखन आगि खसत पातक ढेरीपर

आ पसाही लागत

हमर आकांक्षाक अग्निकेँ

मखान उठबैत छलहुँ पेलनीसँ

गूड़ीसँ चोंइटा हटबैत छलहुँ

बाङक बङौरा, सुखाएल अछि केहन ई बङठी

औँटि कऽ निकाली बङोर,

तुमब आ फाहाक पृथक होएब, धुनकीसँ धूनैत छलहुँ

लारनिसँ ताँतिपर कऽ आघात, मखान उठबैत रही पेलनीसँ

गूड़ीसँ चोंइटा हटबैत रही, रही टकुरी कटैत, मड़िएबैत छिन्नाकेँ

पागैत सूत, छल ई हमर आकांक्षाक अग्नि

ननगिलाट पहिरने बूढ़ी, सोझाँ नन्हसुतमे मलकिनी

कलबत्तू पइसा कऽ गाँथैत आभूषण मोन अछि

किरमिची चानीक पानि चढ़ल, मुदा वैह ताम

आब हमर आकांक्षाक अग्नि माँगैत अछि

पाग नहि चाही हमरा मौड़

शंकुक आकारक पैघ,

कोढ़िलायुक्त पागक अग्रभागक पेंच नहि

आब हमर आकांक्षाक अग्नि माँगैत अछि

चिरतन, ठिकरी, लहेरिया आ जंगलाती छाप

आब हमर आकांक्षाक अग्नि माँगैत अछि

पटोर, गुलबदना, नीलाम्बरी, सोइरीक नूआ

कलफ लगा कए कड़गर कए, भेलासँ दऽ चेन्हासी

तूरक फाहा, पोखरिया, लहेरिया, बदामी, चानपंखा

बेराएब आ सुइया पैसाएब अहाँ

हमर आकांक्षाक अग्निकेँ

लखिया भेड़ जेकाँ आगाँ-आगाँ

बथनिञाक बथनाएब अबैत काल, आ खभाएब जाइत काल

बीसटा भेड़क लेहड़, एक सए भेड़क बाग

चारि-पाँच सए भेड़क गँहेड़,

भेड़केँ खउरब, गुलठिआइत तूर

सिऐन अधलाह, खुटिया मिरजइ ओछ

हमर आकांक्षाक अग्नि करत

ई पुरान लोहझाम, लोहङ्गरकेँ

भाथीमे पैसैत वायु जखन आएत तखन

भाथी सालब आ प्रज्वलित करब अग्नि

लऽ कलम छेनी, चकरसानपर पिजबैत सरौता

हमर आकांक्षाक अग्नि सुनैत अछि

कबिराहाक कनसीपर उठैत धुन

देखैत अछि, छिलुआ पहलदार बासन

आ तखन हम

आघातसँ मठारब पित्तरि, कलगैञा लोटा

निरंजनीक दीप, जलधरी

फेर दीयठिमे राखि दीप

पहिरि टुमटाम गहना, गोबरियाव सोन, जोकठी आ दसकलम

चाँपकली पहिरने ओ लेने छलि हलुमानी नातीक लेल

पथरौटी पहिरि हम, पवित्री जनउमे बान्हि

श्राद्धक काञ्चनपुरुष जेकाँ

आकांक्षाक अग्नि हृदयमे लऽ

कनसारीक भुज्जा जेकाँ

दाबापर उझकुन ओहिपर राखल बासनमे

चुल्हाक पौरी कूरामे धिपाओल बालु दऽ

भुजनाठीसँ लाड़ैत छी

अपन आकांक्षाक अग्नि

मकइक मखानी

सोन्हगर आ झूर नीक स्वाद

मुदा आब अतिखाइन होइत अछि

हमर आकांक्षाक अग्नि

अदहन देल पानि आँच दए तारब

उसीनब कूटि कऽ मुरहीक चाउर बनाएब

नोन-पानिसँ मोअब कोड़ाइ, दालिक खोंइचा

बिनु जमल गुड़ छाल्हीक पातर ममुरी

परतपरसँ काछि कऽ निकालब मलीदा

तेबासि नीक , मुदा बसियानि

मोटगर भैसाठ आ पातर तुर्री दही

आकांक्षाक अग्निकेँ जरैत रहए देब

ओहिना जेना कोइयासँ तेल निकालैत छी।

मोहब आ दऽ आएब तेलिहानी

तेलीकेँ दऽ बहतौनी, घानी लगाएब आ निकलब धेनुआर घानी

घानी निघरब, तेलहनक अवशेष खरी

उज्जर रंगक रेह

नोनथरा, कोठीसँ निकलल

पनारसँ चुबैत पानि, अवशिष्ट सिट्ठी ढेर नोनफर

काछल फेन खारीसँ खरिआ नोन

हमर आकांक्षाक अग्नि सुच्चा

फेर अवशिष्ट पछाड़ी, दोसर खेपमे काही शोरा

आ पकवा नोन, तेसर खेप तेलहा शोरा

आ नीमक अवशिष्ट जराठी

जराठी आ सिट्टीक मिश्रण

बेचुआ, रौदमे सुखा कऽ जरुआ शोरा-आबी शोरा

कच्चा शोरा परिशुद्ध भऽ कलमी शोरा

नोन- रामरस, कम नोनगर- मधनोन

कटियामे मधु राखि

चिड़ै मारबा लेल नर-सर

नाल गुआमे पैसल, नरक उपरका सिर आ नीचाँ भारू

सरमे कमची सभ, पकड़बा लेल चिड़ै कम्पा

मन्तुर पढ़ि छत्ता लग जाएब,

तुनकारी दऽ बिज्जीक करैत अछि शिकार

ई हमर आकांक्षाक अग्नि

आँचब आ प्रज्वलित राखब

मुदा हम्हरब आगिकेँ

खोरनाठब मुदा

आगिक खसब पातक ढेरीपर

आ पसाही लागत

मुदा ई

हमर आकांक्षाक अग्निकेँ तँ जरैत रहए देत

४. उजाहिमे उपलाइत हम आ माँछ

१

ई नम्माधग्गी

बिड़इमे होइत मछहर

डकही पोखरिमे भऽ गेल बन्न,

डकही पोखरि मखानक पातसँ छाड़ल अछि आब

मुदा एतऽ बिड़इमे होइत अछि मछहर

कच्छाछोप, हेलैत कबइ

काही घुमैत

कौआठुट्ठी गाछक फड़ लग हम ठाढ़

कबइजल्ला लग

आ हम आबि जाइत छी

खींचि फिरचइ पकड़ि कऽ

छी जाल खिरबैत

आ फेर हम घुरमऽ लगै छी

फेर टापी छापि,

ठाढ़ भऽ जाइ छी

छै उजाहिमे उपलाइत माँछ

आ फेर हम जाल छोड़ि दैत छी

सहदसँ माछक करै छी शिकार

आ आब

अछि इछाइन चारू कात

२

जाल खिरबैत

घुरमा लागि जाइत अछि

सोचनी पैसि जाइत अछि

इछाइन गन्ध बनि जाइत अछि नियति

जीवनक प्रवृत्ति

माँछ संगे उपलाय लगैत छी

लगैए जाल खिरबैत हमरा बान्हि कियो रहल अछि

लगैए शहद लेने छातीमे कियो ढुकल जा रहल अछि।

सोचनी पैसि जाइत अछि

इछाइन गन्ध बनि जाएत की हमर नियति

हमर जीवनक प्रवृत्ति

ई नम्माधग्गी

**राजेश मोहन झा**

!! आजुक लोक !!

मानव छथि मानवता नहि छनि,
कोना चलत जगतक दुहू चक्का ?

बूझि नहि पडैए कखनो - कखनो,
घीचै छथि वा दै छथि धक्का ।।

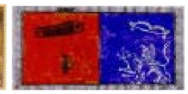
झूठ प्रपंचक खेल सगरो दिन,
अपराधक भाभट बढ़ा रहल छथि ।

अपने हाथे तन्मयता सँ,
प्रियंजनक चचरी सजा रहल छथि ।

चिड़ै चिन्त छथि चिलका उड़ि क,
प्रकृति कें ललकारि रहल छथि ।

मुदा मनुक्ख निश्चेतन भ,
विनाश लीला कें हकारि रहल छथि ।।

कनैत आत्मा कोने - कोने मे,
अचला अवला वनि सिसकि रहल छथि ।

कहै छथि द्रुतगामी वनि गेलौं,
जुनि पुछू सभ घुसकि रहल छथि ।।

आवहु जागू सचेतन वनि क,
नहि भेल विलम्व एहि सत्य कें जानू ।

बढ़ू कने चमत्कार करू औ,
वसुधैव कुटुम्ब छथि एकरा मानू ।।

शिव कुमार झा''टिल्लू'',

नाम : शिव कुमार झा, पिताक नाम: स्व0 काली कान्त झा ''बूच'', माताक नाम: स्व. चन्द्रकला देवी, जन्म तिथि : 11-12-1973, शिक्षा : स्नातक (प्रतिष्ठा), जन्म स्थान ः मातृक ः मालीपुर मोड़तर, जि0 - बेगूसराय,मूलग्राम ः ग्राम + पत्रालय - करियन,जिला - समस्तीपुर, पिन: 848101, संप्रति : प्रबंधक, संग्रहण, जे. एम. ए. स्टोर्स लि., मेन रोड, बिस्टुपुर, जमशेदपुर - 831 001, अन्य गतिविधि : वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार- प्रसार हेतु डा. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न।

!! गीत !!

पिया निर्मोही खनकि गेल कंगना,
विपुल मृगी नयना,
किएक अहाँ बनलौ औ -
प्रवासी सजना ।।

आगि भेल शीतल उधिया रहल पानि,
सुवासित जीवन मे उफनि गेल ग्लानि,
सुन्न प्रेयसीक सिनेह हृदय अंगना,
विपुल मृगी नयना .... ।।

उमड़ि रहल विरह प्रखर आतप समान,
मुरूझायल शुष्क अधर मरूघट मे प्राण,
धॅसल बान्ह मर्यादाक सजना,

विपुल मृगी नयना .... ।।

क्षणहि मे जीवन अभिशापित वनल,
सूखि गेल नेह पुष्प नोर सँ भरल,
आव कहि ने सकव हम सजना
विपुल मृगी नयना .... ।।

**श्वेता झा चौधरी**

गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स।
कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।
कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग।
प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक।
हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।



सावन मासमे बरखाक फूहीसँ भीजल माटिक सुगन्ध लैत झूला झुलैक आनन्दक कोनो सीमा नहि ..।

बालानां कृते

डॉ. शेफालिका वर्मा

देश

हे बौआ !

की बाबा ?

सुनैत छी गाँधी फिलिम लागल ऐछ

बड़ नीक, बड़ दीब अछि

चलू ने देखी अबैत छी ....जेना

लुत्ती लागि गेल बौआ के

हुंह ..आंधी लागल छल बाबा

जाही में हीरो हिरोइन दुनू छल

से हम देखवे नै केलों

आ ओहि बुडवा के देखै लेल

पाई आ समय बर्बाद करी ..

हे ऐना नै बाजु बावू

आय ई देश स्वतंत्र भेल गाँधी के कारन

हम अहाँ देशभक्ति क स्वाद में

डूबल रहैत छी गाँधी क कारन

देश देश देश ----

ओ स्कूली बच्चा चिचिया उठल

जेना कुनैन गर में आबी गेलैक --

बाबा, हम ते कतो देश नै देखैत छी

नही ते देशभाक्तिक कोनो गीत कतो

सुनैत छी

देश शब्द पढैत छी किताब में

देशभाक्तिक शब्दार्थ बूझैत छी किताब से

अहाँ किदन कहाँ बजैत छी.....

बाबाक आंखि पनिआय गेल ,सून में तकैत

पीठ पर मारल गोराक कोड़ा क दर्द

फेर शुरू भ गेल.....

बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

१.प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त्त (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सर्वप्रथम अपन दुनू हाथ देखबाक चाही, आ' ई श्लोक बजबाक चाही।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

करक आगाँ लक्ष्मी बसैत छथि, करक मध्यमे सरस्वती, करक मूलमे ब्रह्मा स्थित छथि। भोरमे ताहि द्वारे करक दर्शन करबाक थीक।

२.संध्या काल दीप लेसबाक काल-

दीपमूले स्थितो ब्रह्मा दीपमध्ये जनार्दनः।

दीपाग्रे शङ्करः प्रोक्तः सन्ध्याज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शङ्कर स्थित छथि। हे संध्याज्योति! अहाँकेँ नमस्कार।

३.सुतबाक काल-

रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।

शयने यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति॥

जे सभ दिन सुतबासँ पहिने राम, कुमारस्वामी, हनूमान्, गरुड़ आऽ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

४. नहेबाक समय-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कावेरी धार। एहि जलमे अपन सान्निध्य दिअ।

५.उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

समुद्रक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भारत अछि आऽ ओतुका सन्तति भारती कहबैत छथि।

६.अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा।

पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥

जे सभ दिन अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मण्दोदरी, एहि पाँच साध्वी-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

७.अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः॥

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृपाचार्य आऽ परशुराम- ई सात टा चिरञ्जीवी कहबैत छथि।

८.साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी

उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादान्तस्य धूर्जटेः

जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला॥

९. बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाक्षत मंत्र(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्नित्यस्य प्रजापतिर्ॠषिः। लिंभोक्ता देवताः। स्वराडुत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥

आ ब्रह्मंन् ब्राह्मणो ब्रंह्मवर्चसी जांयतामा राष्ट्रे रांजन्यः शुरेंऽइषव्योऽतिव्याधी मंहारथो जांयतां दोग्ध्रीं धेनुर्वोढांनड्वानाशुः सप्तिः पुरंन्धिर्योवां जिष्णू रंथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजंमानस्य वीरो जायतां निकामे-निंकामे नः पर्जन्यों वर्षतु फलंवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगेक्षमो नः कल्पताम्॥२२॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।

ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ' सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ' शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बरद भार वहन करएमे सक्षम होथि आ' घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम होथि आ' युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ' नेतृत्व देबामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ' औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ' मित्रक उदय होए॥

मनुष्यकें कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वर्णन एहि मंत्रमे कएल गेल अछि।

एहिमे वाचकलुप्तोपमालड़्कार अछि।

अन्वय-

ब्रह्मंन् - विद्या आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म

राष्ट्रे - देशमे

ब्रंह्मवर्चसी-ब्रह्म विद्याक तेजसँ युक्त

आ जांयतां- उत्पन्न होए

रांजन्यः-राजा

शुरेंऽ बिना डर बला

इषव्यो- बाण चलेबामे निपुण

ऽतिव्याधी-शत्रुकेँ तारण दय बला

मंहारथो-पैघ रथ बला वीर

दोग्ध्रीं-कामना(दूध पूर्ण करए बाली)

धेनुर्वोढा॑नड्वाना॒शुः धेनु-गौ वा वाणी वोंढा॑नड्वा- पैघ बरद ना॒शुः-आशुः-त्वरित

सप्तिः-घोड़ा

पुर॑न्धि॒र्योवा॑- पुर॑न्धि- व्यवहारकेँ धारण करए बाली यो॑वा-स्त्री

जि॒ष्णू-शत्रुकेँ जीतए बला

र॑थे॒ष्ठाः-रथ पर स्थिर

स॒भेयो॒-उत्तम सभामे

युवास्य-युवा जेहन

यज॑मानस्य-राजाक राज्यमे

वी॒रो-शत्रुकेँ पराजित करएबला

निका॒मे-निंकामे-निश्चययुक्त कार्यमे

नः-हमर सभक

प॒र्जन्यों-मेघ

वर्षतु-वर्षा होए

फल॑वत्यो-उत्तम फल बला

ओष॑धयः-औषधिः

पच्यन्तां- पाकए

योगेक्ष॒मो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा

नः॑-हमरा सभक हेतु

कल्पताम्-समर्थ होए

ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर,तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संरक्षित करी।

Input: (कोष्ठकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-रोमनमे टाइप करू। Input in Devanagari, Mithilakshara or Phonetic-Roman.)

Output: (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर आ फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे। Result in Devanagari, Mithilakshara and Phonetic-Roman/ Roman.)

इंग्लिश-मैथिली-कोष / मैथिली-इंग्लिश-कोष प्रोजेक्टकेँ आगू बढ़ाऊ, अपन सुझाव आ योगदानई-मेल द्वारा ggajendra@videha.com पर पठाऊ।

विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देल विकल्पमेसँ लैंगुएज एडीटर द्वारा कोन रूप चुनल जएबाक चाही:

वर्ड फाइलमे बोल्ड कएल रूप:

1.होयबला/ होबयबला/ होमयबला/ हेब'बला, हेम'बला/ होयबाक/***होबएबला*** /**होएबाक**
2. आ'/आऽ **आ**
3. क' लेने/**कऽ लेने**/**कए लेने**/कय लेने/ल'/**लऽ**/लय/**लए**
4. भ' गेल/**भऽ गेल**/भय गेल/**भए गेल**
5. कर' गेलाह/**करऽ गेलह**/**करए गेलाह**/करय गेलाह
6. **लिअ/दिअ** लिय',दिय',लिअ',दिय'/
7. कर' बला/**करऽ बला**/ करय बला करै बला/क'र' बला / ***करए बला***
8. **बला** वला
9. **आङ्ल** आंग्ल
10. **प्रायः** प्रायह
11. **दुःख** दुख
12. चलि गेल **चल गेल**/चैल गेल
13. **देलखिन्ह** देलकिन्ह, देलखिन
14. **देखलन्हि** देखलनि/ देखलैन्ह
15. **छथिन्ह**/ **छलन्हि** छथिन/ छलैन/ छलनि
16. **चलैत**/**दैत** चलति/दैति
17. **एखनो** अखनो
18. **बढ़न्हि** बढन्हि
19. ओ'/ओऽ(सर्वनाम) **ओ**
20. **ओ** (संयोजक) ओ'/ओऽ
21. **फाँगि**/फाङ्गि फाइंग/फाइङ
22. **जे** जे'/जेऽ
23. **ना-नुकुर** ना-नुकर
24. केलन्हि/**कएलन्हि**/कयलन्हि
25. तखन तँ/ **तखन तँ**
26. जा' रहल/जाय रहल/**जाए रहल**
27. निकलय/**निकलए लागल** बहराय/ **बहराए लागल** निकल'/बहरै लागल

28. ओतय/जतय जत'/ओत'/ **जतए/ ओतए**
29. **की फूरल जे** कि फूरल जे
30. **जे** जे'/जेऽ
31. **कूदि**/यादि(मोन पारब) कूइद/याइद/कूद/याद/ ***यादि (मोन)***
32. **इहो/ ओहो**
33. **हँसए/** हँसय **हँसऽ**
34. **नौ आकि दस**/नौ किंवा दस/ नौ वा दस
35. **सासु-ससुर** सास-ससुर
36. **छह/ सात** छ/छः/सात
37. **की** की'/कीऽ (दीर्घीकारान्तमे ऽ वर्जित)
38. **जबाब** जवाब
39. **करएताह**/ करयताह करेताह
40. दलान दिशि दलान दिश/***दलान दिस***
41. **गेलाह** गएलाह/गयलाह
42. **किछु आर/** किछु और
43. **जाइत छल** जाति छल/जैत छल
44. **पहुँचि/ भेटि जाइत छल** पहुँच/भेट जाइत छल
45. **जबान** (युवा)/ **जवान**(फौजी)
46. लय/**लए** क'/**कऽ/*लए कए*/ लऽ कऽ/ लऽ कए**
47. ल'/**लऽ** कय/ **कए**
48. **एखन**/अखने अखन/**एखने**
49. **अहींकेँ** अहीँकेँ
50. **गहींर** गहीँर
51. **धार पार केनाइ** धार पार केनाय/केनाए
52. जेकाँ जँकाँ/ **जकाँ**
53. **तहिना** तेहिना
54. **एकर** अकर
55. बहिनउ **बहनोइ**
56. **बहिन** बहिनि
57. **बहिन-बहिनोइ** बहिन-बहनउ
58. **नहि/ नै**
59. **करबा** / करबाय/ **करबाए**
60. **तँ**/ त ऽ तय/**तए**

61. भाय भै/***भाए***
62. **भाँय**
63. यावत **जावत**
64. माय मै / ***माए***
65. **देन्हि**/दएन्हि/ दयन्हि **दन्हि**/ दैन्हि
66. द'/ **दऽ/ दए**
67. **ओ** (संयोजक) ओऽ (सर्वनाम)

68. **तका** कए तकाय **तकाए**
69. पैरे (on foot) **पएरे**
70. **ताहुमे ताहूमे**

71. **पुत्रीक**
72. **बजा** कय/ **कए**
73. बननाय/*बननाइ*
74. **कोला**
75. **दिनुका** दिनका
76. **ततहिसँ**
77. **गरबओलन्हि गरबेलन्हि**
78. **बालु** बालू
79. **चेन्ह** चिन्ह(अशुद्ध)
80. **जे** जे'
81. **से/ के** से'/के'
82. **एखुनका** अखनुका
83. भुमिहार **भूमिहार**
84. सुगर **सूगर**
85. झठहाक **झटहाक**
86. **छूबि**
87. करइयो/ओ करैयो/*करिऔ-करइयौ*
88. **पुबारि** पुबाइ
89. झगड़ा-झाँटी **झगड़ा-झाँटि**
90. **पएरे-पएरे** पैरे-पैरे
91. **खेलएबाक**
92. ***खेलेबाक***
93. **लगा**
94. **होए- हो**
95. **बुझल** बूझल
96. **बूझल** (संबोधन अर्थमे)
97. **यैह** यएह / *इएह*
98. **तातिल**
99. अयनाय- अयनाइ/ *अएनाइ*
100. **निन्न-** निन्द
101. **बिनु** बिन
102. **जाए** जाइ
103. **जाइ** (in different sense)-last word of sentence
104. **छत पर आबि जाइ**
105. **ने**
106. **खेलाए** (play) **खेलाइ**

107. **शिकाइत**- शिकायत
108. **ढप**- ढ़प
109. **पढ़- पढ**
110. कनिए/ **कनिये** कनिञे
111. **राकस**- राकश
112. **होए**/ होय **होइ**
113. अउरदा- **औरदा**
114. **बुझेलन्हि** (different meaning- got understand)
115. **बुझएलन्हि**/ बुझयलन्हि (understood himself)
116. चलि- **चल**
117. **खधाइ**- खधाय
118. **मोन पाड़लखिन्ह** मोन पारलखिन्ह
119. **कैक**- कएक- **कइएक**
120. **लग** ल'ग
121. **जरेनाइ**
122. **जरओनाइ- जरएनाइ**/जरयनाइ
123. **होइत**
124. **गरबेलन्हि/ गरबओलन्हि**
125. **चिखैत-** (to test)चिखइत
126. **करइयो** (willing to do) करैयो
127. जेकरा- **जकरा**
128. **तकरा**- तेकरा
129. **बिदेसर स्थानेमे**/ **बिदेसरे स्थानमे**
130. करबयलहुँ/ **करबएलहुँ**/ करबेलहुँ
131. **हारिक** (उच्चारण हाइरक)
132. **ओजन** वजन
133. **आधे भाग/ आध-भागे**
134. **पिचा** / पिचाय/**पिचाए**
135. नञ/ **ने**
136. **बच्चा** नञ **(ने) पिचा जाय**
137. **तखन ने** (नञ) **कहैत अछि**।
138. **कतेक गोटे**/ कताक गोटे
139. **कमाइ- धमाइ** कमाई- धमाई
140. **लग** ल'ग
141. **खेलाइ** (for playing)
142. **छथिन्ह** छथिन
143. **होइत** होइ
144. क्यो कियो / **केओ**
145. **केश** (hair)
146. **केस** (court-case)
147. **बननाइ**/ बननाय/ बननाए

148. **जरेनाइ**
149. **कुरसी** कुर्सी
150. **चरचा** चर्चा
151. **कर्म** करम
152. **डुबाबए**/ डुमाबय/ डुमाबए
153. **एखुनका**/ अखुनका
154. **लय** (वाक्यक अतिम शब्द)- **लऽ**
155. **कएलक** केलक
156. **गरमी** गर्मी
157. **बरदी** वर्दी
158. **सुना गेलाह** सुना'/सुनाऽ
159. **एनाइ-गेनाइ**
160. **तेना ने घेरलन्हि**
161. नञि
162. **डरो** ड'रो
163. **कतहु**- कहीं
164. **उमरिगर**- उमरगर
165. **भरिगर**
166. धोल/**धोअल** धोएल
167. गप/**गप्प**
168. **के** के'
169. **दरबज्जा**/ दरबजा
170. **ठाम**
171. **धरि** तक
172. **घूरि** लौटि
173. **थोरबेक**
174. **बड्ड**
175. **तोँ**/ **तूँ**
176. **तोँहि**(पद्यमे ग्राह्य)
177. **तोँही** / **तोँहि**
178. **करबाइए** करबाइये
179. **एकेटा**
180. **करितथि** करतथि

181. **पहुँचि** पहुँच
182. राखलन्हि **रखलन्हि**
183. **लगलन्हि** लागलन्हि
184. **सुनि** (उच्चारण सुइन)
185. **अछि** (उच्चारण अइछ)
186. **एलथि गेलथि**
187. **बितओने** बितेने

188. **करबओलन्हि/ करेलखिन्ह**
189. **करएलन्हि**
190. **आकि** कि
191. **पहुँचि** पहुँच
192. जराय/ **जराए जरा** (आगि लगा)
193. **से** से'
194. **हाँ मे हाँ** (हाँमे हाँ विभक्तिमे हटा कए)
195. **फेल** फैल
196. **फइल**(spacious) फैल
197. होयतन्हि/ **होएतन्हि** हेतन्हि
198. हाथ मटिआयब/ हाथ मटियाबय/***हाथ मटिआएब***
199. **फेका** फेंका
200. **देखाए देखा**
201. **देखाबए**
202. **सत्तरि** सत्तर
203. **साहेब** साहब
204.गेलैन्ह/ **गेलन्हि**
205.हेबाक/ **होएबाक**
206.केलो/ **कएलहुँ**
207. किछु न किछु/ **किछु ने किछु**
208.घुमेलहुँ/ **घुमओलहुँ**
209. एलाक/ **अएलाक**
210. **अः**/ अह
211.लय/ **लए** (अर्थ-परिवर्त्तन)
212.कनीक/ **कनेक**
213.सबहक/ **सभक**
214.मिलाऽ/ **मिला**
215.**कऽ**/ क
216.जाऽ/ **जा**
217.आऽ/ **आ**
218.**भऽ**/भ' (' फॉन्टक कमीक द्योतक)

219.**निअम**/ नियम
220.**हेक्टेअर**/ हेक्टेयर
221.**पहिल अक्षर ढ/ बादक/बीचक ढ़**
222.तहिं/**तहिँ**/ तञि/ तैं
223.कहिं/ **कहीँ**
224.तँइ/ **तइँ**
225.नँइ/ नइँ/ नञि/ ***नहि***
226.है/ **हए**
227.छञि/ **छै**/ **छैक**/छइ

228.**दृष्टिएँ**/ दृष्टियेँ

229.**आ** (come)/ आऽ(conjunction)

230. **आ** (conjunction)/ आऽ(come)

231.कुनो/ **कोनो**

२३२.गेलैन्ह-**गेलन्हि**

२३३.हेबाक- **होएबाक**

२३४.केलौँ- कएलौँ- **कएलहुँ**

२३५.किछु न किछ- **किछु ने किछु**

२३६.केहेन- **केहन**

२३७.आऽ (come)-**आ** (conjunction-and)/***आ***

२३८. **हएत**-हैत

२३९.घुमेलहुँ-**घुमएलहुँ**

२४०.एलाक- **अएलाक**

२४१.होनि- होइन/***होन्हि***

२४२.**ओ**-राम ओ श्यामक बीच(conjunction), ओऽ कहलक (he said)/***ओ***

२४३.**की हए/ कोसी अएली हए**/ की है। की हइ

२४४.**दृष्टिएँ**/ दृष्टियेँ

२४५.**शामिल**/ सामेल

२४६.तैँ / **तँए**/ तञि/ तहिं

२४७.**जौँ**/ ज्योँ

२४८.**सभ**/ सब

२४९.सभक/ **सबहक**

२५०.कहिं/ **कहीं**

२५१.कुनो/ **कोनो**

२५२.**फारकती भऽ गेल**/ **भए गेल**/ भय गेल

२५३.कुनो/ **कोनो**

२५४.**अः**/ अह

२५५.**जनै**/ जनञ

२५६.**गेलन्हि/ गेलाह** (अर्थ परिवर्तन)

२५७.केलन्हि/ **कएलन्हि**

२५८.लय/ **लए (**अर्थ परिवर्तन)

२५९.कनीक/ **कनेक**

२६०.**पठेलन्हि**/ **पठओलन्हि**

२६१.**निअम**/ नियम

२६२.**हेक्टेअर**/ हेक्टेयर

२६३.पहिल अक्षर रहने ढ/ बीचमे रहने ढ़

२६४.आकारान्तमे बिकारीक प्रयोग उचित नहि/ अपोस्ट्रोफीक प्रयोग फान्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक ओकर बदला अवग्रह (बिकारी) क प्रयोग उचित

२६५.केर/-**क**/ कऽ/ के

२६६.छैन्हि- **छन्हि**

२६७.**लगैए/** लगैये

२६८.**होएत**/ **हएत**

२६९.**जाएत**/ जएत

२७०.**आएत/** अएत/ **आओत**

२७१.**खाएत**/ खएत/ खैत

२७२.**पिअएबाक**/ **पिएबाक**

२७३.**शुरु**/ **शुरुह**

२७४.**शुरुहे**/ **शुरुए**

२७५.**अएताह**/**अओताह**/ एताह

२७६.**जाहि**/ जाइ/ जै

२७७.**जाइत**/ जैतए/ **जइतए**

२७८.**आएल**/ अएल

२७९.**कैक**/ कएक

२८०.आयल/ अएल/ **आएल**

२८१. **जाए**/ जै/ जए

२८२. नुकएल/ **नुकाएल**

२८३. **कठुआएल**/ कठुअएल

२८४. **ताहि**/ तै

२८५. गायब/ **गाएब**/ गएब

२८६. **सकै**/ **सकए**/ सकय

२८७.**सेरा**/**सरा**/ **सराए** (भात सेरा गेल)

२८८.**कहैत रही/देखैत रही/ कहैत छलहुँ/ कहै छलहुँ- एहिना चलैत/ पढ़ैत (पढ़ै-पढ़ैत अर्थ कखनो काल परिवर्तित)-आर बुझै/ बुझैत (बुझै/ बुझैत छी, मुदा बुझैत-बुझैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। छैक/ छै। बचलै/ बचलैक। रखबा/ रखबाक । बिनु/ बिन। रातिक/ रातुक**

२८९. **दुआरे**/ **द्वारे**

२९०.भेटि/ **भेट**

२९१. **खन**/ **खुना** (भोर खन/ भोर खुना)

२९२.तक/ **धरि**

२९३.**गऽ/गै** (meaning different-जनबै गऽ)

२९४.सऽ/ **सँ** (मुदा दऽ, लऽ)

२९५.त्त्व,(तीन अक्षरक मेल बदला पुनरुक्तिक एक आ एकटा दोसरक उपयोग) आदिक बदला त्व आदि। महत्त्व/ **महत्व**/ **कर्ता**/ कर्त्ता आदिमे त्त संयुक्तक कोनो आवश्यकता मैथिलीमे नहि अछि। **वक्तव्य**

२९६.**बेसी**/ बेशी

२९७.बाला/वाला **बला**/ वला (रहैबला)

२९८.**वाली**/ (बदलएवाली)

२९९.वार्त्ता/ **वार्ता**

300. **अन्तर्राष्ट्रिय**/ अन्तर्राष्ट्रीय

३०१. **लेमए**/ **लेबए**

३०२.**लमछुरका**, **नमछुरका**

३०२.**लागै**/ **लगै** (भेटैत/ भेटै)

३०३.**लागल**/ **लगल**

३०४.हबा/ **हवा**

३०५.**राखलक**/ **रखलक**

३०६.**आ** (come)/ **आ** (and)

३०७. **पश्चाताप**/ पश्चात्ताप

३०८. ऽ केर व्यवहार शब्दक अन्तमे मात्र, यथासंभव बीचमे नहि।

३०९.**कहैत**/ **कहै**

३१०. **रहए (छल)**/ **रहै (छलै)** (meaning different)

३११.**तागति**/ **ताकति**

३१२.**खराप**/ खराब

३१३.**बोइन**/ बोनि/ बोइनि

३१४.जाठि/ **जाइठ**

३१५.कागज/ **कागच**

३१६.**गिरै** (meaning different- swallow)/ **गिरए** (खसए)

३१७.**राष्ट्रिय**/ राष्ट्रीय

उच्चारण निर्देश:

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम , मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नहि सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य **श**मे जीह तालुसँ , **ष**मे मूर्धासँ आ दन्त **स**मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे **ष** कें वैदिक संस्कृत जेकाँ **ख** सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जेकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जेकाँ (यथा संयोग आ गणेश **संजोग** आ **गड़ेस** उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

अछि- अ इ छ **ऐछ**

छथि- छ इ थ चैथ

पहुँचि- प हुँ इ च

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ एहि सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा एहिमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कें संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ कें री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- एहि लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककेँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि।

फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।

उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइव http://www.videha.co.in/ पर उपलब्ध अछि। फेर **कें** / **सँ** / **पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ**/ **के**/ **कऽ** हटा कऽ। **एहिमे सँ** मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ जेना **छहटा** मुदा **सभ टा**। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नहि। घरबलामे **बला** मुदा घरवालीमे **वाली** प्रयुक्त करू।

रहए- **रहै** मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास **रहै** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्रा ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत **रहए**।

छलै, छलए मे सेहो एहि तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

संयोगने- (उच्चारण **संजोगने**)

कँ/ के / **कऽ**

केर- **क** (**केर** क प्रयोग नहि करू)

क (जेना रामक) **रामक** आ संगे (उच्चारण **राम के** / **राम कऽ** सेहो)

सँ- सऽ

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नहि। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकेँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

कँ जेना रामकँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ तऽ त केर एहि सभक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थँ प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना *के कहलक?*

नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ एहि सभक उच्चारण- नै

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नहि) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नहि- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नहि)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नहि)।

राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नहि)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछैले/

पोछैए/ पोछए/ (अर्थ परिवर्तन)

पोछए/ पोछै

ओ लोकनि (हटा कऽ, ओ मे बिकारी नहि)

ओइ/ ओहि

ओहिले/ ओहि लेल

जएबेँ/ बैसबेँ

पँचभइयाँ

देखियौक (देखिऔक बहि- तहिना अ मे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)

जकाँ/ जेकाँ

तँइ/ **तैँ**

होएत/ **हएत**

नञि/ **नहि**/ नँइ/ नइँ

सौँसे

बड़/ बड़ी (झोराओल)

गाए (गाइ नहि)

रहलेँ/ पहिरतैँ

हमहीं/ अहीं

सब - **सभ**

सबहक - सभहक

धरि - तक

गप- बात

बूझब - समझब

बुझलहुँ - समझलहुँ

हमरा आर - **हम सभ**

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नहि)

मे कँ सँ पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेशी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटाऊ।

एकटा दूटा (मुदा कैक टा)

बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नहि। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नहि (जेना दिअ, आ)

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d'etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नहि दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

अइमे, एहिमे

जइमे, जाहिमे

एखन/ अखन/ अइखन

केँ (के नहि) **मे** (अनुस्वार रहित)

भऽ

मे

दऽ

तँ (**तऽ त नहि)**

सँ (**सऽ स नहि)**

गाछ तर

गाछ लग

साँझ खन

जो (जो go, करै जो do)

३.नेपाल आ भारतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली

1.नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली

(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१.*पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार*: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२.*ढ आ ढ़* : ढ़क उच्चारण ''र् ह''जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ ''र् ह''क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३.*व आ ब* : मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहि सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४.*य आ ज* : कतहु-कतहु ''य''क उच्चारण ''ज''जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५.*ए आ य* : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे ''ए''केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ ''य''क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो ''ए''क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६. *हि, हु तथा एकार, ओकार* : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आन्हु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७. *ष तथा ख* : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८. *ध्वनि-लोप* : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़’ गेलाह, क’ लेल, उठ’ पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९.*ध्वनि स्थानान्तरण* : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०.*हलन्त()क प्रयोग* : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषा सम्बन्धी निअम अनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरण सम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि कऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽबला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़ि रहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कुण्ठित नहि होइक, ताहू दिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए।

-(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

2. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

1. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर

अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।

2. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाय: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

4. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

5. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

6. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

7. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

8. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

9. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

10. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

11. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

12. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

13. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

14. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

15. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

16. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

17. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

18. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।

19. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

20. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

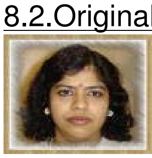
21.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६

8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

8.1.NAAGPHAANS-PART_XIII-Maithili novel written by  Dr.Shefalika Verma-

Translated by  Dr.Rajiv Kumar Verma and  Dr.Jaya Verma, Associate Professors, Delhi University, Delhi

8.2.Original Poem in Maithili by  Gajendra Thakur Translated into English by  Jyoti Jha Chaudhary -**Delhi is far away**

DATE-LIST (year- 2010-11)

(१४१८ साल)

Marriage Days:

Nov.2010- 19

Dec.2010- 3,8

January 2011- 17, 21, 23, 24, 26, 27, 28 31

Feb.2011- 3, 4, 7, 9, 18, 20, 24, 25, 27, 28

March 2011- 2, 7

May 2011- 11, 12, 13, 18, 19, 20, 22, 23, 29, 30

June 2011- 1, 2, 3, 8, 9, 10, 12, 13, 19, 20, 26, 29

Upanayana Days:

February 2011- 8

March 2011- 7

May 2011- 12, 13

June 2011- 6, 12

Dviragaman Din:

November 2010- 19, 22, 25, 26

December 2010- 6, 8, 9, 10, 12

February 2011- 20, 21

March 2011- 6, 7, 9, 13

April 2011- 17, 18, 22

May 2011- 5, 6, 8, 13

Mundan Din:

November 2010- 24, 26

December 2010- 10, 17

February 2011- 4, 16, 21

March 2011- 7, 9

April 2011- 22

May 2011- 6, 9, 19

June 2011- 3, 6, 10, 20

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami-31 July

Somavati Amavasya Vrat- 1 August

Madhushravani-12 August

Nag Panchami- 14 August

Raksha Bandhan- 24 Aug

Krishnastami- 01 September

Kushi Amavasya- 08 September

Hartalika Teej- 11 September

ChauthChandra-11 September

Vishwakarma Pooja- 17 September

Karma Dharma Ekadashi-19 September

Indra Pooja Aarambh- 20 September

Anant Caturdashi- 22 Sep

Agastyarghadaan- 23 Sep

Pitri Paksha begins- 24 Sep

Jimootavahan Vrata/ Jitia-30 Sep

Matri Navami- 02 October

Kalashsthapan- 08 October

Belnauti- 13 October

Patrika Pravesh- 14 October

Mahastami- 15 October

Maha Navami - 16-17 October

Vijaya Dashami- 18 October

Kojagara- 22 Oct

Dhanteras- 3 November

Diyabati, shyama pooja- 5 November

Annakoota/ Govardhana Pooja-07 November

Bhratridwitiya/ Chitragupta Pooja-08 November

Chhathi- -12 November

Akshyay Navami- 15 November

Devotthan Ekadashi- 17 November

Kartik Poornima/ Sama Bisarjan- 21 Nov

Shaa. ravivratarambh- 21 November

Navanna parvan- 24 -26 November

Vivaha Panchmi- 10 December

Naraknivaran chaturdashi- 01 February

Makara/ Teela Sankranti-15 Jan

Basant Panchami/ Saraswati Pooja- 08 Februaqry

Achla Saptmi- 10 February

Mahashivaratri-03 March

Holikadahan-Fagua-19 March

Holi-20 Mar

Varuni Yoga- 31 March

va.navaratrarambh- 4 April

vaa. Chhathi vrata- 9 April

Ram Navami- 12 April

Mesha Sankranti-Satuani-14 April

Jurishital-15 April

Somavati Amavasya Vrata- 02 May

Ravi Brat Ant- 08 May

Akshaya Tritiya-06 May

Janaki Navami- 12 May

Vat Savitri-barasait- 01 June

Ganga Dashhara-11 June

Jagannath Rath Yatra- 3 July

Hari Sayan Ekadashi- 11 Jul

Aashadhi Guru Poornima-15 Jul

NAAGPHAANS- Maithili novel written by Dr. Shefalika Verma in 2004- Arushi Aditi Sanskriti Publication, Patna- Translated by  Dr. Rajiv Kumar Verma and 

Dr. Jaya Verma- Associate Professors, Delhi University, Delhi.

NAAGPHAANS XIII

That day with Simant Dhara's head rested on his chest --------

Dhara, do you notice sunrise? Sun's bright rays remove darkness slowly and gradually leading to ushering of tomorrow. Each sunrise results into tomorrow which converts into today.

Dhara, we just need light of knowledge to remove darkness. Light comes and darkness disappears. Even a small candle light braves the darkness, finally emerging victorious. We only need strong will and desire to achieve.

Dhara took a deep breathe in Simant's heavenly embrace. Her eyes closed but looking through the entire universe complete silence Dhara was able to count her heart beat initially she confused it with Simant's heart beat she ultimately realized the heart beat represented the bliss of togetherness, the zenith of happiness. Dhara stared at Simant's face

My love has never made you captive. I never obstructed your path your success is my happiness. I want you to scale the heights of success Dhara clung to Simant like Deepshikha wherever you go, you will find me there standing firmly as a lamp post, as a beacon. I will always light your path.

Simant softly kissed Dhara it appeared to be a divine bliss for Dhara.

That was Simant's last touch Dhara still feels imbued with that soft, loving and caring touch and she has kept that touch as a treasure-trove.

Ma- Ma

Kadamba's voice brought Dhara back to present.

Yes .. Beta

As if Simant has come back as a light to remove the darkness.

2

Ma, you will be happy to see this.

I always become happy to see your face.

Ma, please do not lie-

Kadamba's voice was shaking with joy —besides me and Papa, there is somebody else who gives you unlimited happiness.

Dhara trembled —Manjul's face flashed before her eyes —what .. what?

Yes Ma —Manjul .. Ma … Manjul Vikalpa —my sister Ma .. my sister. Please go through this letter Ma.

Dhara started going through that letter with shivering hand.

Ma

Pranam,

I am thrilled while writing this letter. Right now I am with your pahun Vikalpaji. You must be happy to read this.

I am unable to explain where I had reached with the passage of time. I was also at fault. I was in job earning a lot which made me arrogant.

Due to this arrogance I failed to get love from a great mother like you -- I also failed to protect the honour and prestige of Papa.

I despised others never tolerated counter- views always justified my mistakes.

Now I realize Ma, my main demerit was the fact that I was not able to tolerate criticism of my naiher. Vikalpa's mother used to console me do not take it otherwise, teasing of kaniya in sasur is a normal practice.

You had also enlightened me on several occasions – do not retaliate. But I was not able to cultivate patience.

I also alienated my god like in-laws. I devastated their feelings through continuous praise of naiher.

3

Ma, why girls lack tolerance and patience these days? Why they are rigid in their approach and attitude? People say – they have inherited these samskar from their parents, but my parents are neither rigid nor arrogant. Papa had yearning for money but that was also for our betterment. How modest and humble you are. How cultured Kadamba Bhaiya is. Why I am so rigid and obstinate?

I feel guilty whenever I see relationship of love-respect between Sas-Bahu in any family.

One day I had visited Shubha. I became enchanted to see the mellifluous relationship which she had with her mother-in-law.

Such a well educated Shubha telling her illiterate mother-in-law Ma, I do not know anything. I learn everything from you. How can I attain so much amount of knowledge .

No kaniya, you are so well-educated. You do not lack anything Sas replied laughlingly.

Ma, mere degree and bookish knowledge do not make you knowledgeable. Your experience with life will certainly enrich my knowledge. It is you who have taught me how to behave with others .. how to interact Whatever I am today is mainly because of you.

Sas became overwhelmed with joy to hear these words of daughter-in-law.

Ma, I have expressed the truth. My eyes are laden with tears …. drops started rolling over shubha's cheeks.

Shubha keeps on telling me If mother-in-law scolds me I accept my mistake even if I have not committed the same. I never retaliate. Whenever she tells me to cook something I never say I know the recipe but I request her for the same.

Ma, how different Shubha is from me.

Ma, thereafter I broke my arrogant isolation — gaining first hand information through interacting with the world.

I realized the family rested on love and faith. Even if a single brick is displaced the house will break down, so is the family. I will not break my sweet nest. Life faces many questions but all of them are not answered.

Pearl always glitters in oyster … in the same manner woman sparkles in the world of love and faith. Ma, woman is the centre of family, the beacon of family.

4

Ma, woman is not exploited but she lets her to be exploited. If you realize, you also observe the opposite i.e. men are also exploited. In order to give happiness to family men also work as drudge or a plodder.

Ma, relationship between wife-husband is neither contractual nor compromise — there is no place for any doubt in it.

Now I realize the meaning of perennial love — it is within, it accepts both qualities and weaknesses, it takes you beyond your limit, connects your soul to divine soul.

I have wasted six years of my precious life my irrational past hovers around my eyes as a bad drama and dream

One day I was returning from office at a late hour it was raining heavily. I was not able to get any bus, auto or taxi. I was wet and shivering.

What is the matter Bhabhi? I became relieved to see Sirish, a close friend of Vikalpa who appeared as angel in this hour of crisis. Sirish left me home by his car.

Ma, from this moment onwards, my life took a nosedive a period of misfortune and woe began.

TO BE CONTINUED

Original Poem in Maithili by Gajendra Thakur Translated into English by Jyoti Jha Chaudhary

Jyoti Jha Chaudhary, Date of Birth: December 30 1978,Place of Birth- Belhvar (Madhubani District), Education: Swami Vivekananda Middle School, Tisco Sakchi Girls High School, Mrs KMPM Inter College, IGNOU, ICWAI (COST ACCOUNTANCY); Residence- LONDON, UK; Father- Sh. Shubhankar Jha, Jamshedpur; Mother- Smt. Sudha Jha- Shivipatti. Jyoti received editor’s choice award from www.poetry.comand her poems were featured in front page of www.poetrysoup.com for some period.She learnt Mithila Painting under Ms. Shveta Jha,

Basera Institute, Jamshedpur and Fine Arts from Toolika, Sakchi, Jamshedpur (India). Her Mithila Paintings have been displayed by Ealing Art Group at Ealing Broadway, London.



Gajendra Thakur (b. 1971) is the editor of Maithili ejournal "Videha" that can be viewed at http://www.videha.co.in/ . His poem, story, novel, research articles, epic – all in Maithili language are lying scattered and is in print in single volume by the title "KurukShetram." He can be reached at his email: ggajendra@airtelmail.in

Delhi is far away

How to go to Delhi

To get admitted in the hospital's ward

Train is late

I reached Delhi anyhow

But doctor is busy here

Delhi's government doctors

Told to come today, tomorrow, next day

I am exhausted

Delhi is far away

Era changed, republic born

But train to Delhi is late

And doctors escaped

Delhi is still far away.

.

VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR- XXX

संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च- ३०

(मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्)

-गजेन्द्र ठक्कुरः

(आगाँ)

ACKNOWLEDGEMENTS: chamu krishna shashtry, janardan hegde, vinayak hegde, sudhishtha kumar mishra, shravan kumar, kailashpati jha, H.N.VISHWAS AND other TEACHERS.

त्रिंशत्तमः पाठः

अद्य संभाषणस्य अभ्यासम् कुर्मः वा अस्तु कुर्मः इदानीम् दीर्घम् वाक्यम् रचयामः आरंभम् अहम् करोमि ___ अनंतरम् भवंतः वदन्तु ___

प्रेषितवान् अन्यम् शब्दम् योजयित्वा वाक्यम् वदंतु कः वदतु वदतु गोपालः प्रेषितवान्

मुकुन्दः पत्राणि विदेशम् प्रेषितवान्

मुकुन्दः पत्राणि विदेशम् कदा प्रेषितवान्

मुकुन्दः पत्राणि विदेशम् सायंकाले/प्रातः प्रेषितवान्

मुकुन्दः पत्राणि विदेशम् ह्यः प्रेषितवान

मुकुन्दः पत्राणि विदेशम् कथम् प्रेषितवान

मुकुन्दः पत्राणि विदेशम् हस्तेन/शीघ्रम/विमानेन प्रेषितवान्

- यः अंते उपविष्टवान् सः बिपिनः य आरंभे उपविष्टवान् सः मञ्जूनाथ

- यः कुम्भम् करोति सः कुम्भकारः

- यः कृषिम् करोति सः कृषिकः

- यः शिल्पम् करोति सः शिल्पकारः

- यः वाणिज्यम् करोति सः वणिकः

- यः सः एतस्य अभ्यासं पुनः कुर्मः

- यः चित्रम् करोति सः चित्रकारः अहम् वदामि

- यः चित्रम् करोति सः चित्रकारः भवंतः वदंतु

- विनोदम् करोति विदूषकः

- काव्यम् लिखति कविः

- गायति गायकः

- यः लिखति सः लेखकः

- विद्यार्जनम् करोति विद्यार्थी

- पाकम् करोति पाचकः

- भिक्षाम् याचते भिक्षुकः

- वितरति वितारकः

- अभिनयम् करोति अभिनेता

- सेवाम् करोति सेवकः

- चिकित्साम् करोति चिकित्सकः

- कर्म करोति कर्मकारः

- वस्त्रं प्रक्षालयति रजकः

- लोहम् करोति लोहकारः

- वादयति वादकः

- युद्धम् करोति योद्धा

- अर्चकं करोति अर्चकः

- संशोधनं करोति विज्ञानी

- क्रीडति क्रीडालुः

- सीवनं करोति शोचिकः

- तक्षति तक्षकः

आरंभे या उपविष्टती अस्ति सा गौतमी

अंते या उपविष्टा अस्ति सा शालिनी

अंते या उपविष्टवती अस्ति सा शालिनी

- या मालाम् करोति सा मालाकारी

- या भिक्षाम् याचते सा भिक्षुकी

- या गायति सा गायिका

- या शिक्षयति सा शिक्षिका

- या वाहनम चालयति सा चालिका

- या वाद्यम वादयति सा वादिका

- या अभिनयम् करोति सा अभिनेत्री

- या लिखति सा लेखिका

पुस्तकस्य पार्श्वे यत् अस्ति तत् फलम् पेटिकायाः उपरि यत् अस्ति तत् करवस्त्राणि

अहम् यत् वदामि तत् श्रुणतंतु

अहम् यत् वदामि तत् पश्यमेव

अहम् यत् पठामि तत् संस्कृतमेव

इदानीम् अहम् एकाम् प्रहेलिकाम् वदामि

अपदो दूरगामी च

साक्षरो न य पण्डितः।

अमुखः स्फुटवका य

यो जानति स पण्डितः॥

एकः अस्ति तस्य अपदो तस्य पादः नस्ति सः दूरम् गच्छति, साक्षरो सः तस्य भुखम् नास्ति, स्फुटवक्ता सम्यक् वदति यः एतम् जानाति सः पण्डितः, कः जानाति अत्र समपत्रम् पोस्टकार्ड

1. तत्र नागेन्द्र पाण्डयः कः

2. यः पूजाम् कुर्वन अस्ति सः नागेन्द्र पाण्डयः

3. लोखन पाण्डयेः कः

1. यः सोपाना नाम् उपरि स्थितवान् अस्ति सः लोखन पाण्डयः

2. निर्मलाः का

1. या पीतवर्णाम् शातिकाम् कृतवती अस्ति सा एव निर्मला

सुभाषितम्

गच्छन् पिपीलको याति योजनानाम् शतान्यपि अगच्छन् वैनतोयोपि पदमेकम् आगच्छति ___

तस्य अर्थः एवम् अस्ति। पिपीलकः नाम् लघुः जंतुः सः यदा प्रयत्नशीलः भवति सः शतम् योजनानि अपि गंतुम् शक्नोति वैनतैयः सः बलवान् करूड़ः सः प्रयत्नं यदा न करोति सः बलवान् अपि एकम् पदम अपि अग्रे गंतुम् न शक्नोति। अतः अस्माभिः सर्वदा प्रत्यनः करणीयः एव।

कथा

कश्चन् ग्रामः। तत्र एकस्मिन् परिवारे सप्तसोदराः आसन्। ते सर्वे अलसाः। किमपि कार्यम् न कुर्वन् स्म। कदाचित् तेषाम् इच्छां अभवत्। पायसम् खादनीयम् इति। ते कथञ्चित् पायसम् अपि कृतवंतः किंतु शर्करा एव गृहे नास्ति इति तर्हि अनंतरम ज्ञातम। इदानीम् कः आपणम् गत्वा शर्करां आनयति इति तेषु, मध्ये विवादः संजातः तदानिम् तेषु अन्यतमः उपायमेकम सोचितवान् वयम् स्थालिकाषु पायसम् पूरयामः ___ ताषाम् स्थालिकानाम् पुरतः उपविष्ग्रामः यः प्रथमम् एकम् शब्दम् उच्चारयति सः विपणिम गच्छति इति। ते सर्वेपि एतत् उपायम अंगीकृत्य तथा एव स्थालिकानाम् पुरतः उपविष्टवंतः। ते महा अलसा खलु। अतः एव एक शब्दं अपि ते न उत्सादितवंतः। अत्रांतरे तत्र केचन् शनुकाः आगताः निश्चलम् उपविष्टवान् तान् अलसान् दृष्टवा एते मृताः इति मत्ता सर्वम् पायसम् खादितवंतः परस्परम् अभिनंददितवंतः च। तत्पश्चात् एकः शनुकः अललेषु अन्यतमस्य म्रतस्य लेहनम् कृतवान। तदा सः क्रोधेन् रे दुष्ट! एतावतं पर्यंतम् सर्वम् पायसम् खादितवान् आगतवान् वा। इति क्रोधेन् सः अनुक्रोशन उत्यितवान्। तदा अन्ये सर्वेपि उत्याय एक कंथेन एलः संभाषणं कृतवान् एषः संभाषणम् कृतवान् इति कथितवंतः तदानिमेव पार्श्वश्व प्रकोष्ठे सुप्तः तेष्तम् पिता जागरितः सः कोलाहलम् श्रुत्वा बदिः आगतवान् तदानिम् सः ज्ञातवान तत् ज्येष्टस्य पुत्रस्य कपाले चपदेकाम दत्वा रे मूर्ख भवान् ज्येष्ठः खलु भवता शर्करा आने तव्या असीत्। भवतास्म् आलस्य कारणात् एव अद्य शुनकाः सर्वम् पायसम् खादित्वा गतवंतः इति। आलस्यम् हि मनुष्याणान परम शत्रुः। तत् ज्येष्ठः क्षमाम् वाचितवान्। अन्ये अपि तम अनुश्रुतवंतः इति उक्तवान् ज्येष्ठः पुत्रः तु क्षमाम् याचितवान्। अन्ये अपि तम अनुश्रुतवंतः इति उक्तवान् ज्येष्ठः पुत्रः तु क्षमाम प्राथितवान् अन्ये अपि तम अनुश्रुतवंतः तदारभ्य सर्वे सोदराः परिश्रमेण कार्यम् कुर्वन् स्म।

संस्कृत अनुवाद मैथिली अनुवाद अंग्रेजी अनुवाद

अद्य कः अल्पाहारः/प्रातराशः?	हमरा सब आइ खन नास्तामे की खाएब।	What do we have for breakfast today?
पुनः सुपिष्टिकं मास्तु भोः।	कृप्या, ब्रेड दोबारासँ नहि देब।	Please, not bread again.
अद्य अल्पाहारार्थम् उपमा अस्ति।	आइ खन उपमा नास्तामे अछि।	Today there s Upama for breakfast.
अम्ब, बुभुक्षा भवति।	माए, हम बहुत भुखल छी।	Mother, I am hungry.
आगच्छतु, परिवेषणं करोमि।	आबे छलहुँ, हम अहाँक दे छलौ।	Come, I’ll serve you.
पाकः सिद्धः किम्?	की खाना तैयार भऽ गेल ये।	Is the food ready?
मम तु अतीव बुभुक्षा।	हमरा बड्ड जोरसँ भूख लागल	I am very much hungry.

	अछि।	
व्याघरणं कृतं चेत् पाकः सिद्धः एव।		The food is ready, but for seasoning.
पाकः तदा एव सिद्धः।	खाना क्तेक देरिसँ तैयार अछि।	Food is ready since long.
स्थालिकाः स्थापिताः किम्?	थाली सब राखि देलौ कि?	Have the plates been kept?
सर्वे मिलित्वा एव भोजनं कुर्मः।	सभ गोटे मिल कऽ खाना करू।	Let us all dine together.
एकं चषकम् आनयतु।	कृप्या एकटा गिलास आनब।	Please bring a glass.
हस्तौ प्रक्षलितवान् किम्?	की अहाँ अपन हाथ धोए लेलो।	Did you wash your hands?
परिवेषणं कृतं, शीघ्रम् आगच्छतु।	खाना कनीसन तेजीसँ परोसु।	Food has been served come quickly.
कियान् विलम्बः भोः, शीघ्रम् आगच्छतु।	किऐक विलंब भऽ रहल अछि,	How long will you take? Come quickly.

	कनेक जल्दी करू।	
पाकः शीतलः भवति।	खाना ठंडा भऽ जाएत।	The food is getting cold.
आगच्छतु, भोजनं कुर्मः।	आबू आबू खाना खाएक लेल।	Come let's eat.
इदमिदानीं भोजनं समाप्तम्।	हमर खाना तुरंत समाप्त भऽ गेल।	Just now I had food.
आगच्छतु, अस्माभिः सह भोजनं करोतु।	हम आबे छलौ, सब गोटे साथमे भोजन करब।	I come, have food with us.
मम भोजनम् अभवत्।		I have had food.
अस्तु, तर्हि केवलं पायसं वा स्वीकरोतु।		Okey. At least you have payasam (porridge).
पायसं मह्यं बहु अरोचत।		I liked payasam very much.
अम्ब, मह्यम् इतोऽपि आवशकम्।		Mother, I want some more.
मम पिपासा अस्ति।	हम बड्ड पियासल	I am thirsty.

	छी।	
चषके जलं पूरयतु।	कृप्या गिलासमे पानी डालि देब।	Please, fill water in the glass.
अन्नं बहु उष्णम् अस्ति।	भात बड्ड गरम अछि।	The rice is very hot.
'छोले' व्यञ्जनं रूचिकरम् अस्ति।		'Chole' is very tasty.
व्यञ्जने लवणं न्यूनम् अस्ति।		There is less salt in the curry.
अद्य किमपि रूचिकरं नास्ति।		Nothing is tasty today.
रोटिका आवश्यकी किम्?	अहाँकेँ रोटी चाही की?	Do you want roti?
आम्, परिवेषयतु।	हँ, कृप्या करि कऽ।	Yes, please.
मह्यम् अन्नम् इतोऽपि परिवेषयतु।		Please give me some more rice.
तत् मरीचिकायाः उपसेचनं पुनः परिवेषयतु।		Please serve that chilly chutney again.
आम्रस्य अवलेहः बहु कटु अस्ति।		The mango pickle is very pungent.
सूपः अस्ति किम्?		Do you've some 'daal'?
अहं सारं न इच्छामि।		I don't like 'saar' (soup).

मधुररोटिकां पुनः स्वीकरोतु।		Have sweet roti again.
स्वलपं परिवेषयतु, तावत् न आवश्यकम्।		Serve a little please, that much is not necessary.
बहु परिवेषयतवती।		You've served too much.
अधिकं नास्ति भोः।		It's not much.
किं भोः सङ्कोचम् अनुभवति किम्?		Hey, do you feel shy?
निःस्सङ्कोचं भोजनं करोतु।		Please help yourself, no formality.
सङ्कोचः मास्तु यत् आवश्यकं तत् पृच्छतु।		Don't feel shy ask whatever you want.
न रोचते किम्?		Don't you like it?
किं भोः, भवान् तु किमपि न खादति।		Hey, you are not eating anything.
अहं मधुरं न खादामि।		I don't eat sweets.
दध्यन्नं परिवेषयामि किम्?		Shall I serve curd rice?
तक्रम् इच्छति किम्?		Do you want butter milk?
आम्ररसः बहु मधुरः।		Mango juice is very sweet.
भवता वक्तव्यम् आसीत् खलु।		You did not serve ghee.
घृतं न परिवेषितवती।		You should have told me.
एतस्य रूचिं पश्यतु।		Please taste this.
किञ्चित् शर्करां योज्यतु सम्यक् भवेत्।		Add a little sugar, it'll be alright.
एतत् तिक्तम् अस्ति।		This is bitter.

अम्ब, मम एतत् मास्तु।		Mother, I don't want this.
भोजनं सम्यक् करोति चेत् मधुरं ददामि।		I'll give you a sweet if you eat well.
स्थालिकायां यत् अस्ति तत् सर्वं समापनीयम्।		You've to finish everything that is on the plate.
एतत् मह्यं न रोचते।		I don't like this.
सम्यक् चर्वणं करोतु।		Chew well.
किञ्चित् स्वीकरोतु।		Have a little.
मास्तु, एतावत् पर्याप्तम्।		No, this is enough.
अद्य मम मध्याह्नभोजनं विलम्बेन अभवत्।		Today I had very late.
अद्य पाकः रूचिकरः अस्ति।		Food is tasty today.
अद्य भूरिभोजनम् आसीत्।		Today there was a grand feast.
कः जलम् आवश्यकम् इति उक्तवान्?		Who asked for the food?
भोजनम् अरोचत् किम्?		Did you like the food?
आम्, बहु अरोचत्।		Yes, I liked it very much.

१.*विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions*

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download,

३.*मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads*,

४.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

५.मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

"विदेह"क एहि सभ सहयोगी लिंकपर सेहो एक बेर जाऊ।

६.विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

७.विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/

८.विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित :

http://madhubani-art.blogspot.com/

९.विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/

१०.विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/

११.विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

१२. विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

१३. विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

१४.VIDEHA"IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

१५.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

१६.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

१७.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

१८.'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/

२०.श्रुति प्रकाशन

http://www.shruti-publication.com/

२१.http://groups.google.com/group/videha

२२.http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/

२३.गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

http://gajendrathakur123.blogspot.com

२४.विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइटhttp://videha123radio.wordpress.com/

२५. नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) 'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल गेल गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्त्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्त्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प-गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-किशोर साहित्य विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-१ सँ ७ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 विवरण एहि पृष्ठपर नीचाँमे आ प्रकाशकक साइट http://www.shruti-publication.com/ पर ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary. विदेहक भाषापाक- रचनालेखन स्तंभमे।

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्त्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्त्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बालमंडली-किशोरजगत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-१ सँ ७

Ist edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding: Language:Maithili

६९२ पृष्ठ : मूल्य भा. रु. 100/-(for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs.50/-per copy for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers $40 US (including postage)

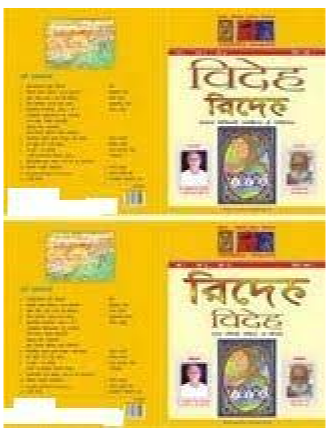
The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

https://sites.google.com/a/videha.com/videha/

http://videha123.wordpress.com/

Details for purchase available at print-version publishers's site website: http://www.shruti-publication.com/
or you may write to
e-mail:shruti.publication@shruti-publication.com

विदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिरहुता : देवनागरी "विदेह" क, प्रिंट संस्करण :विदेह-ई-पत्रिका (http://www.videha.co.in/) क चुनल रचना सम्मिलित।



विदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर; सहायक-सम्पादक: श्रीमती रश्मि रेखा सिन्हा, उमेश मंडल

भाषा-सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा

Details for purchase available at print-version publishers's site http://www.shruti-publication.com or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com

२. संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा,उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मादेँ।]

१.श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२.श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।

३.श्री विद्यानाथ झा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अपन महिमामय "विदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतबा प्रसन्नता आ संतोष भेल, तकरा कोनो उपलब्ध "मीटर"सँ नहि नापल जा सकैछ? ..एकर ऐतिहासिक मूल्यांकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट हैत।

४. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकेँ पढ़ि रहल छथि।...विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल अभिनन्दन।

५. डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशिष्ट फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक सङ्ग, सस्नेह...अहाँक पोथी *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रथम दृष्टया बहुत भव्य तथा उपयोगी बुझाइछ। मैथिलीमे तँ अपना स्वरूपक प्रायः ई पहिले एहन भव्य अवतारक पोथी थिक। हर्षपूर्ण हमर हार्दिक बधाई स्वीकार करी।

६. श्री रामाश्रय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

७. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

८. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकेँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

९.डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

१०. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

११. श्री विजय ठाकुर- मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका "विदेह" क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह' निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारय से कामना अछि।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका "विदेह" केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

१४. डॉ. श्री भीमनाथ झा- "विदेह" इन्टरनेट पर अछि तेँ "विदेह" नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब। *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि अति प्रसन्नता भेल। मैथिलीक लेल ई घटना छी।

१५. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"- जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत, से विश्वास करी।

१६. श्री राजनन्दन लालदास- "विदेह" ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक अहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अंक जखन प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दैतहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।.. उत्कृष्ट प्रकाशन *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* लेल बधाइ। अद्भुत काज कएल अछि, नीक प्रस्तुति अछि सात खण्डमे। मुदा अहाँक सेवा आ से निःस्वार्थ तखन बूझल जाइत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि रहितैक। ओहिना सभकेँ विलहि देल जइतैक। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहाँक सूचनार्थ विदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएल सभटा सामग्री आर्काइवमे https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर बिना मूल्यक डाउनलोड लेल उपलब्ध छै आ भविष्यमे सेहो रहतैक। एहि आर्काइवकेँ जे कियो प्रकाशक अनुमति लऽ कऽ प्रिंट रूपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम रखने छथि ताहिपर हमर कोनो नियंत्रण नहि अछि।- गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

१७. डॉ. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आद्योपांत पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भऽ गेल।

१८.श्रीमती शेफालिका वर्मा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भरि गेल। विज्ञान कतेक प्रगति कऽ रहल अछि...अहाँ सभ अनन्त आकाशकेँ भेदि दियौ, समस्त विस्तारक रहस्यकेँ तार-तार कऽ दियौक...। अपनेक अद्भुत पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक विषयवस्तुक दृष्टिसँ गागरमे सागर अछि। बधाई।

१९.श्री हेतुकर झा, पटना-जाहि समर्पण भावसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेवामे तत्पर छी से स्तुत्य अछि। देशक राजधानीसँ भय रहल मैथिलीक शंखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अवश्य करत।

२०. श्री योगानन्द झा, कबिलपुर, लहेरियासराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीकेँ निकटसँ देखबाक अवसर भेटल अछि आ मैथिली जगतक एकटा उद्भट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक कलमबन्द परिचयसँ आह्लादित छी। "विदेह"क देवनागरी सँस्करण पटनामे रु. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकल जे विभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित्र, परिचय पत्रक ओ रचनावलीक सम्यक प्रकाशनसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोलकाता- जय मैथिली, विदेहमे बहुत रास कविता, कथा, रिपोर्ट आदिक सचित्र संग्रह देखि आ आर अधिक प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- बधाई स्वीकार कएल जाओ।

२२.श्री जीवकान्त- विदेहक मुद्रित अंक पढ़ल- अद्भुत मेहनति। चाबस-चाबस। किछु समालोचना मरखाह..मुदा सत्य।

२३. श्री भालचन्द्र झा- अपनेक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि बुझाएल जेना हम अपने छपलहुँ अछि। एकर विशालकाय आकृति अपनेक सर्वसमावेशताक परिचायक अछि। अपनेक रचना सामर्थ्यमे उत्तरोत्तर वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक बधाई।

२४.श्रीमती डॉ नीता झा- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। ज्योतिरीश्वर शब्दावली, कृषि मत्स्य शब्दावली आ सीत बसन्त आ सभ कथा, कविता, उपन्यास, बाल-किशोर साहित्य सभ उत्तम छल। मैथिलीक उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

२५.श्री मायानन्द मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे हमर उपन्यास *स्त्रीधनक* जे विरोध कएल गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी।... *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीक लेल शुभकामना।(श्रीमान् समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि लेल जाए।-गजेन्द्र ठाकुर)

२६.श्री महेन्द्र हजारी- सम्पादक *श्रीमिथिला- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन हर्षित भऽ गेल..एखन पूरा पढ़यमे बहुत समय लागत, मुदा जतेक पढ़लहुँ से आह्लादित कएलक।

२७.श्री केदारनाथ चौधरी- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* अद्भुत लागल, मैथिली साहित्य लेल ई पोथी एकटा प्रतिमान बनत।

२८.श्री सत्यानन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी। ओकर स्वरूपक प्रशंसक छलहुँ। एम्हर अहाँक लिखल - *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखलहुँ। मोन आह्लादित भऽ उठल। कोनो रचना तरा-उपरी।

२९.श्रीमती रमा झा-सम्पादक मिथिला दर्पण। *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रिंट फॉर्म पढ़ि आ एकर गुणवत्ता देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शब्द एकरा लेल प्रयुक्त कऽ रहल छी। विदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना।

३०.श्री नरेन्द्र झा, पटना- विदेह नियमित देखैत रहैत छी। मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलाक्षर विदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भरि उठल, अंकक विशाल परिदृश्य आस्वस्तकारी अछि।

३२.श्री तारानन्द वियोगी- विदेह आ *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि चकबिदोर लागि गेल। आश्चर्य। शुभकामना आ बधाई।

३३.श्रीमती प्रेमलता मिश्र "प्रेम"- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। सभ रचना उच्चकोटिक लागल। बधाई।

३४.श्री कीर्तिनारायण मिश्र- बेगूसराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* बड्ड नीक लागल, आगांक सभ काज लेल बधाई।

३५.श्री महाप्रकाश-सहरसा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* नीक लागल, विशालकाय संगहि उत्तमकोटिक।

३६.श्री अग्निपुष्प- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेह पढ़ल..ई प्रथम तँ अछि एकरा प्रशंसामे मुदा हम एकरा दुस्साहसिक कहब। मिथिला चित्रकलाक स्तम्भकेँ मुदा अगिला अंकमे आर विस्तृत बनाऊ।

३७.श्री मंजर सुलेमान-दरभंगा- विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत। सभ चीज उत्तम।

३८.श्रीमती प्रोफेसर वीणा ठाकुर- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* उत्तम, पठनीय, विचारनीय। जे क्यो देखैत छथि पोथी प्राप्त करबाक उपाय पुछैत छथि। शुभकामना।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ, बड्ड नीक सभ तरहेँ।

४०.श्री ताराकान्त झा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- विदेह तँ कन्टेन्ट प्रोवाइडरक काज कऽ रहल अछि। कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक अद्भुत लागल।

४१.डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक बहुत नीक, बहुत मेहनतिक परिणाम। बधाई।

४२.श्री अमरनाथ- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक आ विदेह दुनू स्मरणीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।

४३.श्री पंचानन मिश्र- विदेहक वैविध्य आ निरन्तरता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना।

४४.श्री केदार कानन- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ स्वीकार करी। आ नचिकेताक भूमिका पढ़लहुँ। शुरूमे तँ लागल जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल अछि मुदा पोथी उनटौला पर ज्ञात भेल जे एहिमे तँ सभ विधा समाहित अछि।

४५.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कऽ रहल छी। फोटो गैलरीमे चित्र एहि शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।

४६.श्री आशीष झा- अहाँक पुस्तकक संबंधमे एतबा लिखबा सँ अपना कए नहि रोकि सकलहुँ जे ई किताब मात्र किताब नहि थीक, ई एकटा उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ निरंतर समृद्ध होइत चिरजीवन कए प्राप्त करत।

४७.श्री शम्भु कुमार सिंह- विदेहक तत्परता आ क्रियाशीलता देखि आह्लादित भऽ रहल छी। निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। ओहि कुरुक्षेत्रक घटना सभ तँ अठारहे दिनमे खतम भऽ गेल रहए मुदा अहाँक *कुरुक्षेत्रम्* तँ अशेष अछि।

४८.डॉ. अजीत मिश्र- अपनेक प्रयासक कतबो प्रशंसा कएल जाए कमे होएतैक। मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएल गेल काज युग-युगान्तर धरि पूजनीय रहत।

४९.श्री बीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* आ *विदेह:सदेह* पढ़ि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए से कामना।

५०.श्री कुमार राधारमण- अहाँक दिशा-निर्देशमे *विदेह* पहिल मैथिली ई-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल। हमर शुभकामना।

५१.श्री फूलचन्द्र झा *प्रवीण*-विदेह:सदेह पढ़ने रही मुदा *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि बढ़ाई देबा लेल बाध्य भऽ गेलहुँ। आब विश्वास भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत। अशेष शुभकामना।

५२.श्री विभूति आनन्द- विदेह:सदेह देखि, ओकर विस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल।

५३.श्री मानेश्वर मनुज-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* एकर भव्यता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही। एहिना भविष्यमे काज करैत रही, शुभकामना।

५४.श्री विद्यानन्द झा- आइ.आइ.एम.कोलकाता- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* विस्तार, छपाईक संग गुणवत्ता देखि अति प्रसन्नता भेल।

५५.श्री अरविन्द ठाकुर-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मैथिली साहित्यमे कएल गेल एहि तरहक पहिल प्रयोग अछि, शुभकामना।

५६.श्री कुमार पवन-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़ि रहल छी। किछु लघुकथा पढ़ल अछि, बहुत मार्मिक छल।

५७. श्री प्रदीप बिहारी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखल, बधाई।

५८.डॉ मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विलक्षण नियमित सेवासँ हमरा लोकनिक हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

५९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सराहनीय। दुख होइत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

६०.श्री देवशंकर नवीन- विदेहक निरन्तरता आ विशाल स्वरूप- विशाल पाठक वर्ग, एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि।

६१.श्री मोहन भारद्वाज- अहाँक समस्त कार्य देखल, बहुत नीक। एखन किछु परेशानीमे छी, मुदा शीघ्र सहयोग देब।

६२.श्री फजलुर रहमान हाशमी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुवादक अधिकारी छी।

६३.श्री लक्ष्मण झा "सागर"- मैथिलीमे चमत्कारिक रूपेँ अहाँक प्रवेश आह्लादकारी अछि।..अहाँकेँ एखन आर..दूर..बहुत दूरधरि जेबाक अछि। स्वस्थ आ प्रसन्न रही।

६४.श्री जगदीश प्रसाद मंडल-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़लहुँ । कथा सभ आ उपन्यास *सहस्त्रबाढ़नि* पूर्णरूपेँ पढ़ि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्त्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक अछि। समालोचना शास्त्रमे अहाँक दृष्टि वैयक्तिक नहि वरन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से प्रशंसनीय।

६५.श्री अशोक झा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* लेल बधाई आ आगाँ लेल शुभकामना।

६६.श्री ठाकुर प्रसाद मुर्मु- अद्भुत प्रयास। धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माटि-पानिकेँ ध्यानमे राखि अंकक समायोजन कएल जाए। नव अंक धरि प्रयास सराहनीय। विदेहकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा रहल छथि। सभटा ग्रहणीय- पठनीय।

६७.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'विदेह'आ 'कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक' विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी! की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास होयत,निस्संदेह।

६८.श्री बृखेश चन्द्र लाल- गजेन्द्रजी, अपनेक पुस्तक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

६९.श्री परमेश्वर कापड़ि - श्री गजेन्द्र जी । *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि गदगद आ नेहाल भेलहुँ।

७०.श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पढ़ैत रहैत छी। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख पढ़लहुँ। मैथिली गजल कत्तऽ सँ कत्तऽ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन जानल-पहिचानल लोकक चर्च कएने छथि। जेना मैथिलीमे मठक परम्परा रहल अछि। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे ई स्पष्ट लिखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि रहबाक द्वारे, एहिमे आन कोनो कारण नहि देखल जाय। अहाँसँ एहि विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि।-सम्पादक)

७१.श्री मंत्रेश्वर झा- विदेह पढ़ल आ संगहि अहाँक मैगनम ओपस *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सेहो, अति उत्तम। मैथिलीक लेल कएल जा रहल अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि।

७२. श्री हरेकृष्ण झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मैथिलीमे अपन तरहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ रचना कौशल देखबामे आएल जे लेखकक फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक कारणसँ अछि।

७३.श्री सुकान्त सोम- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे समाजक इतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जुड़ाव बड़ड नीक लागल, अहाँ एहि क्षेत्रमे आर आगाँ काज करब से आशा अछि।

७४.प्रोफेसर मदन मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन किताब मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक विशाल संग्रहपर शोध कएल जा सकैत अछि। भविष्यक लेल शुभकामना।

७५.प्रोफेसर कमला चौधरी- मैथिलीमे *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन पोथी आबए जे गुण आ रूप दुनूमे निस्सन होअए, से बहुत दिनसँ आकांक्षा छल, ओ आब जा कऽ पूर्ण भेल। पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि रहल अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ आशा अछि।

७६.श्री उदय चन्द्र झा "विनोद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएलहुँ अछि से मैथिलीमे आइ धरि कियो नहि कएने छल। शुभकामना। अहाँकेँ एखन बहुत काज आर करबाक अछि।

७७.श्री कृष्ण कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेँट एकटा स्मरणीय क्षण बनि गेल। अहाँ जतेक काज एहि बएसमे कऽ गेल छी ताहिसँ हजार गुणा आर बेशीक आशा अछि।

७८.श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेल शब्द नहि भेटैत अछि। अहाँक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक सम्पूर्ण रूपेँ पढ़ि गेलहुँ। त्वञ्चाहञ्च बड़ड नीक लागल।

कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बालमंडली-किशोरजगत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-१ सँ ७

Ist edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding:

Language:Maithili

(Details for purchase available at print-version publishers's site http://www.shruti-publication.com or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com)

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना प्रकाशित कएल जाइत अछि। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

सिद्धिरस्तु